ओ३म्

॥ युगधर्म ॥

भारतीय संस्कृति की वर्तमान भयावह स्थिति का

अपराधी कौन...?

लेखक
राजर्षि पाराशर

संपादक
विनय आर्य

-: प्रकाशक :-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23360150, 23365959

लेखक	● राजर्षि पाराशर
संपादक	● विनय आर्य
©	● सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक	**वैदिक प्रकाशन** दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
संपर्क	
✉	**aryasabha**@yahoo.com
🌐	www.**thearyasamaj**.org
f	Facebook.com/**arya.samaj**
🐦	Twitter.com/**thearyasamaj**
☏	**9540045898**
प्रथम संस्करण	**2019**
मुद्रक	क्रियेटिव प्लेनेट्स
मूल्य	60/–
आई.एस.बी.एन.	978–81–936395–4–2
प्रथम संस्करण	विश्व पुस्तक मेला 2020

अनुक्रमाणिका

भूमिका

अतीत के एक काले सच को युगधर्म पुस्तक के माध्यम से पढ़ें, समझें और जीवन में उतारें। क्योंकि जो गलती को ठीक कर ले उसे ही मनुष्य कहते हैं। हिंदू धर्म या हिंदू समुदाय एक ऐसे नगर के समान हैं जिनमें से केवल लोगों को बहिष्कृत तो किया जा सकता है, किंतु प्रवेश नहीं दिया जा सकता। उसका परिणाम क्या होगा? एक दिन वह खाली होकर उजड़ जाएगा। यही तो हिंदू समुदाय के साथ हो रहा है। वह दिन-प्रतिदिन उजड़ ही तो रहा है और आश्चर्य यह है कि हिंदुओं को अपना उजाड़ अब भी नहीं दिख रहा। आज भी अधिकांशतया हिंदू दकियानूसी हैं, जातिवादी है, स्वार्थ के कारण सावधान नहीं है, अपनी हो रही भारी हानि से लापरवाह हैं। हिंदू यदि आज भी छूत-अछूत, ऊंच-नीच, भेदभाव की सोच को त्याग कर सभी हिंदुओं से समान भाव से व्यवहार करे और सबको उचित सम्मान दे, तो आज भी हिंदूजाति और हिंदू धर्म बच सकता है, हिंदुतान का अस्तित्व बचा रह सकता है।

हिंदूजाति आज संख्याबल की दृष्टि से भी लगातार घटती जा रही है और क्षेत्र की दृष्टि से भी। 'हम दो हमारे दो' के नारे का सर्वाधिक दुष्प्रभाव हिंदू जाति पर पड़ा है, जबकि विधर्मियों ने, विशेषत: मुसलमानों ने इसको व्यवहार में लाना अस्वीकार कर दिया है और संसार में एक भी देश ऐसा नहीं है जिसे हिंदू देश कहा जा सके, हां, नेपाल कहने को हिंदू राष्ट्र था, जिसे तथाकथित धर्मनिरपेक्षों और वामपंथियों ने धर्मनिरपेक्ष बना दिया। विभाजन के समय हिंदुस्तान प्राय: हिंदू देश था किंतु वह भी सिकुड़ता जा रहा है। दुनिया में सभी धर्मों के देश हैं, केवल हिंदू धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जिसका अपना कोई देश नहीं। इससे बढ़कर दु:खद पतन और क्या हो सकता है, कहीं हम दूसरा इजरायल तो नहीं बनने जा रहे?

हिंदुओ! अब भी समय है इस आत्मघाती सोच और व्यवहार को छोड़ दो, नहीं तो मिटने के लिए तैयार रहो। हिंदूजाति! अब इसका फैसला करना तेरे हाथ में है, अब भी चेत जाओ, चेत जाओ, चेत जाओ। ❖

-विनय आर्य
महामंत्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्राक्कथन

उत्तमः सर्व धर्माणाम् राष्ट्रधर्मोऽयमुच्यते।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वलोकहितैषिभिः।।
सर्वधर्मान्परित्यज्य राष्ट्रस्य शरणं व्रज।
राष्ट्रं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यति मा शुच।।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने कुछ कड़वा सत्य लिखा है, यद्यपि मैं इस बात को भली प्रकार जानता हूं कि लोगों को मीठा शर्बत पीने की आदत सी पड़ गई है। लोग यदि कुनैन भी खाएंगे तो शुगर-कोटिड, परंतु राशनिंग के इस जमाने में मेरे पास खांड कहां? अगर राशनिंग का जमाना न होता तो संभवतया मैं अपनी इस दवाई पर हल्का सा मीठा आवरण जरूर चढ़ा ही देता।

आज तो संकट मेरे देश पर पड़ा है, इसकी उपमा इतिहास के किसी भी पन्ने पर आपको न मिलेगी। विदेशियों ने इस देश पर अनेकों आक्रमण किए, गजनवी लुटेरों ने भी इस देश में शताब्दियों तक मनमानी लूट मचाई; तैमूर, नादिर और चंगेज द्वारा कत्ले आम भी हुआ, परंतु सर्वसाधारण में जो भय, जो आतंक और जो निराशा आज छा रही है वैसी अवस्था आज ही हुई है, पहले कभी नहीं। विदेशी आक्रमणकारियों ने भले ही इस देश की जनता के रक्त से इस पवित्र भूमि भारत को रक्तवर्णी बनाया हो, परंतु एक ही माता के दो पुत्र, दुःख-सुख के साथी, दो पड़ोसी एक दूसरे की जान के ग्राहक बने हों, ऐसा बीसवीं शताब्दी के दूसरे चरण के पश्चात् ही देखने में आया है। आज प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक नगर ज्वालामुखी बना है, कौन जानता है, कौन से शहर का कौन सा मुहल्ला या कौन सा बाजार किस समय पानीपत का मैदान बन जाए। हिंदू मुसलमान को देख कर घृणा से मुंह फेर लेता है और हिंदू को देखते ही मुसलमान की आंखों में खून उतर आता है। सिवाय फिरंगियों के इस अवस्था में किसी को भी सुख चैन नहीं। सब से बढ़कर दुःख की बात यह है कि यह भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। कांग्रेस के उपदेश से हिंदुओं ने तो मुसलमानों से घृणा करना छोड़ दिया है, परंतु घृणा का सम टोटल कायम रखने के लिए अब मुसलमानों में हिंदुओं के प्रति घृणा का जोर बढ़ता जा रहा है।

हमारे देश में यद्यपि अपने ही देश-वासियों की सरकार स्थापित हो चुकी है, परंतु वास्तविक सत्ता अब भी अंग्रेज के हाथों में है। उसी सत्ता को पूर्णतया अंग्रेज से छीनने के लिए आज कांग्रेसी महापुरुष जिन्ना के स्तोत्र गा रहे हैं, परंतु परिणाम सर्वथा विपरीत दीख रहा है। कांग्रेस की मानवता को कांग्रेस के शत्रु कांग्रेस की कमजोरी समझ रहे हैं। नई दिल्ली के राजमहलों में बैठे बातें बनाना और चीज है, परंतु 'मोची दरवाजे' 'बिल्ली मारान', 'लालकुएं' से गुजरते हुए डान, जमींदार, अनजाम जंग की कथा बांचते हुए मुसलमानों के चेहरों के उतार-चढ़ाव को जो दिन में 20 बार देखते हैं, वही बता सकते हैं, हवा का रुख किधर को है।

निःसंदेह हिंदू-मुस्लिम एकता में ही हमारे देश का कल्याण है। परंतु एकता, एकता का शोर मचाने से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा देने से अथवा चर्चिल-जिन्नाह एंड कम्पनी अनलिमिटेड के प्रत्येक ऊटपटांग शब्दों के सामने नत-मस्तक हो जाने से तो एकता कदापि प्राप्त न होगी। एकता किसी कागज के टुकड़े पर दस्तखत करने से न होगी, सच्ची एकता के लिए दिल एक होने चाहिए। सरकार यदि सच्चे दिल से सांप्रदायिक कटुता को दूर कर देश-भाइयों के परस्पर संबंध में माधुर्य का संचार करना चाहती है तो निम्नलिखित मार्ग का अनुसरण करते हुए वह अपने इस ध्येय में सफल हो सकती है।

(1) मुस्लिम-संस्कृति जैसी इस धरती पर कोई वस्तु नहीं, क्योंकि सभी मुसलमान हिंदुओं से ही मुसलमान बने हैं, अतः जो कुछ वह पहले करते थे उससे सर्वथा उलट करना ही उनकी संस्कृति है। पहले धोती लगाते थे अब तहमद बांधते हैं। पहले पूर्व की ओर मुंह करते थे अब पश्चिम की ओर मुंह करते हैं। पहले ईश्वर का नाम चुपचाप बैठकर अपने चित्त-वृत्तियों को अंतर्मुखी बनाकर जपते थे, अब ईश्वर का नाम लेते समय पूरे जोर के साथ चिल्लाते हैं। पहले गौमाता की पूजा करते थे इसलिए अब गौमाता के शत्रु बन माता की गरदन पर छुरी चलाते हैं। पहले रोटी छोटी-छोटी खाते थे इसका उलट यही हो सकता है कि बहुत बड़ी रोटी पकायी जाए और खाएं चाहे उसमें से आधी ही, पहले तवा सीधा रखते थे, अब उल्टा रखते हैं; पहले बांए ओर से

लिखते थे अब दाएं ओर से लिखते हैं. पहले बर्तन को खूब रगड़ कर मांजा करते थे, अब जब से लिया है तब से मंजा ही नहीं; पहले गंगा जी में नहाते थे, अब गंगा तट पर रहते हुए भी छप्पर में नहाते हैं।, यही तो है न मुस्लिम संस्कृति ?यदि रहन-सहन, खान-पान, आहार व्यवहार का नाम ही संस्कृति है तो भी हिंदू-धर्म इतना विशाल है कि इसके बाहिर कुछ भी नहीं। हिंदू-धर्म किसी भी तौर तरीके पर प्रतिबंध नहीं लगाता। कोई जिस ढंग से भी, जिस लिबास में भी, जिस भाषा में भी, हिंदू माता की गोद में आता है, माता उसे अपनी गोद में सहर्ष स्वीकार करती है। धोती लगा लो तो भी हिंदू, तहमद लगा लो तो भी हिंदू, लंगोटी लगा लो तो भी हिंदू; पाजामा पहन लो तो भी हिंदू; पतलून, सिलवार, तहमद कुछ भी पहन लो तो भी हिंदू, कुछ न पहनो तो भी हिंदू, नंगे रह लो तो भी हिंदू, कमीज, कोट, वास्कट, ओवरकोट कुछ भी पहन लो तो भी हिंदू, कुछ भी न पहनो तो भी हिदू। चोटी रखो तो भी हिंदू, संन्यासी बनकर चोटी कटवादो तो भी हिंदू; यज्ञोपवीत पहन लो तो भी हिंदू यज्ञोपवीत न पहनो तो भी हिंदू; उर्दू पढ़ ले तो भी हिंदू,हिंदी पढ़ ले तो भी हिंदू, अंग्रेजी, गुरुमुखी लंडे-मुंडे कुछ भी पढ़ ले तो भी हिंदू; कुछ भी न पढ़ो तो भी हिंदू। ईश्वर को मान लो तो भी हिंदू, ईश्वर को न मानो तो भी हिंदू। वेद को मान लो तो भी हिंदू और चार्वाक् के समान "**त्रयो वेदस्य कर्तार: धूर्त भांड निशाचरा:**" ऐसा कहलो तो भी हिंदू..... जब हिंदू धर्म इतना विशाल है, तो इससे बाहर किसी पृथक् वस्तु की कल्पना ही क्यों की जाती है?

(2) पाठशाओं, स्कूलों तथा कालिजों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, उसमें से भिन्न-भिन्न वंशावलियों, लूट-मार दंगा-फसाद की बातों को निकाल कर एक विशेष समय में राष्ट्र की सामाजिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक अवस्था के अध्ययन पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए। क्योंकि भारत में सभी मतमतांतरों के लोग प्रताप, शिवा और गुरुगोविंद की ही संतान हैं, इसलिए जिस किसी भी व्यक्ति ने इन महापुरुषों से शत्रुता की उन लोगों को

भारतीय इतिहास में कोई स्थान नहीं देना चाहिए। इतिहास को बनाने वाले उसी देश के महापुरुष होते हैं न कि विदेश से आए कुछ एक लुटेरे। मुस्लिम बच्चों के हृदयों पर आरंभ से ही यह विचार अंकित किया जाना चाहिए कि भारतीय महापुरुषों का इतिहास उनका अपना इतिहास है और औरंगजेब की अपेक्षा भारतीय मुसलमानों के साथ शिवा-प्रताप का निकटतर संबंध है।

(3) सरकार को इस बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि नगर के बीच में कोई मंदिर या मस्जिद न बनने पाए। मंदिर अथवा मस्जिद शहर से कम से कम इतनी दूर होने चाहिए कि वहां की घंटे घड़ियाल की अथवा कानों में उंगली देकर किसी व्यक्ति के जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज शहर तक न पहुंचने पाए। जो मंदिर मस्जिद शहर के बीच में बन चुके हैं उनके बदले में सरकार को अपने खर्च पर वैसा ही स्थान शहर से बाहर बना देना चाहिए।

(4) यदि किसी संप्रदाय का कोई व्यक्ति अपनी किसी प्रकार की ऐसी रस्म पूरी करना चाहे, जिसके प्रदर्शन से अन्य मतावलंबियों के हृदयों पर आघात पहुंचता है तो सरकार को चाहिए ऐसे प्रदर्शन को बलपूर्वक रोक दे और अपने घर में बैठ चार दीवारी के पीछे चुपचाप उस रस्म को पूरा करने के लिए उस व्यक्ति को समझाए। गौ हत्या को तो सरकारी तौर पर बिल्कुल बंद करा देना चाहिए।

(5) उर्दू कोई भाषा नही, अर्बी-फारसी मिश्रित हिंदी को फारसी लिपि में लिखा जाए तो हिंदी ही उर्दू बन जाती है। हिंदी लिपि सर्वांग रूपेण परिपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति को इस लिपि की अवहेलना तथा अपमान के पाप का भागी नहीं बनना चाहिए, बोलने की भाषा सबकी अपनी-अपनी, पंजाबियों की पंजाबी और गुजरातियों की गुजराती (परंतु लिखा जाए सबको हिंदी लिपि में। सरकार को अदालती कामों में हिंदी लिपि पर किसी प्रकार की रोक नहीं लगानी चाहिए।

(6) स्टेशनों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर हिंदू पानी तथा मुसलमान पानी का

भिन्न भेद तो उड़ा देना चाहिए, परंतु सरकार को इतनी देखभाल का विशेष प्रबंध अवश्य कर देना चाहिए कि कोई व्यक्ति अपना पिया हुआ सैकंडहैंड जूठा पानी फिर उसी मटके में न उढ़ेल दे तथा कोई व्यक्ति टट्टी से निकलते ही उस टट्टी वाले लोटे को ही मटके में न डाल दे।

(7) सरकार को इस बात का विशेष प्रबंध करना चाहिए, कि मांस की दुकान बाजार के बीच में कदापि न हो। या तो मांस बेचने वाला अपने घर के भीतर बैठ कर ही यह व्यापार करे अथवा शहर के बाहर उनकी दुकान का प्रबंध किया जाए।

(8) नौकरियों, चुंगी तथा असेंबली की मैंबरियों में सांप्रदायिकता का कदापि दखल न हो। नौकरियों का आधार केवल योग्यता हो और निर्वाचन संयुक्त प्रणाली पर हों।

(9) जिस प्रकार ईसाई लोग मजहबी तौर पर ईसाई होते हुए भी अपना नाम भारतीय ढंग पर रखते हैं–साधु सुंदर सिंह, गोलक नाथ इत्यादि, उसी प्रकार मुसलमानों को भी यह समझाया जाए कि मजहबी तौर पर मुसलमान होते हुए भी वे अपने नाम भारतीय ढंग पर रखें।

(10) मुर्देमशुमारी का काम सरकार को बिल्कुल बंद कर देना चाहिए। परंतु कुछेक अपने आदमियों को कारे लगाए रखने के लिए यदि सरकार ने मुर्देमशुमारी करनी ही है तो मतमतांत की दृष्टि से मुर्देमशुमारी नहीं करनी चाहिए। आज जो देश में तबलीग का जोर है, नवाखली में जो कुछ हुआ सब अपनी संख्या बढ़ाकर अधिक सीटें प्राप्त करने के लिए है। सरकार को चाहिए कि वह किसी संप्रदाय की जन संख्या के आधार पर सीटों के विभाजन की प्रथा बंद करके धरती माता का कल्याण होने दे।

इन बातों के साथ ही साथ हिंदू समाज की आंतरिक कुरीतियों को दूर करने का यत्न करना चाहिए। देश का सौभाग्य है कि आज राष्ट्र की बागडोर जवाहर तथा पटेल जैसे दृढ़व्रती लौह पुरुषों के हाथ में है। सुधार की आवश्यकता को अनुभव करता हुआ भी हिंदू समाज स्वेच्छा पूर्वक सुधार का आदी नहीं। डंडे वाले को उसने मनुष्य समझा। हिंदू समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए दंडशक्ति की

आवश्यकता है। हिंदू समाज का वर्तमान स्वरूप वास्तविक नहीं, इसमें गुलामी के जमाने का बहुत-सा गंदा पानी मिला है। इस पानी को फिल्टर द्वारा साफ करने की आवश्यकता है। समाज सुधार स्वतंत्रता की ओर पहला कदम है। बिना समाज का सुधार किए स्वतंत्र भारत की कल्पना करना दिवास्वप्न है।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने हिंदू समाज की आंतरिक बुराईयों के शोधने का प्रयत्न किया है। अपराधी कौन नामक अध्याय में मैंने हिंदू समाज के भीतरी फोटो को अपने हिंदू भाइयों के सामने उपस्थित किया है, किसी का दिल दुखाने के लिए नहीं, किसी को किसी दूसरे की नजरों में जलील करने के लिए नहीं, परंतु केवल इसी खयाल से कि शायद अनेक पाठकों में कोई एक मेरी अंतरात्मा को समझे और हिंदू समाज के भीतरी दोषों को दूर कर राष्ट्र को शक्ति प्रदान करे।

अंतिम बात मैं अपने कांग्रेसी बंधुओं की सेवा में निवेदन करना चाहता हूं। जिन लोगों ने मेरे द्वारा लिखे 'जवाहर-दिग्विजय' तथा 'राष्ट्रसर्वस्व' को पढ़ा है, वे जानते हैं कि मेरे दिल में कांग्रेस के लिए कितना मान है। भावुकता को मैंने कभी भी अपने समीप फटकने नहीं दिया। यही कारण है कि अनेक तूफानी अवसरों के बीच में भी मैंने कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा को डांवाडोल नहीं होने दिया। सन् 1916, 1922, 1927, 1931, 1937 में कांग्रेस ने जो भी राजनीतिक गल्तियां की उनका फल तो देश ने अवश्य भोगा, परंतु देश का सौभाग्य था कि उस समय तक लीग हुशयार नहीं थी। शहर में कोई चोर न हो और घर का दरवाजा रात को खुला रह जाए तो यह गलती विशेष हानिप्रद नहीं, परंतु लुटेरों को गली मुहल्लों में खुले आम चक्कर लगाते देखकर भी, रात के समय दरवाजा चौपट खोल कर निश्चिंत हो लेट जाना, यह ऐसा भयंकर अपराध है जिसे कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता।
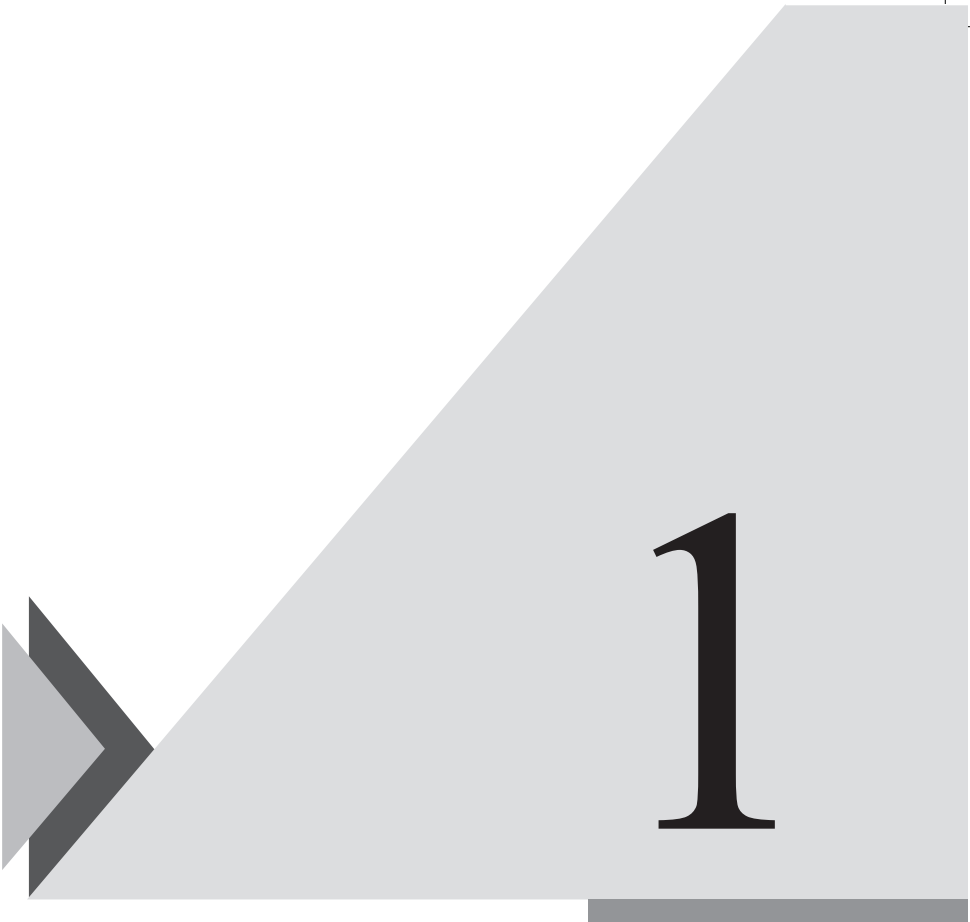
जिन दिनों मैंने इस पुस्तक को लिखा, यह दुर्भाग्य था कि उन कुछेक दिनों के बीच 6 दिसम्बर का दिन भी पड़ता था और पांच जनवरी का भी। मेरी अंतरात्मा ने कहा-''जवाहर ने लंदन जाकर गलती की है, फिर भी मेरी आत्मा ने कहा-कांग्रेस ने 6 दिसम्बर वाले मंत्री मिशन को अक्षरशः स्वीकार करके एक भयंकर पाप किया है और आज 31 जनवरी के दिन लीगी दु:शासन फिर ललकारा है-बताओ!

तुम हमारे सामने बिना शर्त हथियार डालने को तैयार हो कि नहीं? 25 फीसदी मुसलमान 75 फीसदी हिंदुओं के साथ में एक स्थान पर बैठने तक को तैयार नहीं, वही लोग-बी.सी.ग्रुप के 49 तथा 80 प्रतिशत हिंदुओं को अपने आगे चूं तक करने का अधिकार देने को तैयार नहीं। ऐसे अन्यायी और मिथ्याचारी लोगों की खुशामदें करना, मैं नहीं समझता इसे किसी प्रकार की देशभक्ति कहा जाए।

मेरी कमजोरी यह है कि मैंने अपने आत्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मैं आत्मा की आवाज को परमात्मा की आवाज समझता हूं। यदि मेरे विचारों से किसी कांग्रेसी भाई को निराशा हो तो मैं उन्हें यह विश्वास दिलाता हूं कि यद्यपि मेरा दिमाग उनके साथ नहीं, परंतु मेरा हृदय सदैव उनके साथ है। समय का प्रवाह आता है और चला जाता है, तूफान उठते हैं और थोड़ी देर अपने पराक्रम का प्रदर्शन कर स्वयं बैठ जाते हैं; प्रकाश भी होता है और अंधकार भी; गरमी भी आती है और सरदी भी; बादल भी आते हैं और आंधियां भी- परंतु गगन मंडल के दो सम्राट दिवापति और निशापति अपनी उसी शान से चमकते रहते हैं। निंदा-स्तुति के विचार से ऊपर उठकर वे दिनरात निष्काम कर्मयोग के आदर्श पालन में लगे रहते हैं, जवाहर और पटेल भारत के दो सूर्य और चांद हैं। छोटे-मोटे तूफान उठते ही रहेंगे, प्रकाश और अंधकार भी अपना चक्कर चलाते ही रहेंगे, परंतु (जवाहर-पटेल) राजनीतिक भारत के गगन पर सूर्य और चंद्रमा के समान चमकते ही रहेंगे। ❖

॥ जय हिंद॥

पाराशर विश्व-ज्ञान-मंदिर

1

भारत माता का सन्देश

मोहसन है महरवां सारे जहां की जां है।
आओ, झुकाएं सर को भारत हमारी मां है।।

मेरे प्यारे बच्चो,

क्या आपको अपनी बूढ़ी माता के बुढ़ाने पर तरस नहीं आता? मेरा अंग प्रत्यंग पराधीनता के प्रबल पाशों में जकड़ा हुआ है और आप माता के बंधन काटने की बजाए, तुच्छ स्वार्थों के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं। तुम्हें मेरे दूध पिए की कुछ तो लाज रखनी चाहिए, इतने बेगैरत मत बनो, याद रखो माता को बुढ़ापे में दु:ख देने वालों के लिए न तो इसलोक में सुख है, न परलोक में।

सर्वप्रथम मैं अपने सनातनधर्मी-पुत्रों को कहती हूं, आप धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझिए। सच्चा धर्म यही है कि इस लोक में सुख और मान का जीवन व्यतीत किया जाए और दूसरों को भी अपने समान सुखपूर्वक रहने दें। परलोक की कल्पना के पीछे इस लोक को मिथ्या मान बैठना और घर-बार विधर्मियों के हवाले कर देना कोई अच्छी बात नहीं। परलोक-सुधारने में जितना रुपया आप मुफ्तखोरों की पालना में बर्बाद करते हैं, यदि उसका एक हिस्सा भी आप इसलोक के सुधार में लगाएं तो सहज में ही देश की गरीबी दूर की जा सकती है। मैं भारतवर्ष के धर्माचार्यो से अपील करती हूं कि वे देश के नए राजनीतिक तथा सामाजिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए हिंदू राष्ट्र का नवनिर्माण करें। हरिजनों तथा देवियों के प्रति हिंदू समाज के अत्याचार हद से ज्यादा बढ़ चुके हैं, नवाखली और कलकत्ते की दुर्घटनाओं से भी इन्होंने कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की। स्त्रियों को बहकाने में सौ फीसदी पुरुषों का ही दोष होता है, परंतु इस प्रेम का विषैला फल देवियों को ही भोगना पड़ता है, परमात्मा को चाहिए था कि बिजली और पानी के मीटरों की तरह वह पुरुष के शरीर पर कहीं एकाध मीटर फिट कर देता ताकि उसके सदाचार का नाप तोल भी किया जा सकता। शायद सृष्टि-रचना के सैकंड एडीशन में परमात्मा अपनी इस त्रुटि को पूरा करदे। तब तक आपको चाहिए देवियों तथा हरिजनों पर अपने अत्याचार बंद कर दें।

मैं अपने आर्य समाजी पुत्रों को कहती हूं वे वस्तु-स्थिति को भली प्रकार समझें। सिंध में यदि सत्यार्थ प्रकाश संबंधी सत्याग्रह में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई तो इसका यह अर्थ नहीं कि इसे आप लोग अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लें। मुझे इस बात का दु:ख है कि कुछ एक आर्यसमाजी अब भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विरोध कर रहे हैं। माना, कुछ एक बातों पर आर्य समाज की संघ-शाखाओं के ध्वज-प्रणाम तथा गुरु-भावना के साथ मतभेद हैं परंतु संघ शाखाओं ने भिन्न-भिन्न संप्रदायों में जो संगठन शक्ति पैदा की है, जिस प्रकार इसने नवयुवकों के उच्छंखल जीवन में तप-त्याग का समावेश किया है उसे देखते हुए संघ-शाखाओं का विरोध करना देश के साथ द्रोह करना है। इस समय सबसे बड़ा सिद्धांत यही है कि एक होकर बहू-बेटियों की इज्जत और जान माल की रक्षा की जाए।

अंत में मैं अपने मुस्लिम-पुत्रों को कहती हूं कि आप ही के कारण मेरा बुढ़ापा बर्बाद हो रहा है। मैं इस बात को मानती हूं कि हिंदुओं के प्रति कुछ हद तक आपका

रोष सच्चा है, परंतु भाइयों की आपसी लड़ाई का यह अर्थ कदापि नहीं कि वृद्धा माता के ही टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं।

कुछ एक स्वार्थी मुल्लाओं के बहकावे में आकर आपने पूर्वी बंगाल सिंध तथा सीमाप्रांत में अपने हिंदू भाइयों के खून की नदियां बहाई। आपने अपना लोक तो बिगाड़ा ही था अब आप अपने ही हाथों अपना परलोक भी बिगाड़ने लगे हैं। जिस समय आप परमात्मा के दरबार में जाएंगे, याद रखिए उस समय तुम्हारा कायदे आजम और तुम्हारा सुहरावर्दी तुम्हारा कुछ भी साथ न देगा। उस समय तुम होगे या तुम्हारा अल्लाताला। उस समय वह तुम्हें पूछेगा-तुमने लाखों बेगुनाहों को कत्ल किया, हजारों बच्चों को तुमने यतीम बनाया, सहस्रों अबलाओं के सौभाग्य सिंदूर को तुमने मिट्टी में मिला दिया। बताओ, तुम्हें कौन सी दोजख की आग में डाला जाए?' तुम मेरे पुत्र हो। पूत कपूत भले ही हो जाए, माता कुमाता कभी नहीं होती। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए स्नेह है, प्रेम है। मैं नहीं चाहती, तुम्हें परलोक में किसी प्रकार का कष्ट हो। जैसे-सुखपूर्वक तुम मेरी गोदी में पलते हो ऐसे ही मैं चाहती हूं तुम परलोक में भी फूलो-फलो।

अपने हिंदू भाइयों के विरुद्ध जो आपको उचित शिकायतें थीं उन्हें तो कांग्रेस के प्रभाव से हिंदुओं ने स्वयं दूर कर दिया है। अब जो आपकी शिकायते हैं वे उचित नहीं। रोटी-बेटी संबंध किसी भी व्यक्ति की अपनी रुचि पर ही निर्भर है, प्रत्येक मनुष्य का कुछ स्वभाव होता है; कुछ वस्तुओं से उसे प्रेम होता है, कुछ वस्तुओं से उसे घृणा होती है, जहां उसका मन मिलता है वहीं वह भोजन करता है, वहीं उठता-बैठता है।

लड़कियों के संबंध की बात इतनी आसान नहीं जितनी कि आप लोग इसे समझते हैं। विवाह का जो ऊंचा आदर्श है वह आपकी कल्पना शक्ति से भी दूर है। आपकी दृष्टि में स्त्री पुरुष के लिए केवल भोग-विलास की वस्तु है; हिंदू समाज की दृष्टि में गृहस्थ जीवन एक जिम्मेदारियों का जीवन है। कन्यादान के समय पिता के हृदय की जो अवस्था होती है उसे शब्दों में चित्रित करने वाला कवि आज तक पैदा न हुआ। पुत्री के लिए वर तलाश करना पिता के जीवन की सबसे विकट घड़ी होती है। विवाह के पश्चात् भी पिता को सुख कहां? न जाने नए घर में उसकी पुत्री कैसे होगी? इसीलिए संबंध स्थापित करते समय दोनों कुलों में रहन-सहन, खान-पान, आचार व्यवहार की समानता देखी जाती है। यही कारण

है कि इन समानताओं के अभाव में हिंदुओं में भी परस्पर संबंध नहीं होता। आपके घरों का भीतरी वायु मंडल ऐसा है कि उसमें कोई भी अपनी पुत्री को सुखी नहीं समझ सकता। हिंदुओं के साथ रोटी-बेटी के संबंध का दावा करने से पहले आप अपने रंग-ढंग को भारतीय सांचे में ढालिए, आत्मिक शांति के लिए पश्चिम की ओर देखना बंद कर दीजिए; गोवध तथा मांसभक्षण का परित्याग कर दीजिए; दीवाली, जन्म-अष्टमी, बसंत-पंचमी को अपना उत्सव समझते हुए हिंदुओं के समान इन उत्सवों को मनाइए। फिर देखिए हिंदुओं के विरुद्ध आपको इतनी शिकायत भी न रहेगी। माता के चालीस करोड़(वर्तमान में लगभग 135 करोड़) पुत्र एक हो जाएंगे और फिर एक बार राबी तट से वही इंकलाब की वीणा गूंजेगी-

कौन कहे है तुझको निर्बल कौन कहे कमजोर।
एक सौ पैंतीस करोड़ आवाजें तेरी जिस दम करती शोर।।
तेरे हाथों में जब चमके शस्त्र दो सौ सत्तर करोड़।
शत्रु सारे डर के मारे भागें रण को छोड़।।
विद्या तू है, धर्म भी तू है, तू ही है सद्ज्ञान।
तन भी तू है, मन भी तू है, तू है सुख की खान।।

2

युग धर्म

बद्रिकारण्य में सुख पूर्वक तपोमग्न राजर्षि पाराशर की सेवा में मर्त्यलोक वासियों का एक शिष्टमंडल उपस्थित हुआ। शिष्ट मंडल के सदस्यों ने ऋषिवर के चरण छुए। उन्हें यथायोग्य आशीर्वाद देते हुए ऋषिवर बोले–''कहिए महाशय गण! अब तो आप लोग भली–भांति सुखपूर्वक होंगे? सुना है अब तो मर्त्यलोक में कांग्रेस की अपनी सरकार है, जवाहरलाल उस सरकार के प्रधान हैं, पटेल होम मैंबर हैं। अब तो मानो भारत में पुनः रामराज्य की स्थापना हो चुकी है। अब तो आपको कोई कष्ट न होगा? कहिए मर्त्यलोक में सब ठीक–ठाक तो हैं?

ऋषिवर का ऐसा वचन सुन शिष्टमंडल के मुखिया हाथ जोड़ बोले-प्रभो! मर्त्यलोक में जवाहरलाल की सरकार स्थापित तो हो चुकी है, परंतु देवताओं का संकट तो वैसे ही बना है। अनेक स्थानों पर तो वह संकट उग्रतम रूप धारण कर चुका है। सच पूछिए तो भगवन्! कांग्रेस द्वारा चलाया गया देश की आजादी का आंदोलन हिंदुओं के लिए तो बहुत ही मंहगा पड़ा है। जेलों में हम गए, फांसी पे हम झूले, सीने में गोलियां हमने खाई और उसका फल ले गए वे राजा और नवाब जिन्हें हिंदुस्तान से अथवा हिंदुस्तान की आजादी से दूर का भी वास्ता नहीं। जब कुर्बानियां करने का समय आता है, चंदे इकट्ठे करने का अथवा वोट प्राप्त करने का समय आता है तो हिंदुओं से ही अपील की जाती है परंतु जब अधिकार-वर्षा होती है तो सबसे पहले मुसलमानों का ही घर ढूंढ़ा जाता है।

आज भारत के ग्यारह प्रांतों में से आठ में कांग्रेसी सरकार है, दो में लीगी और पंजाब में मिली-जुली। कांग्रेसी प्रांतों में मुसलमानों को बेहद आराम है। कांग्रेसी प्रांतों में झूठ-मूठ भी यदि मुसलमान हाय-तोबा मचा दें तो दिल्ली से लेकर लंदन तक सारी धरती हिल जाती है। परंतु सिंध और बंगाल में खुले आम यह घोषणा की जाती है कि हम इन प्रांतों से हिंदुओं का बीज नाश कर देंगे और ऐसा केवल कहा ही नहीं जा रहा है, किया भी जा रहा है। बंगाल सरकार बिहारी मुसलमानों के लिए तो पानी की तरह रुपया बहा रही है, परंतु अपने प्रांत में संतप्त हिंदुओं के लिए उसके पास है केवल-धमकी। सिंध में हिंदू जमींदारों को धमका कर उनसे जमीनें छीन ली गई और बिहारी मुसलमानों को सिंध में बसने का निमंत्रण दिया जा रहा है। परंतु यह सब कुछ देखते हुए भी न तो दिल्ली के ही कान पर जूं रेंगती है और न ही लंदन के। जवाहर, पटेल और जयप्रकाश भी यह सब कुछ देखते हुए खामोश रह जाते हैं। आज गांधी जी अपने बहुत बड़े नाम के बल पर भले ही नवाखाली के ग्रामों में पैदल घूम लें परंतु आज भी पूर्वी -बंगाल में जीवन-संकट यथापूर्व बना है और जब तक लीग का मंत्री मंडल रहेगा तब तक ऐसा ही संकट रहेगा। आज कांग्रेस ने आसाम लीग के हवाले कर दिया है। कल को लीग फिर रूठ जाएगी-बिहार को भी हमारे हवाले करो, क्योंकि पहले बिहार बंगाल में ही था। कांग्रेस बिहार को भी लीग के हवाले कर देगी। फिर लीग लखनऊ, दिल्ली और आगरा मांगेंगी...।

न जाने भगवन्! रूठी रानी का यह तमाशा कब खत्म होगा? कैसे खत्म होगा? हमें तो कुछ समझ नहीं आता, हम क्या करें। कलियुग में पाराशर का वचन प्रमाण है ऐसा विचार लेकर हम आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं, प्रभो हमें कल्याण का मार्ग दिखाइए?

शिष्टमंडल के ऐसे वचन सुन ऋषिवर बोले! आप लोगों ने जो अपनी कष्ट कहानी कही है, मुझे वास्तव में उससे बहुत दु:ख हुआ है, परंतु कांग्रेस को बुरा-भला कहने से तो हिंदू जाति का तथा देश का कुछ लाभ न होगा। दोष तो हमारा अपना है। कांग्रेस में भी तो हिंदू ही हैं। जिन्ना और लियाकत भी तो कभी हिंदू ही थे-कभी आपने सोचा भी आपके इन सभी दु:खों के लिए अपराधी कौन?

अपराधी कौन...?

"मेरे कायदे आजम! आप हमारी ताकत पर भरोसा रखिए, पाकिस्तान का यह बायां हाथ आपसे केवल एक ही इशारा चाहता है। आप हमें हुक्म दीजिए। बंगाल का एक-एक मुसलमान वह जौहर दिखाएगा जिसके आगे तैमूर, चंगेज, अब्दाली और नादिर की शान भी फीकी पड़ जाएगी। इस्लामी शमशीरें म्यानों में तड़प रही हैं। हिंदुस्तान की सर जमीन पर फिर से वे सोमनाथ का मंजर दिखाने को बेताब हैं। हम सिर्फ कहते ही नहीं, वक्त पड़ने पर हम करके भी दिखा देंगे। कलम के जोर से हमें पाकिस्तान नहीं मिला, अब हम तलवार के जोर से पाकिस्तान बनाकर दिखाएंगे। सारे हिंदुस्तान में आम तौर पर और बंगाल, सिंध में खास तौर पर हम वह कयामत बरपा करेंगे कि यही हिंदू-कांग्रेस पाकिस्तान देने के लिए नाक रगड़ेगी। हम इम्तहान में पूरे उतरेंगे। आपके एक इशारे पर हम हिंदोस्तान में खून की नदियां बहा देंगे। आप हमारा इम्तहान ले लीजिए।" दिल्ली में अजमेरी दरवाजा के बाहर एंग्लो-अरेबिग कॉलेज के सुविशाल मैदान में अपने कायदे आजम को मुखातिब करते हुए लीग के शिशुपाल हसन शहीद सोहरावर्दी ने तालियों की गड़गड़ाहट में उपरोक्त शब्द कहे।

और खुदा का फजल, वह परीक्षा का दिन भी आ ही गया। 16 अगस्त 1946 का खूनी दिन, जय हिंद के हीरो 9 अगस्त के केवल एक ही सप्ताह पश्चात् उस दिन हलाकू की आत्मा ने लाखों रूप धारण कर भागीरथी माता की अमृतधारा को रक्त-रंजित करने का निश्चय किया। 16 अगस्त को प्रातः ही लाखों फरजिंदाने तौहीद, लाठियों, छवियों, तलवारों, पिस्तौलों से लैस कलकत्ता में जमा होने लगे। उनके पास लारियां थी, बेइंतहा पैट्रोल था, राशन के जमाने में भी उनके लिए अन्न के भंडार खुले थे। सिंध, बिलोचिस्तान, पंजाब, फ्रंटियर तक के हजारों दीनदार जेहाद की जंग में शरकत के लिए कलकत्ता पधारे। कलकत्ता की दौलत, हाय, कलकत्ता की दौलत-उस दिन ऐसा प्रतीत हुआ मानो गजनी का महमूद सोमनाथ के मंदिर को लूटने के लिए लाव-लश्कर लिए चला जा रहा है।

कामिनी और कंचन की भावी आशाओं से आकर्षित हो बारह लाख फरजिंदाने तौहीद एस्प्लैनेड के मैदान में रौनक अफरोज हुए। उनका सालार उन्हें मुखातिब करता हुआ बोला-''डेढ़ सौ वर्ष के बाद आज फिर बंगाल में इस्लामी हुकूमत कायम हुई है। खुदा के फज़्लो करम से आज हम फिर बंगाल के बादशाह बने हैं। हम यहां के राजा हैं, इन हिंदुओं को यहां हमारी प्रजा बनकर रहना होगा। डेढ़ सौ वर्ष पहले यह हमारे गुलाम हिंदू लोग हमारी खुशबूदी हासिल करने के लिए औरतों को सिंगार कर हमारे दरबार में उन्हें पेश करते थे। हम इन हिंदुओं को साफ-साफ कह देना चाहते हैं अगर यहां रहना है तो फिर हमारे साथ तुम्हें वैसे ही व्यवहार करना होगा। हिंदुओं की सारी दौलत हमारी है। इनका जो कुछ भी वह हमारा है क्योंकि हम यहां के बादशाह हैं। यह हिंदू मरकज में अपनी हुकूमत कायम कर हमसे अतायत करवाना चाहते हैं। इस्लामी शेरो! आज अपनी ताकत के इन्हें जौहर दिखाओ। इस्लाम दुनिया पर हुकूमत करने के लिए पैदा हुआ है। इस्लाम के शेरों! उठो अपनी शमशीरें संभालो आगे बढ़ो और जिन लोगों ने आज सोलह अगस्त के दिन हड़ताल में हमारा साथ नहीं दिया उन्हें सफाहे हस्ती से नेस्तोनाबूद कर दो।''

अपने सरदार का हुक्म मिलते ही यह इस्लामी लश्कर जहाद, जहाद की दुहाई मचाता हुआ अस्त्र-शस्त्र संभाले कलकत्ता पर टूट पड़ा और उसके पश्चात् जो कुछ हुआ उसे... लेखनी में शक्ति नहीं वह उस खूनी मंजर का वर्णन कर सके। भगवान् वह दृश्य किसी को न दिखाए। काली माता ने जी भरकर अपने ही पुत्रों के रुधिर से अपनी प्यास बुझाई। सगर के साठ हजार पुत्रों को जीवनदान देने वाली

भागीरथी माता भी उस समय अपनी बेबसी पर आंसू बहाती हुई स्वयं ही अश्रुओं की धारा बन गई।

उस दिन कलकत्ता से जान बचाकर भागे हुए एक सज्जन मुझे रेल में मिले। प्रतीत तो होते थे वे बहुत बड़े आदमी, परंतु उस समय वे बहुत बुरी हालत में थे। आजकल रेलगाड़ी में बैठे ऐसी बातें करने का समय तो नहीं, परंतु अनुकूल वातावरण पाकर मैंने प्रश्न कर ही तो दिया– क्यों महाराज? कलकत्ते में कैसा रहा?''

''बस महाराज, कुछ मत पूछिए–वे दिन परमात्मा किसी दुश्मन को भी न दिखाए–मेरा तो सर्वनाश हो गया। 25 लाख की आसामी था। आज कौड़ी–कौड़ी का मोहताज हूं।''

''लेकिन आप लोग कलकत्ता में 75 प्रतिशत थे। आपसे कुछ भी न बन पड़ा।''

''तीसरे दिन हम संभल गए, हमें इतने जोरदार हमले की आशा न थी।''

''लेकिन आप सोहरावर्दी के नादरी तराने तो सुन ही रहे थे।''

''लेकिन इतने बड़े पैमाने पर लूट–मार की हमें संभावना न थी। पुलिस और फौज पर हमें भरोसा था, हमें क्या खबर थी कि खुद सरकार ही दंगाइयों में शामिल हो जाएगी।''

''अजी भोले–भाले लाला साहब, इसी कलकत्ते पर हुकूमत करते सोहरावर्दी को एक वर्ष हो गया। रमेशदत्त, बंकिमचंद्र चटर्जी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, आशुतोष मुकर्जी, पी.सी. राय, रामकृष्ण परमहंस, ईश्वरचंद विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर का बंगाल लीगी मिनिस्टरी द्वारा किस कदर पद–दलित हुआ परंतु आप सब कुछ देखते रहे, कभी आपने प्रौटस्ट किया? बिहार में 9 प्रतिशत मुसलमान हैं, मिनिस्टरी में उन्हें 40 प्रतिशत स्थान प्राप्त हैं और आप लोग वहां 46 प्रतिशत हो परंतु 80 प्रतिशत टैक्स देते हुए भी आपका शासन में कुछ भी स्थान नहीं।

परंतु पंडितजी महाराज! कलकत्ते में पच्चास प्रतिशत लोग तो बंगाल प्रांत से बाहर के हैं। अपने घरों को छोड़ दूर देश में वे पैसा कमाने आए हैं। पंजाबी, मारवाड़ी, बिहारी आधा कलकत्ता तो इन्हीं से भरा पड़ा है। इन्हें तो पैसा कमाना है। परदेश में राजनीति से इन्हें क्या मतलब। यह काम तो बंगालियों का है और बंगाली हिंदू की हालत यह है कि हमारी अपेक्षा वह अपने बंगाली मुसलमान को अपने अधिक निकट समझता है। उस दिन सोहरावर्दी को हिंदुओं ने घेर लिया। करीब ही था कि इस उत्पाती का फैसला ही कर दिया जाता। झटपट किरण शंकर सोहरावर्दी

से चिपट गए। ''इस पर हाथ उठाने से पहले मुझ पर हाथ उठाओ'' और यह डाकुओं का सरदार एक हिंदू की कृपा से मौत के मुंह से साफ-साफ बच निकला। बंगाली हिंदू का जीवन है नौकरी। बंगाली की नौकरी छूटी कि बस वह तो गया। पंजाब में अथवा अन्यत्र तो बिना पैसे काम चल भी जाए परंतु बंगाल में तो कदापि नहीं। यही कारण है कि बंगाली हिंदुओं के जीवन का केवल एक ही उद्‌देश्य है-नौकरी, डाक्टरी, वकीली,बैरिस्टरी, प्रोफेसरी, जमींदारी से रुपया कमाना। जितने किसान-मजदूर हैं सब मुसलमान। आज पूर्वी बंगाल में धान की फसल काटने वाला एक भी हिंदू मजदूर नहीं। ऐसी अवस्था में अगर बंगाल के हिंदू निरंतर पिटते और मार खाते ही रहें तो आप ही बताइए हमारी इस बेबसी के लिए अपराधी कौन?

लाहौर की एक तंग-सी गली में चीनियां मस्जिद का बिल्कुल साधारण-सा; योग्यता-दूरदर्शिता तथा सामान्य प्रतिभा से हीन कठमुल्ला मौलाना आजाद ने इस शख्स को एक दम पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का प्रैजीडैंट बना दिया। जिस आसन को कभी पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने सुशोभित किया था; स्वामी श्रद्धानंद जैसी परम पवित्र विभूतियों को अपनी गोद में खेलता हुआ देख जो स्थान अपनी शान पर फूला न समाता था उस महामहिमामय सिंहासन पर बिठा दिए गए, मौलाना दाऊद गजनवी-'' **किमाश्चर्यमतः परम्?**''

लाहौर में वर्षो तक रहते हुए कभी भी मैंने दाऊद साहिब का नाम तक न सुना। ऐसे व्यक्ति के प्रधान बनाए जाने पर मेरा माथा ठनका। क्या मौलाना जफरअली खां, डॉक्टर आलम, मियां इफ्तखार के समान ही यह हजरत भी कांग्रेस के पवित्र नाम को कलंकित करेंगे। लाहौर में रहने वाले मेरे एक मित्र मुझे दिल्ली में मिले। उनका नाम यहां लिखना आवश्यक नहीं। मैंने उन्हें कहा-''अब दाऊद साहिब प्रांतीय कांग्रेस के प्रधान बने हैं, इतनी प्रार्थना तो उनसे करना-वे अपने नाम के साथ गजनवी न लिखकर भारतीय लिखा करें। यदि कारण वश भारतीय लिखना उन्हें स्वीकार न हो तो लाहौरी ही लिख दिया करें और यदि इतनी भी हिम्मत न

हो तो कम–से–कम अल्लामा मशरकी की तरह मौलाना मशरकी ही बन जाएं। मैं नहीं जानता मेरे मित्र ने मौलाना तक मेरा संदेश पहुंचाया अथवा नहीं परंतु इतना तो मैं आज भी जानता हूं मौलाना गजनवी आज भी गजनवी ही हैं, भारतीय नहीं।''

लगभग छः महीने पश्चात् प्रांतीय धारा सभाओं का इलैक्शनी दौरदौरा था। हिंदू सीटों पर तो कांग्रेस का निष्कंटक राज्य है ही, परंतु मुसलमानी सीटों पर लीगी उम्मीदवार का मुकाबला करना कांग्रेस के लिए लोहे के चने चबाना है। चौधरी मुहम्मद हुसैन और इफ्तखार दो मुर्गे जो सन् 35 में भूले–भटके किसी तरह कांग्रेस के चक्कर में फंस गए थे वे अब फरार हो चुके थे। अब किस मुसलमान की हिम्मत थी वह कांग्रेस के टिकट पर खड़ा हो। तो क्या पंजाब–कांग्रेस केवल हिंदू कांग्रेस बनकर रह जाएगी। एक भी मुसलमान कांग्रेस टिकट पर सफल न हो सका तो फिर कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप को तो बहुत धक्का लगेगा परंतु किया क्या जाए, मुसलमान कांग्रेसी मुलसमान को तो मुसलमान समझते ही नहीं।

आखिर गजनवी साहिब का भाग्य फिर चमका। उनके भाग्य में एम.एल.ए. बनना लिखा ही था। एक संयुक्त सीट से मौलाना को कामयाब बनाने के लिए कांग्रेस ने सिर धड़ की बाजी लगा दी। लगीं बड़ी–बड़ी अपीलें निकलने–भारत के सच्चे सपूत, कुर्बानीएं–मुजस्सिम दाऊद साहिब को वोट दीजिए। कौम के सच्चे खादिम, वतन के जानसार रहनुमा गजनवी साहिब को कामयाब बनाइए। अगर आप अपने मादरे वतन को आजाद देखना चाहते हैं तो मौलाना गजनवी के नाम पर्ची डालिए। कहते हैं मौलाना के सिर पर कामयाबी का सेहरा बंधवाने में कांग्रेस को अपने फंड में से एक लाख रुपया खर्च करना पड़ा। गरीब मजदूरों किसानों की गाढ़ी कमाई को पानी की तरह बहाकर हिंदू वोटों की मेहरबानी से आखिर मौलाना गजनवी एम.एल.ए. बन ही गए।

''कुछ दिन पश्चात् जाता हुआ मैं लाहौर उतरा। वहीं मेरे मित्र मुझे मिल गए। इलैक्शन की बातें छिड़ गईं। मैंने कहा–भाई रामचंद्र! योग्य से योग्य हिंदू को ठुकरा कर रद्दी से रद्दी मुसलमान को इतना ऊंचा उठा देना– कांग्रेस की यह नीति मुझे पसंद नहीं।''

''लेकिन कांग्रेस–पार्टी में एकाध मुसलमान तो होना ही चाहिए।''

''तो ऐसा मुसलमान आप लोगों को मुस्लिम–सीट से ही लेना चाहिए था। एक

तो हिंदुओं की सीटें पहले ही थोड़ी हैं दूसरे जिस कौमन सीट पर हिंदू बहुत जल्दी कामयाब हो सकता था वह भी आपने मियां को दिलवा दी।''

''लेकिन कांग्रेस की नजरों में तो हिंदू-मुसलमान की कोई तमीज नहीं।''

''लेकिन मजदूरों की सीट पर तो किसी मजदूर को ही कामयाब बनाना चाहिए था। मस्जिद में अजान देने वाले मुल्ला का मजदूरों से क्या संबंध। मुझे गजनवी साहिब की देश-भक्ति पर विश्वास नहीं।''

''आप कुछ भी कहें पाराशरजी महाराज! अब तो पांच साल तक यह सीट मौलाना के ही पास रहेगी।''

''पांच साल ही नहीं, पचास साल तक रहे, भाई रामचंद्र! लेकिन इतनी बात तो अभी से नोट कर लीजिए यह मियां तभी तक कांग्रेस में हैं जब तक कांग्रेस के प्रधान हैं। प्रधान पद से हटे और साथ ही कांग्रेस से भी हटे। इन्हें इतना महत्त्व न दीजिए।''

''मोलाना से हमें ऐसे व्यवहार की आशा नहीं।''

''जफरअली खां, हसरत मोहानी, डॉक्टर आलम, जिन्नाह से भी तो ऐसी कोई उम्मीद न थी।''

''कुछ दिन पश्चात्, शायद उन दिनों में गोंडा में कृष्ण प्रसादजी के पास ठहरा था। प्रातःकाल ज्यूं ही एजेंट ने ''लीडर'' मेज पर रखा एक फूलदार समाचार ने मुझे आकर्षित किया। मैंने पेपर उठाया मेरा स्वप्न सत्य निकला। ''मौलाना दाऊद गजनवी कांग्रेस को छोड़ मुस्लिम लीग में शामिल हो गए।'' मेरे दिल पर एक जबरदस्त चोट लगी। मुझे ऐसा लगा मानों मेरी आंखों के सामने मेरी कुलमाता को किसी दुष्ट ने ठोकर से अपमानित किया हो। कुछ दिन पश्चात! वही मेरे लाहौरी मित्र मुझे हरिद्वार में मिले। मैंने भी तो आव देखा न ताव झट बम का गोला छोड़ ही दिया-''कहो भाई, क्या समाचार है तुम्हारे दाऊद गजनवी प्रधान एम.एल.ए. का?''

''अजी पाराशरजी महाराज! जख्मों पर नमक काहे को छिड़कते हो। इस शख्स ने तो पंजाब में कांग्रेस की नाक ही काट डाली। हमें तो किसी को मुंह दिखलाने लायक न छोड़ा। कांग्रेस को छोड़ जाता कोई बात न थी परंतु कांग्रेस को छोड़ हमारे दुश्मनों से मिलकर अब तो यही शख्स लीग का ढंढोरची बन कांग्रेस की जड़े खोद रहा है।''

''मैंने कहा, भाई रामचंद्र! तुम्हारा रोना उचित है परंतु इतना तो बताओ एक साधारण से मुल्ला को इतने महत्त्व के स्थान पर बिठलाने का अपराधी कौन?''

''अजी पाराशरजी महाराज! आप बहावलपुर का रोना रोते हैं परंतु आप का यह हरिद्वार क्या बहावलपुर से कम है''-विश्वज्ञान मंदिर के गंगा तट वाले दक्षिणी बरामदे में बैठे हुए श्री संत कृपाल देवजी को अपने भ्रमण वृत्तांत सुना रहा था-किस प्रकार बहावलपुर में धीरे-धीरे मंदिरों को मस्जिदों का रूप दिया जा रहा है, किस प्रकार मुसलमानों को झटपट बजाज बना उन्हें जाली परमिट देकर हिंदुओं के परंपरागत कपड़े के व्यापार को नष्ट किया जा रहा है, यह सब दुखड़े सुना ही रहा था कि संतजी महाराज गंभीर मुद्रा धारण कर बड़े दुःख के साथ बोले-''यह आपका हरिद्वार भी तो धीरे-धीरे बहावलपुर बनाया जा रहा है।''

''मैं सहम सा गया-हरिद्वार का बहावलपुर से क्या संबंध। मैंने कहा-परंतु यहां तो बिल्कुल राम राज्य है।''

''यहां रहो तो पता लगे, रामराज या इस्लामराज।''

''लेकिन यहां तो शहर कोतवाल ब्राह्मण है और यूनियन का चेयरमैन भी एक कांग्रेसी है।''

''लेकिन हमारी किस्मत का मालिक तो वही है ज्वालापुर का अब्दुलअलीज।''

''कौन है वह?''

''वही जो आजतक दाने-दाने को मोहताज था आज हरिद्वार यूनियन का चेयरमैन बना बैठा है।''

''लेकिन चेयरमैन साहिब तो हिंदू हैं।''

''हैं तो लेकिन उन्हें तो अपनी वकालत से ही फुरसत नहीं। उनका तो नाम ही नाम है काम तो यही वायस प्रैजीडेंट अब्दुल अजीज ही करता है। इस शख्स ने ज्वालापुर में मस्जिदें बनवाई, अवधूत मंडल के पास नजूल की जमीन पर एक बहुत बड़ी मस्जिद खड़ी कर दी। 16 अगस्त के दिन इसी शख्स की रहनुमाई में मुसलमानों का एक बहुत बड़ा जलूस हर की पौड़ी पर तकबीर और याअली के नारे लगाता फिरा। अब यही शख्स हरिद्वार में मांस और शराब की दुकानें खुलवाने

की योजना बना रहा है।''

''लेकिन चेयरमैन साहिब को तो इसकी इन हरकतों पर जरूर ध्यान देना चाहिए।''

''दें कैसे। वे हैं कांग्रेसी और कांग्रेसी का सबसे प्रमुख सिद्धांत है कि मुसलमानों के साथ जहां तक हो सके मिलकर रहा जाए। उन्हें यदिच्छा सब कुछ करने दिया जाए। जहां तक हो सके उनका हौसला बढ़ाया जाए। उन्हें थपकी दी जाए। यह बात कोई हरिद्वार के कांग्रेसियों की ही नहीं सारे हिंदुस्तान भर में यही कुछ हो रहा है। दिल्ली की केंद्रीय सरकार के कांग्रेसी भी तो लीग के प्रति ऐसा ही व्यवहार कर रहे हैं।''

''लेकिन यहां इतने साधु-संत भी तो हैं।''

''इन्हें तो अपने हलवे मांडे से ही फुरसत नहीं। यह लोग अपने अन्नदाता से क्यूं बिगाड़ पैदा करने लगे?''

''अन्नदाता, अब्दुलअजीज।''

''अन्नदाता न सही परमिट दाता ही सही और आजकल परमिट से ही तो अन्न मिलता है-**ओ३म् श्री परमिटाय नमो नमः।**''

''इन पंडों को ही कुछ न कुछ करना चाहिए।''

''इन पंडों की असली हालत आप जानते नहीं। अगर यह पंडे कुछ करने वाले होते तो आज ज्वालापुर में ही इनकी यह दुर्दशा न होती। इन पंडों ने ही तो अपने कुकृत्यों से पंचपुरी में यवनों की इतनी संख्या बढ़ाई। ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम के पास जो कबरें बनी हैं सब पंडितानियों का ही तो पुण्य-प्रताप है। इन पंडों को हजार बार समझाया वे कनखल-हरिद्वार को ज्वालापुर से पृथक कर दें ताकि इन दोनों तीर्थ-स्थानों के प्रबंध में किसी भी कांग्रेसी, लीगी अथवा अहरारी मुसलमान का हाथ न रहे। मुसलमान भले ही वह कांग्रेस ही क्यूं न हो मजहबी मामलात में तो वह पक्का मुसलमान है। क्या यह शर्म की बात नहीं कि हरिद्वार की किस्मत का फैसला ज्वालापुर के कसाई के हाथों में सौंप दिया जाए? लेकिन यह पंडे नहीं माने।''

''लेकिन यहां इतनी संस्थाएं-ऋषिकुल-गुरुकुल भी तो हैं''

''इन लोगों को हरिद्वार के भीतरी मामलों से क्या काम। यह लोग हरिद्वार में हरिद्वार के लिए थोड़े ही बैठे हैं। यह लोग तो हरिद्वार के बड़े नाम का फायदा उठाने के लिए ही यहां डटे हुए हैं।''

''और यह जो लाखों यात्री गाड़ियों में भर-भर कर आते हैं।''

''यह लोग तो यहां चार दिन की मौज मनाने आते हैं, कोई संघर्ष करने थोड़े ही आते हैं। इन्हें हरिद्वार की पवित्रता से क्या मतलब? इन्हें तो वासनामय सुख से सरोकार है। जैसे यह लोग स्वयं थे वैसा इन्होंने हरिद्वार को बना दिया। मुझे अच्छी तरह याद है, पाराशरजी! जब मैं पहली बार हरिद्वार में आया रेल से हरकी पौड़ी तक कोई सड़क न थी। टांगा-टमटम भी एक न था और आज आप स्टेशन से हरकी पौड़ी तक का नजारा देख लीजिए। हरिद्वार में दो सिनेमा हैं। टांगे वाले और लाठियां बेचने वाले सभी मुसलमान हैं। इन यात्रियों को लाख समझाया कि सामान ठेले पर धरा और खुद पैदल चले गए, आखिर स्टेशन से धर्मशाला है कितनी दूर, अधिक से अधिक चार फरलांग। बद्रीनाथ तक तो यह लोग पैदल चल कर जा सकते हैं परंतु स्टेशन से धर्मशाला तक पैदल चल कर नहीं जा सकते। आप सारे प्लेट फार्म पर घूम आइए। भगवद्भक्ति और आत्मिक शांति का कहीं नाम तक नहीं। चंद एक पेशा-वर लोग यंत्र-तंत्र अपना मायाजाल फैलाए बैठे हैं। हरिद्वार तो अब हलवाई द्वार बन गया। हर एक अपने ही स्वार्थ की चिंता में है। हर एक का अपना-अपना रास्ता है। ऐसे केंद्रीय तीर्थ स्थान पर भी एक होकर हम अपने भविष्य पर विचार नहीं करते। फिर अगर मुट्ठी भर अनपढ़, कमअक्ल, गरीब, सर्वथा साधनहीन मुसलमान आज इस पंचपुरी के कर्त्ताधर्ता बने बैठे हैं तो आप ही सोचिए पाराशरजी! इस हमारे दुर्भाग्य के लिए अपराधी कौन?''

एक प्राचीन गाथा है, सुंद-उपसुंद दो सगे भाई थे। थे बड़े बलवान्। घोर तपस्या द्वारा उन्होंने ब्रह्मा को प्रसन्न किया- वर मांगो, ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर कहा।

''हम अमर हो जाएं-हमें वर दीजिए।''

''अमरत्व का वरदान नहीं मिल सकता तथा'' अपनी मृत्यु का प्रकार स्वयं चुन सकते हो।'' ब्रह्मा ने कहा।

''हमारी मृत्यु हमारे अपने हाथों से ही हो।''

''बहुत अच्छा।''

राक्षस प्रसन्न थे, उन दोनों में इतना प्रेम था कि एक दूसरे को देखकर जीते थे– फिर उनमें परस्पर संघर्ष कैसा? अब दोनों लगे स्वच्छंद विचरने और मनमाने अत्याचार करने। देवताओं ने हाहाकार मचाई, सुंद–उपसुंद का नाश करने के लिए ब्रह्मा ने एक अत्यंत रूपवती कन्या की रचना की और इस कन्या को दोनों भाइयों के सामने भेज दिया। ज्यूं ही दोनों भाईयों ने तिलोत्तमा को देखा उसे प्राप्त करने के लिए दोनों में तकरार हो गई।

''यह मेरी है–अबे हट, इसे मैंने पहले देखा'' बातों–बातों में धक्का–मुक्की होने लगी। नौबत मारपीट तक आ गई और दोनों ही एक दूसरे के हाथ से मारे गए।

बीसवीं शताब्दी के किसी ब्रह्मा ने हिंदू–मुसलमान को लड़ाने के लिए मेंबरी रूपी तिलोत्तमा का सृजन किया। इस चुंगी की मेंबरी ने न केवल हिंदू–मुसलमान को ही बल्कि हिंदू–हिंदू को भी आपस में शत्रु बना दिया। चुंगी की मेंबरी की अपार महिमा है। कुछ लोगों का तो यहां तक विचार है कि त्रेता और द्वापर युग की कामधेनु गौ ने ही कलियुग में चुंगी की मेंबरी का रूप धारण कर लिया।

''उन दिनों लाहौर के हिंदुओं में हाहाकार मच गया। बात यह थी कि बरतानवी सरकार ने सन् 41 की मर्दुमशुमारी के मुताबिक लाहौर कॉर्पोरेशन की सीटों को बंदर बांट की। कॉर्पोरेशन की 43 सीटों में से 2 सिखों को 12 हिंदुओं को और 29 मुसलमानों को। हिंदुओं का यह कहना था कि 41 की मुर्देमशुमारी गलत की गई थी। कांग्रेस की आज्ञानुसार हिंदुओं ने जनगणना का बहिष्कार कर दिया था, मुसलमानों ने एक–एक के दस–दस लिखाए। हिंदुओं का यह कहना था कि सीटों का विभाजन राशन कार्डों के अनुसार की गई गणना के अनुसार हो क्योंकि यह जनगणना ठीक थी। परंतु ठीक गणना के अनुसार चलने से सरकार का अपना स्वार्थ खतरे में था। ठीक गणना के अनुसार हिंदुओं को यदि मुसलमानों की अपेक्षा अधिक सीटें दी जातीं तो कहर मच जाता, जमीन फट जाती, आसमान टूट पड़ता। हंलाकु और चंगेज की तलवारें खून की नदियां बहा देती, परंतु अपने साथ खुले आम अन्याय होता देख हिंदू संतोष के घूंट पीकर रह जाता है।

हिंदुओं ने कार्पोरेशरन के बहिष्कार का निर्णय किया। हड़ताल हुई, धड़ल्लेदार लैक्चर भी हुए। कौंसिल ऑफ एक्शन भी बन गई। बड़े–बड़े चौड़े घोषणा–पत्र भी प्रकाशित हुए; यह घोषण की गई कि जब तक हिंदुओं से न्याय न होगा बायकाट जारी रहेगा।

मैं उन दिनों नकोदर में अपने बाल-सखा टेकचंद के पास था। भाई टेकचंद बोले-''श्याम! इस बार तो लाहौर के हिंदुओं ने बड़ी हिम्मत दिखाई।''

''देगची का उबाल है, टेकचंद! कुछ ही दिन में इस हिम्मत के करिश्मे खुद ही देख लोगे।''

''तो क्या तुम्हारे खयाल में बायकाट कामयाब न होगा।''

''बिल्कुल नहीं।''

''कारण।''

''ऐसी हड़तालें पहले भी तो की जा चुकी हैं। यह बाजू पहले भी आजमाए जा चुके हैं। हम लोग भावुक हैं। पिछले दिनों व्यापारियों ने हड़ताल की। कई एक दुकानदारों ने दो घड़ी की इज्जत कमाने के लिए हड़ताल के दिनों का किराया माफ करने की घोषणा की। जनता ने तालियां बजाई। समाचार पत्रों ने फोटो छापे परंतु हड़ताल समाप्त होते ही यही मकानदार किरायेदारों के गले में अंगूठा दे हड़ताल के दिनों का भी किराया ले गए। हमारा रोना-धोना हमारी स्वार्थपूर्ति तक ही सीमित है। मेरा खयाल है कि सरकार कुछ एक बड़े-बड़े हिंदुओं को नामजद कर देगी और बस फिर खेल खत्म और पैसा हज्म।''

''तो क्या तुम्हारे खयाल में यह लोग नामजद होना स्वीकार कर लेंगे।''

''यह सारा प्रपंच है ही इसीलिए।''

और सचमुच हुआ भी यही। संघर्ष-समिति के लगभग सभी सदस्यों को सरकार ने कारपोरेशन का मेंबर नामजद कर दिया। बस फिर क्या था आप सुखी तो जग सुखी। सेनापतियों ने न केवल हथियार ही डाल दिए बल्कि वे तो अपनी सेना को छोड़ विरोधी सेना में जा मिले। एक खानबहादुर कार्पोरेशन के मेयर चुने गए। डिप्टी मेयर चुने गए अंबेदकारी दल के सुखलाल। सेक्रेटरी और अंडर सेक्रेटरी सब के सब मुसलमान और वे भी लीगी। एक करेला और दूसरा नीम चढ़ा। नामजद सदस्यों को इतनी तो आशा थी कि किसी-न-किसी सब-कमेटी में उन्हें अवश्य ही लिया जाएगा, परंतु लीगी मेयर ने साफ ऐलान कर दिया, किसी भी गैर लीगी को किसी भी सब-कमेटी में नहीं लिया जाएगा और न ही उसे कार्पोरेशन में अन्य कोई स्थान ही प्राप्त होगा। दूध से जैसे मक्खी निकाल बाहर फैंक दी जाती है, उसी प्रकार 80 प्रतिशत टैक्स देने वाले हिंदू कार्पोरेशन से निकाल बाहर फैंक दिए गए। एक हिंदू सदस्य ने थोड़ा सा प्रोटैस्ट किया-लीगी मेयर ने फिर खड़े होकर कहा-''कार्पोरेशन

पर लीगियों का राज है। जो हमारे जी में आएगा हम करेंगे। अगर तुम लोग यहां आकर चुपचाप बैठना चाहते हो तो सिर माथेपर, नहीं तो तुम लोग शौक से घर जाकर आराम कर सकते हो। कार्पोरेशन का काम तुम्हारे बिना भी चलता रहेगा।''

टेकचंद बोले–''श्याम! यह तो हिंदुओं की बहुत बेइज्जती हुई।''

''यह तो होना ही था, टेकचंद! जिस दिन यह स्वार्थी लोग अपने सिद्धांत को तिलांजलि दे कार्पोरेशन में गए थे मेरा माथा उसी समय ठनका था। इन्हें चाहिए था अपनी मांगें मनवाकर पीछे कार्पोरेशन में जाते, परंतु स्वार्थी का दीन क्या, स्वार्थी लोग वहां गए और आज यदि इन्हीं के कारण सारे हिंदू समाज को अपमानित होना पड़ा तो आप ही बताइए–इसके लिए अपराधी कौन?

यह शायद 26 अक्टूबर की बात है। इस दिन जिन्नाही लीगियों की चंडाल चौकड़ी शासन सभा में पद संभालते समय ताज के प्रति वफादारी की शपथ लेने गौरांग महाप्रभु के दरबार में उपस्थित हो रही थी। लीगियों के हौसले बेहद बुलंद हो चुके थे। अपने नेता से जो सर्वोत्तम गुण उन्होंने प्राप्त किया था, वह था निरंकुशता और आखिर यह गुण उनमें हो क्यूं न। जो वस्तु कांग्रेस को निरंतर पचास वर्ष के संघर्ष, बलिदान और यातनाओं के पश्चात् मिली, वही वस्तु लीग को आराम से घर बैठे ही मिल गई। भगतसिंह की तरह किसी लीगी ने हंसते-हंसते गले में फांसी का डोरा डाला, स्वामी श्रद्धानंदजी के समान किसी लीगी ने फौजी संगीनों के सम्मुख छाती तानी; लाला लाजपतराय के समान किसी लीगी ने छाती तान कर अपने सिर पर लाठियां बरसवाईं, बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु के समान कितने लीगी फांसी के तख्ते पर झूले, लाखों कांग्रेसियों के समान कितने लीगियों ने कारागार की यातनाएं भोगीं। इतना बलिदान करने के पश्चात् जो कांग्रेस को मिला वही लीग को! मुफ्त की शराब पीकर आज अगर लीगियों का दिमाग काबू से बाहर हो जाए तो इसमें आश्चर्य ही क्या।

आगे-आगे चल लयाकत, निश्तर, चुंद्रीगर ओर गजनफर और उनके पीछे चले

देशरत्न, जवाहर, पटेल, राजा और राजेंद्र। उस दिन लीगियों ने अपनी सभ्यता का खूब ही प्रदर्शन किया। जिन्होंने वह दृश्य देखा यावत्–जीवन वह उस दृश्य को न भूल सकेंगे। उस दिन की पाकिस्तानी सभ्यता का नमूना यदि साक्षात् मुहम्मद साहिब आकर देखते तो गद्गद् हो जाते। लीगियों ने नेताओं का रास्ता रोक लिया। उनकी कार के शीशे तोड़ डाले, तिरंगे झंडे फाड़ दिए, जलते हुए सिगरेट उनकी कारों में फैंके, जिनसे गद्दियों को आग लग गई। कारों का आगे चलना असंभव था, गुंडों ने वह हुल्लड़ मचाया, वे गंदे शब्द कहे कि बस। ऐसे व्यवहार से अहिंसावादी कांग्रेसियों पर क्या बीती, यह तो वही महापुरुष जानें।

अभी कल ही की बात है, मैं सदर बाजार में वैद्य प्रह्लाद दत्त जी के साथ दिल्ली के हाल ही के दंगें के संबंध में वार्तालाप कर रहा था। वैद्यजी बोले–पाराशरजी! उस दिन सेक्रेटेरियेट के बाहर हमारे नेताओं की जो दुर्दशा हुई समाचार पत्रों में उसका वर्णन पढ़ हमारे तन–बदन में तो आग लग गई। जो कौम अपने नेताओं का अपमान देखकर भी चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती है वह कौम काहे की, उससे मिट्टी भली, मार खाकर मुंह पर आती तो है। यह समाचार पढ़ कर हमसे तो रहा न गया। कुछ दिल जले नौजवान इकट्ठे हुए। निश्चय हुआ कि लीगी–गुंडागर्दी से नेताओं की मानमर्यादा की रक्षा अवश्य ही की जाए।

अगले दिन संघ के सूरमा भी रंग मंच पर जा पहुंचे। अब चला चक्र शठे शाठ्यम् का। लीगी भी दल–बल सहित पहुंचे हुए थे। ज्यूं ही उन्होंने गुंडापन का श्रीगणेश किया इधर से भी ईंट का जवाब पत्थर से मिला। अब किसी लीगी की मजाल थी जो नेताओं के पास तक फटक पाए।

''सचमुच आपके स्वयं सेवकों ने बहुत अच्छा किया'' मैंने कहा।

''लेकिन जिनके लिए किया उन्होंने तो आज तक न कहा कि अच्छा किया, उल्टे उस स्थल का संघ के स्वयंसेवकों की उपस्थिति को बहुत बुरा मनाया और आगे को वहां न आने का आदेश दिया। इन नेताओं को भी लीगी गुंडागर्दी का मजा चखने का शौक सा पड़ गया है। हमारे स्वयंसेवक तो वहां जाएंगे नहीं। आप ही बताइए अब यदि लीगी वहां उपद्रव मचाएं, आचाजें कसें, मोटरों में सिगरेट फैंके, झंडे जलाएं तो उनको गुंडापन के अर्थ में उत्साहित करने के लिए अपराधी कौन?

राष्ट्र-रथी जवाहर के लिए मेरे हृदय में जो सम्मान की भावना है, उसे यहां शब्दों में व्यक्त करना आवश्यक नहीं। जिन भद्र पुरुषों ने मेरे लिखे ग्रंथ 'जवाहर-दिग्विजय' को पढ़ा है वे इस बात को भली प्रकार जानते हैं मेरे हृदय में जवाहर के प्रति किस कदर सुंदर भावना है। परंतु यह सब कुछ होते हुए भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि रियासत काश्मीर के भीतरी मामलों में दखल देते हुए शेख अब्दुल्ला के पक्ष को इतना महत्त्व देकर जवाहरलाल ने अच्छा नहीं किया। मैं अब्दुल्ला को अच्छी तरह जानता हूं। साधारण से स्कूल मास्टर की स्थिति से ऊपर उठते-उठते किस प्रकार उस शख्स ने सांप्रदायिकता का आश्रय ले सन् 31 में काश्मीर में खून की नदियां बहाई, किस प्रकार इस शख्स ने महाराज के महल को उड़ा देने का भयानक षड़यंत्र रचाया, फिर जमाने की रवश को पहचानते हुए इस छद्मवेषी ने राष्ट्रीयता का बहरूपियापन धारण किया। नेशलनल कांफ्रेंस का ढ़ोंग रचा, किस प्रकार इस शख्स ने ऑलइंडिया शोहरत हासिल की, यह भी मैं अच्छी तरह जानता हूं। 1934 में अपनी स्वर्गीय माताजी के साथ जब मैं श्री अमरनाथ जी की यात्रा पर गया था, अनंतनाग में मैंने शेख साहिब के दो लैक्चर सुने थे। वे लैक्चर काश्मीरी जबान में थे। उस व्याख्यान का शब्दश: भावार्थ तो मैं समझ न सका परंतु इतना तो उनके भाषण से स्पष्ट था कि वे मुसलमानों को हिंदुओं के विरुद्ध भड़का रहे थे।

शेख अब्दुल्ला अपने को काश्मीर का फ्युहरर समझता है। डोगरा राज को समाप्त कर वह काश्मीर को बी ग्रुप का एक शक्तिशाली अंग बनाना चाहता है। हैदराबाद के मामले पर तो वह खामोश है, परंतु अमृतसर की संधि का शोर मचा-मचा कर वह 50 लाख रुपये में काश्मीर की रियासत हैदराबाद के निजाम के हाथों बेच देना चाहता है। अभी पिछले दिनों इसी शख्स ने महाराज के शासन को उलट देने के लिए बड़ा भयानक षड्यंत्र रचाया। पुरोग्राम यह था कि सब पुलों को उड़ा दिया जाए। टेलीग्राम के तार काट दिए जाएं। मुस्लिम जनता विद्रोह कर दे, मुस्लिम सिपाही विद्रोही जनता का साथ दें। महलों को जला कर राख का ढेर कर दिया

जाए–परंतु महाराज का भाग्य अच्छा था। उन्हें दीवान योग्य मिला था। शेख साहिब का षड्यंत्र विफल हुआ, शेख साहिब गिरफ्तार कर लिए गए।

मैं नहीं समझता काश्मीर में मुसलमानों को क्या कष्ट है, अलबत्ता मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि काश्मीर में हिंदुओं को बेहद कष्ट हैं। मुझे अनेक ऐसे काश्मीरी हिंदू मिले जिनकी सारी उम्र काश्मीर राज्य की सेवा में बीत गई, परंतु जिन्हें आज तक भी वहां का नागरिक कहलाने का अधिकार नहीं मिला। जम्मू और श्रीनगर में उन्होंने काश्मीर को अपना घर बना लिया परंतु वे लोग न तो रियासत में नौकरी ही कर सकते हैं, न वकालत और न ही कोई अन्य बनज–व्यापार, कितने ही वैभवशाली वंशों को इसी कानून का शिकार बन नष्ट–भ्रष्ट होते मैंने अपने आंखों देखा। बाहर के पंजाबी हिंदुओं का रियासत में कोई दखल नहीं परंतु बाहर के मुसलमान रियासत में अच्छे से अच्छे ओहदों पर लगे हैं। हैदराबाद में हिंदी का नाम तक लेना एक घोर अपराध है, हिंदी प्रचारिणी सभा खिलाफे कानून जमायत है, उस्मानियां यूनिवर्सिटी में शिक्षा का, माध्यम एम.ए. क्लास तक उर्दू है, लेकिन काश्मीर में उर्दू ही राजभाषा है। डाइरैक्टर ऑफ एज्यूकेशन उर्दू प्रेमी मुस्लिम सज्जन हैं। राज का सारा कार्यभार उर्दू में ही चलता है। हैदराबाद में जितने भी अफसर हैं वे सब के सब मुसलमान हैं और वे भी यू.पी. पंजाब से इंपोर्ट किए हुए। हैदराबाद का खजाना न केवल हैदराबादी मुसलमानों के लिए बल्कि सारे संसार के मुसलमानों के लिए खुला है। हिंदुस्तान में एक भी ऐसा शहर, कस्बा, ग्राम नहीं जहां की मस्जिद का मुल्ला निजाम साहिब से सौ सवा सौ मासिक वेतन ना पाता हो, विपरीत इसके काश्मीर में काश्मीर से बाहर का कोई भी हिंदू नौकरी नहीं कर सकता, जमीन नहीं खरीद सकता, जायदाद नहीं बना सकता। हैदराबाद में मुंजे, श्यामाप्रसाद मुकर्जी, श्री सावरकर, भाई परमानंद, रामचंद्र दहलवी को आने की इजाजत नहीं, काश्मीर में जिन्ना से लेकर दाऊउ गजनी तक जितने भी लीगी हैं रियासत की ओर से इनका स्वागत होता है। ऐसी काश्मीरी रियासत में अब्दुल्ला का पक्षपूर्ण राष्ट्रपति जवाहर कार्य समिति की आवश्यक मीटिंग तक छोड़ काश्मीर की ओर चल दिए।

यह उस दिन की बात है जिस दिन रियासती पुलिस ने कोहाला के स्थान पर राष्ट्रपति को रोक लिया था और अखबारों ने यूं ही खबर उड़ादी थी कि राष्ट्रपति कश्मीरी सेना की संगीनों से जख्मी हो गए। मेरे एक कांग्रेसी मित्र बोले–रियासत के बेलगाम शासन के विरुद्ध अब्दुल्ला का नाराए बगावत बिल्कुल वाजिब है''

मैंने कहा–अब्दुल्ला का नाराए बगावत वाजिब हो अथवा गैर वाजिब, परंतु जवाहर का अब्दुल्ला की मदद के लिए भागे–भागे जाना यह तो सरासर गैर वाजिब ही है।

''कदापि नहीं, हिंदुस्तान और रियासतों की समस्या एक है। कांग्रेस को जब रियासती प्रजा की भी चिंता करनी है। पंडित जी ने कश्मीर पहुंच कर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इस नवीन अध्याय का श्री गणेश किया है।''

मैंने कहा, कितना अच्छा होता अगर यही श्रीगणेश कश्मीर की बजाय हैदराबाद से ही किया जाता। बहावलपुर, भूपाल, रामपुर, जावरा, चरखारी, जूनागढ़ के काले कारनामें कौन नहीं जानता? उस ओर से सर्वथा विमुख हो, टेहरी, फरीदकोट, कश्मीर को ही अपने कोपका भाजन बनाना मेरे खयाल में ठीक नहीं। कांग्रेस को रियासती मामलों में दखल देना ही है तो एक साथ सभी बड़ी–बड़ी रियासतों पर धावा बोल देना चाहिए। जवाहरलाल कश्मीर में, पटेल बड़ोदा में, राजाजी ट्रावनकोर–मैसूर में, सरदार प्रताप सिंह पटियाला में, हाफिज इब्राहीम रामपुर में, मो. आजाद भोपाल, आसफअली हैदराबाद में और डॉक्टर किचलू बहावलपुर में इस संघर्ष का नेतृत्व करें। आप अब्दुल्ला की वकालत तो करने बैठ गए परंतु आपने उसकी मांगों पर भी विचार किया? वह चाहता है कश्मीर नरेश पचास लाख रुपए लेकर रियासत उसके हवाले कर दें और कश्मीर में भी पाकिस्तानी हकूमत की स्थापना की जा सके (2) कश्मीर में हिंदी का कोई भी स्थान न हो। राज्य का सारा कार्य व्यवहार केवल उर्दू में ही हो। (3) मुसलमानों को प्रत्येक उपाय से तबलीग की खुली छुट्टी हो। (4) रियासत की 80 प्रतिशत नौकरियां अनपढ़ और उजड्ड मुसलमानों के लिए रिजर्व हों।(5) पुरुष के मुसलमान बन जाने पर उसकी औरत को भी मुसलमान ही समझा जाए यदि औरत मुसलमान बन जाए तो पुरुष को पति तभी माना जाए जब वह भी इस्लाम स्वीकार कर ले। (6) गौ हत्या की आम इजाजत हो। यह हैं शेख साहिब की मुख्य मांगें। अब तुम ही बताओ यदि जवाहरलाल या कांग्रेस के दवाब से महाराज अब्दुल्ला की यह मांगें स्वीकार करलें तो फिर देवभूमि कश्मीर को पाकिस्तान में बदल देवहत्या तथा गौहत्या के भीषण अपराध का अपराधी कौन?

दिल्ली में सदर बाजार का जो चौक है उसे बारह टूटी कहते हैं। इस चौक के पूर्वी घेरे में एक काफी बड़ा कुआं है। यह कुआं उस जमाने की यादगार है जब लंदन पर गोले बरसते थे। जापानी फौजें कौक्स बाजार तक बढ़ चुकी थीं और उनके दो बम कलकत्ता में भी गिर चुके थे। दिल्ली में सब जगह खाइयां पाट दी गई थीं। लोग गुजरते थे और आंखें फाड़-फाड़ कर इन खाइयों को देखा करते थे। वे खाइयां तो अपने आप ही भर गई, परंतु वह कुआं अब तक उसी अवस्था में सन् 42 के ब्लैक आउट की याद दिलाने को वहीं जमा बैठा है।

यह कुआं कमेटी ने बनवाया था, बिना वर्ण तथा जाति-भेद के इस कुएं पर सभी का अधिकार है। चौक के आस-पास में अधिकतर गरीब रहगड़ों के घर हैं। यह लोग कोई भी ऐसा काम नहीं करते जिनकी बदौलत इन्हें अछूत समझा जाए, परंतु स्वार्थ के अंधों को समझाए कौन। जो इन्हें मारता है उनको यह गले लगाते हैं, जो इनके लिए मरता है उन्हें यह अछूत समझते हैं। अमीरों की तो सब जगह मौज है, परंतु गरीब की जिंदगी हराम है। अमीरों के घर में तो यमुना माई स्वयं ही नालियों के रास्ते भागे-भागे आ विराजती है परंतु वे गरीब जिन्हें कमेटी के नल से पानी लेना होता है, उनकी तो मुसीबत ही है। छोटा सा नल, टूटी मरोड़ो तो सां....सां और बस! पानी का एक बूंद नहीं, गर्मी के दिन और भी मुसीबत। एक ही घड़े को भरने में घंटों लग जाते हैं, तिस पर यदि किसी तुअस्सबी सक्के ने नल के मुंह पर मश्क लगा दी तो बस फिर तो अल्ला अल्ला खैरसल्ला। गरीब बेचारे पानी कहां से भरें। कभी-कभी प्यास के मारे गरीब लोग इसी कुएं पर पानी भरने आ जाते हैं।

एक दिन शाम के लगभग पांच बजे होंगे मैं इसी कुएं के पास से गुजरा। दूर से ही मेरा माथा ठनका। वहां एक अच्छी खासी भीड़ थी। कान दबाकर एक ओर से निकल जाने की तो मुझे आदत नहीं। ज्यूं ही मैं मौके पर पहुंचा तत्काल मेरे कान में यह शब्द पड़े-''हम तुम्हें इस बाल्टी से पानी भरने नहीं देंगे, अगर पानी भरना ही है तो इस हमारे चमड़े के बोके से भरले।'' मैंने देखा एक मशटंडा-सा दुष्ट

कुएं का मानों चीफ मिनिस्टर बने खड़ा है और उसके सामने एक बेचारी अधेड़ उमर की रहगड़नीं सहमी सी खड़ी है। मुझसे तो रहा न गया। मैंने कहा–क्यूं बे, तुम्हें यहां बाल्टियों का इंस्पैक्टर बना कर किसने बिठाया। मेरे शब्द सुनते ही वह गुंडा आग–आग हो गया, आंखें क्रोध से भरकर बोला।''तुम कहां से आ टपके इसके हिमायती।''

लेकिन तुम किसी को पानी भरने से क्यों रोकते हो?

''इसकी बाल्टी गंदी है''–वह बुढ़िया बाल्टी मेरी ओर दिखाती हुई बोली–देखो जी, मैं घर से अच्छी तरह बाल्टी धो–मांज कर लाई हूं। मेरा हिंदू का धर्म, मैं इसके चमड़े का पानी कैसे पी लूं।''

वह मशटंडा फिर कड़कर बोला–नहीं पीती तो जाओ घर बैठो।

मैंने कहा–देखो जी! जरा सोच–समझ कर बात करो। कुआं तुम्हारे बाप का नहीं, सबका है। इसकी बाल्टी तुम्हारे चमड़े के बोके से लाख गुना बेहतर है। पाकिस्तान यहां नहीं बना सकते। पाकिस्तान यहां से अढ़ाई सौ मील दूर है जरा होश में बोलो–मैंने बुढ़िया की बाल्टी अपने हाथ में थामी और कहा–लो! मैं पानी भरता हूं जिसकी हिम्मत हो रोके।

वह गुंडा पीछे हटकर बोला–''तुम, हां तुम यदि चाहो तो भर सकते हो। यह कुआं हिंदू–मुसलमान का है, चमारों को पानी नहीं भरने देंगे।

उसके यह शब्द मेरे लिए एक खुला चैलेंज था। मैंने बाल्टी माई के हाथ में दी–मैंने कहा, ''माई !तुम पानी भरो और गुंडे को मैंने ललकारा–आओ, हिम्मत है तो रोक कर दिखाओ।''

वह गुंडा फिर आगे बढ़ा, बोला–यह कुआं चमारों का नहीं हिंदू–मुसलमान का है।

''जितने मुसलमान हैं इनमें से आधे पहले चमार थे। अगर एक चमार मुसलमान बनकर पानी भर सकता है तो वह हिंदू रहता हुआ भी पानी भर सकता है।'' –एक तरफ खड़े पोपले मुंह वाले लालाजी बोले–अरी बावली चमड़े के डोल से पानी भरने में हरज ही क्या है, चमारों से तो मुसलमान अच्छे ही होवें।

मुझे ऐसा लगा मानों किसी ने बड़े जोर से मेरी छाती में लात मार दी हो, उस माई ने कांपते हुए हाथों से बाल्टी कुएं में डाल ही तो दी।

अपनी कुछ भी पेश न जाते देख उस गुंडे ने फिर एक नया पैंतरा बदला–बोला–''अच्छा जी! तुम पानी भरो अभी तुम्हारा अपना चिरंजी पहलवान

ही तुम्हारी खबर ले लेगा। और थोड़ी देर में चिरंजी पहलवान मेरे सामने था। वह आते ही बोला"क्या बात है?" मैंने कहा पहलवान साहिब बात क्या है, यह बेचारी पानी भरना चाहती है और यह पाकिस्तानी गुंडा इसे परेशान कर रहा है। कहता है चमड़े के बोके से पानी भर ले, बाल्टी से पानी नहीं भरने दूंगा– यह कौन होता है रोकने वाला।

"लेकिन यह कुआं हिंदू–मुसलमान का है, चमारों को यहां पानी भरने की इजाजत नहीं।" पहलवान साहब बोले।

अब तो मेरी हिम्मत टूट गई। मैंने कहा पहलवान साहिब।! गजब है, सांई का एक सक्का गंदे से गंदा चमड़ा कुएं में डाल दे तब तो कुआं भ्रष्ट नहीं होता और इस बेचारी को धुली मंजी बाल्टी से भी पानी भरने का अधिकार नहीं।

"हम बहस नहीं चाहते–चमार यहां पानी नहीं भर सकता।" चिरंजी बोला–

"और अगर यही चमार मुसलमान बन जाए तो?"

"हां तब भर सकता है, चमार रहता हुआ नहीं भर सकता।"

मैं आगे कुछ कहना ही चाहता था। चिरंजी एकदम तैश में आ गया। लोगों को उसने हटाना शुरू कर दिया। माई की बाल्टी उसने एक तरफ फैंक दी। मैं ऐसे खड़ा था मानों पत्थर की मूर्ति बनाकर मुझे वहां गाड दिया गया हो। माई एकओर खड़ी सिसकियां भर रही थी और वह लीगी गुंडा सामने खड़ा व्यंगात्मक हंसी हंस रहा था। थोड़ी ही देर में वह औरत अपनी खाली बाल्टी ले अपने घर की ओर चल दी।

इस दुर्घटना से मुझ पर ऐसा वज्रपात हुआ, शहर का सारा कार्यक्रम छोड़ मैं घर की ओर चल दिया। घर पहुंचते दीपक जल चुका था। शांति ने कहा–रोटी खालो। मैंने कहा–भूख बिल्कुल नहीं, नींद आ रही है, सोऊंगा। मैं लेट गया, परंतु आंखों में नींद कहां। सारी रात करवटें बदलते निकल गई। कानों में चिरंजी पहलवान के वही शब्द गूंज रहे थे। चमार पानी नहीं भर सकता, मुसमलान हो जाने पर ही वह पानी भर सकता है और फिर रह रह कर मेरी अंतरात्मा से पुकार उठती अगर वह औरत और उस जैसे लाखों अभागे पानी के प्यासे तड़प–तड़प कर मर जाएं या प्राणों की ममता में चोटी कटवा विधर्मी बन जाएं तो फिर? हां तो फिर धर्मराज के इसी इंद्रप्रस्थ में पाकिस्तान की स्थापना का अपराधी कौन?

इंदौर से 22 मील उत्तर–पूर्व दिशा में देवास एक छोटीसी रियासत है। छत्रपति शिवाजी ने यह रियासत अपने दो सेनापतियों को उनकी सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप दी थी। उन दोनों सरदारों में बेहद प्रेम था, शरीर दो थे आत्मा एक थी, परंतु दुर्भाग्य! उनका सा प्रेम उनकी संतान को प्राप्त न हो सका। एक ही रियासत दो बराबर हिस्सों में बंटी है। छोटा सा केवल दस हजार की जनसंख्या का शहर आधा जूनियर कहाता है और आधा सीनियर।

जहां–जहां का दाना–पानी होता है, हर हीले चुगना ही पड़ता है। इन्दौर के भाई हरेन्द्रनाथ जी ने मेरी अंग्रेजी पुस्तक Historical Researches into Hindu mythology के छपवाने का देवास में प्रबंध किया था। भाग्य में जो कष्ट भोगना लिखा है वह तो हर हाल में भोगना पड़ता ही है। उस पुस्तक को छपवाने के सिलसिले में मैं लगभग 3 महीने देवास में रहा। मैंने तो बचने की बहुतेरी कोशिश की, परंतु आखिर वहां के लोगों को किसी न किसी प्रकार इस बात का पता चल ही गया कि मैं लेक्चर भी दे लेता हूं। जूनियर के लोग तो बहुत दब्बू और डरपोक हैं, अलबत्ता सीनियर में अच्छा जीवन प्रतीत होता है। छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन की कुछ–कुछ झलक सीनियर में मुझे अवश्य दीख पड़ी। प्रताप जयंती का अवसर था। श्री कोठारीजी, पालीवालजी, पूर्ण सिंहजी, भीमसिंह जी, मांगेलाल जोशी सभी पीछे पड़ गए। गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ा, जूनियर–सीनियर दोनों में भारत माता की कथा कहनी ही पड़ी।

मैं हिंदुत्व का परम भक्त हूं, यद्यपि मेरा हिंदू धर्म केवल हिंदुस्तान तक ही सीमित नहीं। हिंदू–धर्म का संदेश मनुष्य मात्र के लिए है। जो लोग हिंदू धर्म की तुलना इस्लाम, ईसाइअत अथवा किसी अन्य संप्रदाय से करते हैं मेरी दृष्टि में वे हिंदू धर्म के साथ घोर अन्याय करते हैं। यह दूसरी बात है कि आज हिंदू धर्म को संसार के सामने वास्तविक रूप में पेश नहीं किया जाता। हिंदू धर्म के विशुद्ध सिद्धांत इंसान को मुकम्मिल इंसान बना देते हैं। आज इस देश को मुकम्मिल इंसानों की ही आवश्यकता है, मैंने अपना जीवन हिंदू–धर्म के महानतम सिद्धांतों के प्रचार

तथा प्रसार में लगाया है। परंतु मेरा हिंदूधर्म किसी की उन्नति अथवा आजादी में बाधक नहीं। यही कारण है कि मेरी कथा में सभी विचारों के लोग नियमपूर्वक सम्मिलित होते हैं और अपने आपको इस स्थिति में पाते हैं कि वे सत्यासत्य का अनुशीलन कर सकें।

राष्ट्र निर्माण संबंधी मेरे परिमार्जित विचारों से कुछ एक बोहरा नवयुवक विशेष रूप से प्रभावित हुए। यह बोहरा लोग वास्तव में औदीच्य ब्राह्मण थे। आज तो मुस्लिम लीग के फेर में योगेंद्रनाथ मंडल और भीमराव अम्बेड़कर भी अपने को मुसलमान ही कहने लगे, फिर भला खोजों और बोहरों का तो कहना ही क्या। परंतु इन बोहरों में आज भी वे बुजुर्ग विराजमान हैं जो अपने को मुसलमान कहे जाना कदापि सहन नहीं कर सकते। इन लोगों का रहन-सहन, रस्मो-रिवाज मुसलमानों की अपेक्षा आज भी हिंदुओं से बहुत ज्यादा मिलता है। यदि धीरे-धीरे यह लोग हिंदुओं से दूर हटकर मुसलमानों के अधिक करीब होते जा रहे हैं तो इसमें हिंदुओं की ही उपेक्षावृत्ति का दोष है।

इन बोहरा नवयुवकों से मुझे बड़ा स्नेह है। मेरे से बात करके वे बड़े प्रसन्न होते हैं और उनके साथ स्वयं बातें करते हुए मुझे भी बड़ी खुशी होती है। मेरे बोहरा मित्र एक दिन बोले-पंडित जी! मेरा एक हिंदू दोस्त है, आजकल जरा मुसीबत में है। आप शायद उसको संकट से निकाल सकें, इसीलिए उसकी कथा सुनाने लगा हूं। आपके हिंदू नेता मुसलमानों पर यह अपराध लगाते हैं कि वे भोले-भाले हिंदुओं को बहकाते हैं परंतु मेरा तो खयाल है इतने हिंदू मुसलमानों द्वारा धर्मभ्रष्ट नहीं किए जाते, जितने कि स्वयं हिंदुओं द्वारा ही विधर्मी बनने पर मजबूर किए जाते हैं। मेरे मित्र की ही कहानी सुन लीजिए। लड़के का पिता है खंडेलवाल और माता है ओसवाल। बिरादरी ने शुरू में ही दोनों के विवाह को बुरा मनाया। खंडेलवाल इसलिए बिगड़े हैं ओसवालों में विवाह क्यों किया और ओसवाल इसलिए गरम हो रहे हैं कि खंडेलवाल से विवाह क्यों किया। इन दोनों मिया बीवी की तो कट गई, परंतु मुसीबत तो अब आ रही है। इनका लड़का काफी बड़ा हो गया है। पिछले साल उसने बी.ए. पास किया है। अब उसके विवाह का सवाल है। ओसवाल या खंडेलवाल दोनों में से कोई भी उसे अपनी लड़की देने को तैयार नहीं। बहुतेरी कोशिश की मगर कोई सुनता तक नहीं। अब आप ही बताइए क्या वह सारी उमर कुंवारा ही रहेगा। फिलहाल तो वह फौज में भरती हो ईराक चला गया है, परंतु

अगले साल वह लौट आएगा। फिर विवाह का सवाल पैदा होगा। इधर नीच से नीच हिंदू भी उसे अपनी लड़की देने पर रजामंद नहीं, उधर अच्छे-अच्छे मुसलमान उसे अपनी लड़की दे रहे हैं। मैं नहीं चाहता इतनी छोटी-सी बात पर उस मेरे मित्र को मुसलमान बनना पड़े। उसके मुसलमान बन जाने पर मुझे सबसे अधिक दु:ख होगा, लेकिन अगर सिर्फ विवाह के कारण वह मेरा मित्र मुसलमान बन गया तो आप ही बताइए पंडित जी महाराज! इतने अच्छे नवयुवक को धर्मभ्रष्ट करने के लिए अपराधी कौन?

मुझे सबसे अधिक मानसिक वेदना उस समय होती है जब मैं किसी हिंदू के मुसलमान बन जाने की खबर सुनता हूं। **हिंदू से मुसलमान बन जाने पर किसी आदमी के सिर पर सींग तो नहीं लग जाते, परंतु उस व्यक्ति के भीतर का विचार प्रवाह बिल्कुल बदल जाता है। हिंदू से मुसलमान बनते ही सबसे पहला परिवर्तन जो मनुष्य में होता है वह यह कि मनुष्य एक दम स्वदेशभक्त से परदेश भक्त बन जाता है। जो व्यक्ति देश के लिए स्वयं हंसते-हंसते न्यौछावर हो जाने को तैयार है, उसी आदमी के मुसलमान हो जाने पर फिर उस आदमी को देशभक्त बनाने के लिए जो-जो परेशानियां सहनी पड़ती हैं वह कांग्रेस के इतिहास से अच्छी प्रकार समझी जा सकती हैं।** इसी बात का मुझे दु:ख होता है अन्यथा मेरा हृदय तो इतना विशाल है कि यदि कोई व्यक्ति इस्लाम के सिद्धांतों का भली प्रकार से मनन करता है, उसमें ही सुख और शांति प्राप्त करता है, उसके मुकाबले का संदेश उपनिषदों, महाकाव्यों, ब्राह्मण ग्रंथों तथा भारतीय महापुरुषों के जीवनों में उसे कहीं प्राप्त नहीं होता और वह व्यक्ति बिना किसी प्रलोभन के, बिना किसी बाहरी दबाव के स्वेच्छापूर्वक आत्मोन्नति के लिए सच्चे हृदय से मुसलमान बनना चाहता है तो मैं पहला सख्श होऊंगा जो उस व्यक्ति को कंधे पर उठाकर मस्जिद तक छोड़ आए। परंतु ऐसा व्यक्ति आजतक तो मुझे मिला नहीं और आगे मिलने की संभावना नहीं। प्राय: लोग औरतों के प्रलोभन में, दंगे-फसाद में मारकाट से भयभीत

प्राणों के लोभ में तथा समाज के सताए हुए ही मुसलमान बनने पर मजबूर होते हैं।

उस दिन मैंने दैनिक पत्र में पढ़ा, इंदौर रियासत के 22 हजार बालाई इस्लाम की शरण में जाने को तैयार हैं। मेरे दिल पर धक्का-सा लगा, परंतु दूर दिल्ली में बैठकर मैं कर ही क्या सकता था। कुछ ही महीनों पश्चात् कार्यवश मैं इंदौर में था, रामबिलास तथा सोलंकी महोदय ने सांवेर में एक वृहद् यज्ञ का आयोजन किया था। मुझे भी उसमें निमंत्रित किया गया। यज्ञ के मौलिक सिद्धांतों में विश्वास रखता हुआ भी मैं विशाल पैमाने पर बड़े-बड़े यज्ञों के पक्ष में नहीं हूं तथापि इसी बहाने बालाई लोगों से चार बातें करने के लिए अच्छा अवसर जान मैं सांवेर पहुंच गया।

इंदौर रियासत काफी लम्बी-चौड़ी रियासत हैं, सांवेर इंदौर जिले का एक सब-डिविजन है। इस इलाके में लगभग पचास हजार ऐसे राजपूत रहते हैं जो किसी समय राजपूताने से भाग आए थे और यहां आकर खेती-बाड़ी तथा पशुपालन द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगे थे। यह लोग बड़े धर्मात्मा हैं। हिंदू धर्म के प्रति इनमें अगाध निष्ठा है। यह लोग बड़े मेहनती, सज्जन, ईमानदार तथा श्रद्धालु हैं, परंतु हिंदू लोग इन धर्मभक्तों के हाथ का दूध नहीं पीते। अब होता क्या है-हिंदू तो इनके हाथ दूध लेंगे नहीं इसलिए बीच में मुस्लिम दलाल आते हैं। वे इन बालाइयों से सस्ता दूध लेकर उसमें गंदे नालों का, चमड़े की मश्कों अथवा जिस किसी का भी चाहें पानी मिला कर मंहगे भाव लाला लोगों की दुकान पर जाकर बेचते हैं। दूध वही है, अपने हिंदू भाई के हाथ का शुद्ध दूध पीने से पंडित जी महाराज का धर्म भ्रष्ट हो जाता है परंतु मियां के हाथों का स्पर्श करते ही वह दूध लाला जी के लिए मानो गंगा जल बन जाता है। हिंदू तो इन गरीब लोगों का दूध लेंगे नहीं इसलिए मुसलमान एजेंट इन लोगों से मनमाने भाव लेते हैं। इन्हीं कष्टों से तंग आकर इन्हीं बालाइयों में से कुछ लोग मुसलमान हो गए। जो मुसलमान हो गए उनसे हिंदू परहेज नहीं करते। उन्हें कुएं पर भी चढ़ने से नहीं रोकते। उनके हाथ का दूध भी खुशी-खुशी पी जाते हैं। मुसीबत उन बेचारों की है जो इस कदर कष्ट उठाते हुए भी हिंदू धर्म के साथ श्रद्धापूर्वक चिपटे हुए हैं।

बालाई लोग मेरे पास आ अपने दुखड़े रोने लगे। मैंने कहा शहर में जाकर मैं इन हलवाईयों को समझाऊंगा और मैंने सचमुच इन हलवाइयों को समझाया भी बहुत। आखिर हलवाई सीधे बालाइयों से दूध लेने पर राजी हो गए। परंतु वाह रे धर्मावतारों तुम्हारी लीला। जिन हलवाइयों ने मुस्लिम एजेंटों द्वारा दूध लिया वह तो

तीन चार घंटों में ही बिक गया और जिन्होंने सीधे बालाइयों से दूध लिया वह रात के दस बजे तक वैसे का वैसा धरा रहा। बेचारे हलवाई भी कितने दिन तक खोया मारते रहते। मैं खुद लोगों के पास गया। बहुतेरा समझाया। हाथ पैर जोड़े। धर्म का वास्ता दिया। बंगाल और सिंध की घटनाएं सुनाई। मैंने कहा इन धर्म बंधुओं को परेशान करके पाकिस्तानियों की संख्या न बढ़ाओ। परंतु यह लोग नहीं माने। बेचारे दुकानदार भी बालाइयों से दूध लेकर कब तक अपने घर में इस्तेमाल करते रहते।

इंदौर में शर्मा जी के खादी स्टोर में बैठे इसी समस्या पर आंसू बहा रहे थे। शर्मा जी भी दु:खी थे, मेरी अंतरात्मा भी कल्प रही थी, चार पांच बालाई भी पास बैठे थे। वे अपने भावी कार्यक्रम का निर्णय मुझसे जानना चाहते थे। मंहगाई के दिन, बाल–बच्चों के पालन पोषण की समस्या, पशुओं का निर्वाह परंतु दूध का ग्राहक एक भी न–तो क्या फिर इन धर्मवीरों को मुस्लिम एजेंट की ही शरण लेनी पड़ेगी। आठ आने सेर का दूध क्या उनके पास पांच ही आने में बेचना पड़ेगा। शर्मा जी बोले, पाराशर जी! आप हिंदुओं के लिए इतने मरते फिरते हैं, आप ही बताइए अब यह बालाई तंग आकर मुसलमान बन जाएं तो इस हिंदू रियासत में पाकिस्तान की भूमिका बांधने के लिए अपराधी कौन?

गजब है सांई का, दुहाई है राम के नाम की, यू.पी. और बिहार में तो सैकंड लैंग्वेज के नाम पर प्रत्येक हिंदी पढ़ने वाले को उर्दू पढ़ना लाजमी है। परंतु पंजाब, सिंध, फ्रंटियर में उर्दू पढ़ने वालों के लिए हिंदी पढ़ना एक जबरदस्त गुनाह है। हिंदी प्रांतों में जहां उर्दू को प्रोत्साहन देने के लिए पानी की तरह रुपया बहाया जाता है, वहां पश्चिमी पंजाब तथा फ्रंटियर में हिंदी पढ़ाने वाले स्कूलों, पाठशालाओं की ग्रांट बंद कर दी जाती है।

गोरखपुर का नाम सभी ने सुना होगा। गीता प्रेस वालों ने गोरखपुर का नाम संसार के कोने–कोने में गुंजा दिया है। यह वह शहर है जहां आज भी अदालती भाषा हिंदी है। लेकिन अजब बात देखिए गोरखपुर के स्टेशन पर उतरते ही आपके

कानों में आवाज आएगी-उर्दू बाजार, जहां कोई उर्दू बाजार और जब आप तांगे में बैठ उर्दू बाजार पहुंचेंगे तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस बाजार में न तो आपको कोई उर्दू जानने वाला ही मिलेगा, न ही कोई वहां उर्दू का मदरसा ही और न ही कोई साईनबोर्ड ही उर्दू में मिलेगा। फिर भी न जाने क्यूं उस बाजार को उर्दू बाजार कहा जाता है।

इसी गोरखपुर जिले की बात है। एक स्थान पर मैंने हिंदी के पक्ष में बहुत जबरदस्त व्याख्यान दिया। मैं हिंदी का भक्त हूं, इसलिए कि यह वैज्ञानिक भाषा है। उर्दू कोई भाषा नहीं, हिंदी को आप फारसी लिपि में लिखिए बस वह उर्दू बन गई। उर्दू को तो कुछ हिंदू वकीलों तथा 'प्रताप', 'मिलाप', 'वीर भारत' ने ही जिंदा कर रखा है। खैर! मैं यहां उर्दू की कबर खोदने तो बैठा नहीं मैं तो एक आप बीती घटना पाठकों को सुनाने लगा हूं। जिस महाशय के यहां मैं ठहरा था वह वहां की म्यूनिस्पैलिटी के सदस्य थे। मैंने उनसे प्रेरणा की वे अपने स्कूल में प्रत्येक व्यक्ति के लिए हिंदी पढ़ना अनिवार्य कर दें। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया बोर्ड की अगली मीटिंग में वह इस प्रश्न को उपस्थित कर देंगे। मुझे संतोष हुआ। बोर्ड में कुल दस सदस्य थे। आठ हिंदू, दो मुसलमान, अतः यह प्रस्ताव पास हो जाना स्वाभाविक ही था। कुछ दिन पीछे मैंने अपने मित्र से उस प्रस्ताव के संबंध में पत्र द्वारा पूछताछ की। उक्त महाशय ने लिखा ''आपकी इच्छानुसार हिंदी संबंधी प्रस्ताव बोर्ड की मीटिंग में प्रस्तुत किया गया। परंतु आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आठ हिंदू सदस्यों में से पांच ने मेरे प्रस्ताव का विरोध किया। एक धर्मावतार तो उक्त प्रस्ताव पर आपे से बाहर होकर बोले- आपने यह प्रस्ताव पेश करके हमारी मातृ भाषा का अपमान किया है। हिंदी का पढ़ना अनिवार्य हो जाने पर मुसलमान भी इसे पढ़ेंगे। जिस भाषा ने ऋषि-मुनियों के श्रीमुख को पवित्र किया हम नहीं चाहते विधर्मी लोग उस भाषा का उच्चारण कर उसकी जन्मजात पवित्रता को नष्ट-भ्रष्ट करें। आज मुसलमान हिंदी पढ़ेंगे, कल रामायण महाभारत बांचेंगे, परसों वेद पढ़ने लगेंगे, हम इसे कदापि सहन नहीं कर सकते। अतः इसी आधार पर हम इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं। परिणाम यह हुआ कि तीन वोट पक्ष में और सात विरोध में। आपको मेरे पत्र से दुःख अवश्य होगा, परंतु हमारे ही प्रांत में, हमारे ही नगर में यदि हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति का प्रसार करने में असफल हुए हैं तो इस हमारी असफलता के लिए अपराधी कौन?

1919 से ही मेरी जन्मभूमि नकोदर में कांग्रेस का बड़ा बोलबाला रहा है। जंगे आजादी के प्रत्येक दौर में नकोदर के देशभक्तों ने बढ़-चढ़कर कुर्बानियां की हैं, परंतु देश के दुर्भाग्य के साथ मेरे शहर का भाग्य भी तो बंधा है। जब समूचे भारत में लीग का तूफान उठा मेरा नकोदर भला इस असर से कैसे अछूता बचा रहता। तीन मुसलमान जो कांग्रेस में थे, जो कभी कांग्रेस के प्रधान और प्रधान-मंत्री तक रह चुके थे, समय के फेर ने उनकी बुद्धि को भी फेर में डाल दिया। जमाने का रंग बदलता देख वे भी बदल गए। कांग्रेस को छोड़ सबके सब लीग में जा मिले। जिस नकोदर की गलियों में नित्य प्रति '**वंदेमातरम्**' और '**भारत माता की जय**' के जयकारे गूंजा करते थे, उन्हीं गलियों में '**अल्लाहू अकबर**' की सदाएं गूंजने लगीं। जिस पवित्र पुरी के दरोदीवार पर क्रांति चिरायु हो का विजय-घोष अंकित था, आज उन्हीं ईटों पर काले तारकोल ''मुस्लिम है तो मुस्लिम लीग में आ'' लिखा मिलेगा। हाय दुर्देव ? क्या 'इंकलाब जिंदाबाद' का यही मतलब था ?

उस दिन अहले-इस्लाम के कुल तीन छोकरे ठेठ, हिंदू मुहल्ले में आकर खुले आम गालियां निकाल गए, परंतु एक हिंदू भी तो घर से बाहर नहीं निकला। इस घटना के तीन चार दिन पीछे मैं नकोदर पहुंचा, बात अभी गरम थी, मैंने पूछा-भाई टेकचंद ! यह उल्टी गंगा कब से बहने लगी ? टेकचंद मेरे बाल सखा हैं, बारहवीं जमात तक एक ही सीट पर बैठे इकट्ठे पढ़े हैं। टेकचंद ने नगर हिंदू नवयुवकों का अच्छा संगठन किया है। संघ का संचालन भी टेकचंद के ही हाथों में है, मैंने कहा भाई टेकचंद ! आखिर यह तुम्हारे अखाड़े कब काम आएंगे। टेकचंद बोले-श्याम ! हमारी अपनी कमजोरियां ही अपनी शत्रु हैं। पास में ही एक अच्छा खासा जवान बैठा था, उसकी ओर संकेत करते हुए टेकचंद बोले यह देखिए हमारा शेर। गुंडे जिसका नाम सुनते ही थर्रा उठते हैं-कुछ दिन हुए हमारे एक स्वयं सेवक को अकेले पा कुछ लीगी गुंडों ने उसे घर में बंद कर खूब मारा-पीटा। आखिर यह खबर हमारे तक भी पहुंची। यह हमारा महावीर अकेला ही उस मुहल्ले मे जा गर्जा। किसकी मजाल थी जो इसके मुकाबले पर आए। मुहल्ले भर में हाहाकार मच गया। पचासों

फट्टर हुए। जो सामने आया डंडों की मार का प्रसाद पाया। पचासों गुंडों ने इसे एक साथ घेरा, परंतु मुंह की खाई। अपनी वीरता के जौहर दिखा यह हमारा सूरमा अपने साथी को राजी खुशी वहां से निकाल लाया।

और इन मुसलमानों की आदत तो आप जानते ही हैं। सबसे पहले खुद ही ताकत के घमंड में शरारत शुरू करते हैं, इक्के-दुक्के पर वार करते हैं, पीठ में छुरियां मारते हैं, राह जाती बहूबेटियों पर आवाजें कसते हैं। जहां तक बस चलता है विरोधी को चोट पहुंचाते हैं और अंत में सच्चे होने के लिए थाने में जा रोने-पीटने भी लगते हैं। 'हाय लुट गए', 'हाय मर गए', 'हाय मार दिए गए', 'हाय लूट लिए गए' की दुहाई मचाते हैं- और हिंदू कभी पहल तो करेगा नहीं,जब पानी ही सर से गुजरने लगेगा तो आत्मरक्षा के लिए दो-चार हाथ-पैर मारेगा और यदि इस संघर्ष में पिट भी गया तो चुप-चाप पट्टी बांधकर घर के भीतर जा लेटेगा। उस दिन नकोदर में भी यही कुछ हुआ। पुलिस ने तो अपनी कानूनी कार्यवाही करनी ही थी। हमारे शेर को हिरासत में ले लिया गया। अगर ऐसा शूरवीर किसी दूसरे दल में होता तो उसे इसकी बहादुरी के पुरस्कार स्वरूप विक्टोरिया क्रास दिया जाता, परंतु यहां तो यह हाल था कि मैं पचासों धनिकों के पास फरियाद लेकर गया लेकिन कोई इसकी जमानत तक देने को तैयार न हुआ। मैं कितने ही लोगों से मिला, किसी ने भी तो सहानुभूति प्रकट न की। उल्टे वे-वे बातें सुननी पड़ीं, श्याम! कि क्या बताऊं। एक बोला-अजी रहने दो साले को हवालात में पकी-पकाई रोटी तो मिलेगी। दूसरा बोला-अजी इसने ऊधम भी तो बहुत मचा रखा था। तीसरा बोला-हां भाई उधम क्यों न मचाता खून भी तो नया है। चौथा बोला-अब तक तो हिंदू-मुसलमान भाई-भाई की तरह रहते थे। अब तो ऐसे सूरमे पैदा हो गए। सिर पर पगड़ी बांधकर फिरा करो। पांचवां बोला-अजी जब से यह संघ चला तभी से झगड़े भी चले, नहीं तो बड़ी आराम से कटती थी। सभी एक साथ रहते थे। क्यों भाई नत्थू! कभी पहले भी तुम्हारी होश में हमारे इस शहर में हिंदू-मुसलमान में मारपीट हुई और नत्थू बोला-अजी अभी देखा ही क्या, अभी तो संघ चला ही है आगे देखना क्या गुल खिलेंगे। अब तो इस शहर की खैर नहीं। यह लोग तो भाई, शहर की ईंट-से-ईंट बजाकर ही दम लेंगे।

आखिर खुद अपनी जमानत पर इसे छुड़ाकर लाया। अब आगे का तमाशा सुनिए। घर में घुसा ही था कि बाप ने चार तमाचे जड़े ''अबे उल्लू के पट्ठे हमें इस शहर में रहने देगा कि नहीं। दीखता नहीं मुसलमानी मुहल्ले में तो हमारा घर है।

इन्हीं से बैर बांध कितने दिन जी सकेंगे। आया है बड़ा सूरवीर। लिया फिरता है संघ को, अरे बावले हमने किसी के घर खाने जाना है। जी ते जहान, हम रहेंगे तो स्वराज भी देखा जाएगा। बच्चा, तू तो घर की ईट-से-ईट बजाकर ही दम लेगा। फिर किसी ने काम नहीं आना। चढ़ जा बेटा सूली, कहने वाले तो बहुत होते हैं। उस दिन से यह घर नहीं गया। अगले सोमवार पेशी है। कोई हिंदू वकील फीस लेकर भी इसकी पैरवी के लिए तैयार नहीं। अदालत में जाकर गवाही तक देने की किसी की हिम्मत नहीं, वैसे दूकानों पर बैठे सभी बातें मारते हैं, जिन लोगों ने सब कुछ अपनी आंखों देखा वे भी तो सच्ची-सच्ची बात अदालत में कहने को तैयार नहीं। मुखालफों के हौसले बेहद बुलंद हैं उनके अपने वकील हैं और 70 के लगभग गवाह हैं। अगर हम इसका उत्साह बढ़ाते तो इसके दोस्त कितने ही और ऐसे नौजवान पैदा होते! जब इसी की यह दुर्दशा है तो दूसरा अपनी ऐसी दुर्दशा कराने क्यों इस आग से खेले। यह तो है हमारे अपने लोगों की हालत ऐसी अवस्था में अगर तीन गुंडे हमारे ही घर में आकर हमें लताड़ गए, यदि वह लोग स्कूल में जाते हमारे बच्चों को तंग करते हैं, अगर यही गुंडे नूरमहल की सड़क पर जमा हो हमारी बहूबेटियों पर आवाजें कसते हैं तो आप ही बताइए उन गुंडों के हौसले इतने बुलंद करने के अपराध का अपराधी कौन?

हैदराबाद में तो मैं आज तक पहुंच ही नहीं सका तथापि हैदराबाद से दूसरे नंबर पर इस्लामी रियासत बहावलपुर में मैं अनेक बार गया हूं। पाकिस्तानी हकूमत का अगर किसी ने नमूना देखना है तो बहावलपुर में जाकर देख सकता है। बहावलपुर का नाम बदलकर बगदादुल्जदीद रख दिया गया, सभी शहरों के पुराने नामों को अहमदपुर शरकिया, रहीमयारखां इत्यादि नामों में बदल दिया। प्रत्येक सरकारी नौकर के लिए तुर्की टोपी पहनना लाजमी है। शासन सभा में एक भी हिंदू वजीर नहीं। प्रत्येक प्राचीन मंदिर को किसी-न किसी बहाने से मस्जिद में बदलने का

षड्यंत्र दिन-रात जारी है। सरकारी नौकरियों से तो हिंदुओं को जवाब मिला ही था अब धीरे-धीरे उनकी परंपरागत तिजारत को भी नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। सचमुच मैं तो बहावलपुर के बचे-खुचे हिंदुओं को धन्य समझता हूं जो इतने भयंकर अत्याचारों को सहते हुए भी हिंदू माता के साथ चिपटे हुए हैं।

लैक्चरों पर तो रियासत में कड़ी बंदिश है। परंतु कथा की छूट है क्योंकि नवाब साहिब अच्छी तरह जानते हैं कि पंडित जी महाराज की कथा में सिवाय "धर टका" के और तो कुछ होता नहीं। सौभाग्य से हमारा भी कथा प्रणाली से ही अधिक स्नेह है और वह कथा कैसी होती है अधिकांश पाठक इससे भलीभांति परिचित हैं। वैसे तो रियासत की आर्य समाज में कोई जान नहीं, परंतु जिन दिनों मैं बहावलपुर में था उन दिनों वहां के आर्य समाज की बागडोर ऐसे भद्र पुरुषों के हाथ में थी जिनके दिल में सच्चे अर्थों में समाज, देश और जाति की निःस्वार्थ सेवा की लगन है। रियासती वायुमंडल में रहते हुए, मैं समझता हूं, वे लोग अपनी सामर्थ्य से बढ़कर समाज सेवा करते थे। समाज के मंत्री श्रीमुरलीधर जी बजाज तो घंटों मेरे पास बैठ देश और जाति के भविष्य पर आंसू बहाते। रियासत में हिंदुओं में किस प्रकार संघशक्ति पैदा की जाए, दिन-रात उन्हें यही एक चिंता थी।

एक दिन बाबू मुरलीधरजी बहुत घबराए हुए मेरे पास आए। मैंने कहा, क्यों भाई मुरलीधर, आज घबराहट कैसी? बोले-पाराशर जी क्या बताएं, यहां तो रोज ही कोई-न कोई प्रपंच रहता ही है, किस-किस को समझाया जाए। अजब परेशानियां हैं। एक लड़की है सोलह-सत्रह वर्ष की। उसके बाप ने 13 सौ रुपए में उसे बेच दिया या विवाह दिया, आप कुछ भी समझ लें। मुश्किल यह है कि जिस लड़के से विवाह का नाटक रचाया गया वह गूंगा है, बहरा है और पागल है। लड़की बड़ी सुशील और पढ़ी लिखी है। अब लड़की का तो जीवन नष्ट हुआ न? श्वसुर महाशय की पुत्र-वधू पर बुरी दृष्टि है। मानों 1300 रुपए देकर लड़के के बहाने स्वयं अपने लिए ही उन्होंने उस लड़की को पत्नी के रूप में खरीदा हो। श्वसुर महाशय 60 से कम क्या होंगे। लड़की दुःखी है। उसका दुःख उसके कहे बिना ही हर कोई समझ सकता है। घर में दूसरी कोई औरत नहीं। आप ही बताइए बेचारी पर क्या बीतती होगी। कल हम चार पांच आदमी मिलकर श्वसुर महोदय के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना की कि वे अपनी पुत्रवधू के जीवन पर तरस खाएं। हम उसका 1300 रुपया भी वापस दे रहे थे। समाज में अच्छे-अच्छे खानदानों के कई नवयुवक उस अबला

से विवाह करने को तैयार हैं। परंतु श्वसुर महोदय तो लट्ठ लेकर हमें मारने को दौड़े-''तुम मेरी पुत्रवधू को वरगला रहे हो। मैं तुम्हारी नीचता नहीं चलने दूंगा। कल अदालत में तुम्हारे खिलाफ दावा दायर कर दूंगा''-मुसलमानी रियासत है। यहां अजब-अजब कानून हैं। रियासत खुद इस ताक में रहती है हम किसी न किसी तरह किसी मुकदमे मे फंसे सही। अब आप ही बताइए-पाराशर जी! उस लड़की का क्या बने। यह दुष्ट रजामंदी से तो उसे दूसरे विवाह की इजाजत न देगा। उसकी रजामंदी के बिना मौजूदा कानून हमें कुछ करने नहीं देता। लड़की सारी उमर यूं तो बैठी न रहेगी। कल अगर वह पास में ही किसी मुसलमान के घर बैठ जाए तो आप ही बताइए इस हिंदू कौम की नाक पर दिनरात छुरी चलाने के लिए अपराधी कौन?

यहां एक ही नहीं एक दो तो रोज ही ऐसे केस हो जाते हैं। एक दूसरे हलवाई महाशय हैं 70 वर्ष के हो गए। मुंह में दांत एक नहीं। तीन हजार में एक 13 वर्ष की छोकरी ब्याह लाए। उस दुष्ट को बहुतेरा समझाया-मूर्ख! यह लड़की तो तेरी पोती समान है। काहे को मनुष्यता पर कलंक का टीका लगाता है। अच्छा है इसे अपनी पोती के समान अपने हाथों किसी नवयुवक से ब्याह दे। लाख समझाया नहीं माना-बोला, मैं तुम आर्यो की सब कारस्तानियां जानता हूं, तुम इस लड़की को मुझसे छीनना चाहते हो, याद रखो-कुत्ते भले ही खा जाएं, तुम्हें खाने नहीं दूंगा।'' और इस घटना के तीसरे ही दिन वह लड़की दस हजार का जेवर लेकर पास में चार दुकानें छोड़कर दर्जी के यहां बैठ गई। वह दर्जी मुसलमान था। अब लाला जी क्या कर सकते थे, मन मसोस कर बैठ गए। पुलिस ने भी कुछ मदद न की, सनातन धर्म वालों ने भी ध्यान न दिया। आज सुबह रोते-रोते मेरे पास घर पर आया, परंतु इस अवस्था में मैं क्या कर सकता था। मैंने कहा-लाला साहिब! आप ही तो कहते थे कुत्ते ही खा जाएं, किसी हिंदू को खाने न दूंगा'' अब रोते काहे को हो-कुत्ते मजे में खा रहे हैं, पास बैठे दिन-रात देखते रहिए।

एक ओर लड़कियों का यह हाल है, दूसरी ओर गरीब लड़कों का बिना पैसे विवाह होना मुश्किल। अभी कुछ दिन की बात है, कॉलेज का एक लड़का था, फीस नहीं दे सका। उसके पास भी कुछ न था। कई दिन बेचारा मारा-मारा फिरा, किसी हिंदू ने बात नहीं सुनी। मीर साहिब ने चुपचाप आखिरी दिन 60 रुपए प्रिंसीपल को उस लड़के के हिसाब में भेज दिए। अगले दिन एक फौजी अफसर ने अपनी लड़की उसे औफर की। आज वही दीनानाथ अब्दुल रहमान बना फिरता है।

एक ही तो नहीं अनेक मुसीबतें हैं।, आपको कहां तक सुनाऊं? पंडित जी महाराज! यहां तो कोई ही ऐसा विरला दिन जाता होगा जिस दिन एकाध हिंदू मुसलमान न बना लिया जाता हो। अभी दस दिन हुए एक अच्छे, संभ्रांत कुल का हिंदू अपने अच्छे खासे परिवार के समेत मुसलमान बन गया। हमने उसे वापस लाने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन कठिनाई तो यह है कि एक बार मुसलमान बन कर फिर कोई हिंदू बन सकता ही नहीं। यहां कानून ही ऐसा है।

मैंने पूछा–मुरलीधर, लेकिन वह परिवार धर्म–भ्रष्ट हुआ क्यूं।

पंडित जी महाराज! आप यह तो अच्छी तरह समझते ही हैं इस लड़ाई में बने थोड़े बिगड़े बहुत, विशेष करके इस रियासत में जहां कंट्रोल की आड़ की आड़ में हिंदुओं का सब प्रकार का बिजनैस बर्बाद कर दिया गया। कुछ वर्ष हुए आर्थिक संकट से परेशान हो, उस आदमी ने एक लाला के पास 800 में मकान गहने रख दिया। वह 800 बढ़ता–बढ़ता बारह सौ हो गया। दिन बदले नहीं। वह आदमी रुपया नहीं दे सका। बनिए को मकान हथियाने का मौका मिला। उस दुष्ट ने उस भले मानस को बहुत परेशान किया, क्योंकि वह नीच अपने रुपए के बदले में उसका मकान लेना चाहता था, लेकिन उसे मकान देकर परिवार सहित वह रहता कहां। उसने बहुत हाथ पैर जोड़े परंतु वह शाइलौक तो माना नहीं।

अब यहां की एक और मजेदार बात सुनिए–एक हैं मीर साहिब, हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज। बड़े दीनदार, बड़े मिलनसार और बड़े चालाक। उन्होंने एक फंड खोल रखा है, जिसमें प्रत्येक मुस्लिम अफसर अपनी आमदनी का दस प्रतिशत दान देता है और लोग भी इस फंड में काफी रुपया देते हैं। लगभग दस लाख फंड में जमा हैं। यह लोग हमेशा ऐसे दीन–दुखियों की टोह में रहते हैं। उस आदमी की कहानी सुनते ही अगले दिन मीर साहिब ने 1200 रुपए उस बनिए को देकर उस घर गृहस्थी का पिंड छुड़ाया। यह भी इस्लामी तबलीग का एक बेहतरीन ढंग है और इस रियासत में ऐसा ढंग बहुत जोरों पर है। मीर साहिब ने तो उसे मुसलमान नहीं बनाया परंतु मीर साहिब के इस उपकारी कार्य से उनके प्रति वह हिंदू आकर्षित जरूर हुआ और धीरे–धीरे स्वयं ही उनके एजेंटों के चक्कर में फंस गया। वह बनिया जिसने 1200 लिया, बहुत अमीर आदमी है, दस–बारह उसकी इमारतें हैं, अगर वह अपने धर्म बंधु को मुसीबत में देख उसके नन्हे–नन्हे बच्चों पर तरस खा अपना रुपया छोड़ देता या किन्हीं भले दिनों तक इंतजार करता तो आज वह

परिवार हमारे हाथ से काहे को जाता। ऐसे ही स्वार्थांधों ने तो हमें यह दिन दिखाए जब कि रियासत में कुल 10 प्रतिशत हिंदू शेष रह गए और अगर इसी रफ्तार से धीरे-धीरे यह 10 प्रतिशत भी खत्म हो जाएं तो आप ही बताइए इस हमारे सर्वनाश के लिए अपराधी कौन?

जिन्ना के पाकिस्तानी स्टंट के प्रचार से इतना लाभ तो जरूर हुआ है कि मुसलमान जो पहले प्रत्येक अवस्था में बाहर झांका करते थे अब उन्होंने कुछ-कुछ भीतर ताकना भी सीखा है। हिंदुओं के मुख्य-मुख्य तीर्थों के पास ही उन्होंने भी अपने तीर्थ रच लिए हैं। इन अपने पवित्र स्थानों को वे 'शरीफ' कहके पुकारा करते हैं जैसे कलियर शरीफ, अजेमर शरीफ, विहार शरीफ। पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब शरीफों की डिग्री बड़ी तेजी से बहुत शहरों को प्रदान की जा रही है। बटाला शरीफ, कादियां शरीफ। अब तो यह तरीका बन गया है कि जहां फरजिंदाने तौहीद की 56 प्रतिशत संख्या हुई झट उस शहर को शरीफ की डिग्री अदा कर दी गई।

ऐसे ही भाग्यशाली शहरों में बहावलपुर रियासत का उच्च नगर भी है। इसे भी उच्च शरीफ कहते हैं। मैं स्वयं तो उच्च नहीं गया, परंतु बहावलपुर में कुछ उच्च के शरीफ लोग मिले थे। मैंने पूछा-कहो भाई! उच्च में तो राम-राज है। बोले-हमारे यहां पूरे पचास घर स्वर्णकारों के हैं। आखिर स्वर्णकारी में क्या बुराई है, जो हिंदू उनके घर का खाते नहीं। हिंदू की तो माया ही अद्‌भुत है, धुले हुए कपड़ों से उसे प्रेम है, धोबी से उसे बैर है। सिले हुए चमड़े के बूट में उसकी शान है, परंतु उस बूट को बनाने वाले को वह नीच समझता है। बुने हुए कपड़े तो बढ़-चढ़कर पहनेगा परंतु कपड़े बुनने वाले के हाथ नहीं छुएगा। विवाह शादी पर गहने तो वह जरूर बनवाएगा, बिना गहनों के विवाह करने से उसकी नाक कट जाती है परंतु गहने बनाने वाले को वह नीच समझता है। जिन लोगों का समाज को कुछ भी लाभ नहीं, उन्हें तो उसने सिर पर चढ़ा लिया और जिनके सहारे यह समाज खड़ा है उनकी उसने जड़ें काटीं।

और इस हिंदू समाज का ढोंग तो देखिए, स्वर्णकारों के यहां का सूखा अन्न तो लेंगे परंतु पका हुआ नहीं लेंगे। मुसलमान के हाथ की डबल रोटी खा लेंगे, परंतु हिंदू स्वर्णकार के हाथ की सिंगल रोटी नहीं खाएंगे। अपने प्रति धर्माचार्यों के इसी दुर्व्यवहार को देख शहर के सभी स्वर्णकारों ने धर्म के ठेकेदारों को अल्टीमेटम दे दिया।'' अगर हम हिंदू हैं तो आप बताईए हमारे हाथ का खाना आप क्यों नहीं स्वीकार करते? हमारे में कोई दोष हो तो हमें बताया जाए ताकि हम उन दोषों को दूर करने की कोशिश करें। हमें बताया जाए कि हम हिंदू हैं अथवा नहीं? यदि आप हमें हिंदू ही समझते हैं तो आप हमारे यहां का शुद्ध पवित्र भोजन ग्रहण कीजिए, यदि आप ग्रहण नहीं करेंगे तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम हिंदू नहीं। फिर हमें अधिकार होगा कि हम इस धर्म को, जो मनुष्य को मनुष्य से हटाता है, जो एक निर्दोष, सदाचारी, ईमानदार को, दूसरे मूर्ख उजड्ड निरक्षर भट्टाचार्य के मुकाबले पर नीच समझता है, त्याग दें।''

चाहिए तो यह था कि उन लोगों के कहे की लाज रखी जाती और इस छूतछात को मिटा दिया जाता, परंतु उन बेचारों की उस बात पर विचार तक न किया गया- और उसका परिणाम जो होना था हुआ। वे सब-के-सब स्वर्णकार मुसलमान बन गए। आज उन्हीं का शहर में दौरदौरा है। वे धनी हैं, जमीनों-जागीरों वाले हैं, जो लोग पहले उन्हें नीच समझते थे आज वे ही उनके आगे जाकर नाक रगड़ते हैं। जब तक यह लोग हिंदू थे तब तक हमारे उच्च में सचमुच रामराज था, अब यदि वहां इस्लाम राज है तो इस इस्लामराज को वहां स्थापित करने का अपराधी कौन?

''पंडित अब्दुलगनी शास्त्री, काव्यतीर्थ, बी.ए.।''

यह शब्द पढ़ते ही दिल पर एक चोट सी लगी। पंडित और अब्दुलगनी दोनों चीजें साथ-साथ तो चल नहीं सकतीं। वास्तविकता जानने के लिए मैं उतावला हो उठा-आखिर एक दिन समय आ ही गया, शास्त्रीजी से साक्षात्कार हो ही गया-''नमस्कार शास्त्रीजी महाराज''- ''आदाबअर्ज पंडितजी साहिब''-''मैं

श्रीमान् जी से एक ऐसी शंका का समाधान करने आया हूं, मुझे तो जिसके पश्चात् बड़ी ही शांति मिलेगी, शायद आपको दु:ख हो।''

''आप मुझसे यह प्रश्न पूछने आए हैं कि मैंने अपने नाम के साथ पंडित क्यों लगा रखा है?''

''नहीं! मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि आपने अपने नाम में पंडित के साथ अब्दुलगनी क्यों लगा रखा है?''

''इसलिए क्योंकि मैं जन्म से ब्राह्मण हूं।''

''मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आज तक भी आपके अंदर ब्राह्मणत्व का स्वाभिमान है, परंतु क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आप अब्दुलगनी कब से बने?''

''यह गुजरे हुए जमाने की कहानी, अच्छा है आप इसको याद न ही कराएं।''

''मैंने जानने का हठ किया''–शास्त्रीजी बोले, तो लीजिए सुनिए– मैं हूं रहनेवाला गुरदासपुर का। पिता का देहांत बचपन में ही हो गया। मां ने बड़ी मुसीबतों से पढ़ाया–लिखाया। मैंने शास्त्री पास किया। एक दिन मैंने समाचार–पत्र में पढ़ा सनातन धर्म हाई स्कूल में पंडित की जगह खाली है। मैं स्वयं मैनेजर के पास पहुंचा, लेकिन मुझे निराशा हुई, मैनेजर बोला–हमें उस शास्त्री की जरूरत है जो अंग्रेजी भी पढ़ा हो।

मेरे दिल पर चोट–सी लगी, परंतु मैंने हिम्मत नहीं हारी। साधारण सी ट्यूशन लेकर मैं बी.ए. की तैयारी करने लगा और कुछ ही वर्षों में मैं ''पंडित वेदमित्र बी.ए. शास्त्री, काव्यतीर्थ'' बन गया। मुझे पता लगा एक आर्य हाई स्कूल में संस्कृत–अध्यापक का स्थान खाली है। मैं मैनेजर से मिला, वह बहुत खुश होकर बोला– हम आपको 35 रुपए मासिक देंगे। अपर मिडिल क्लासिस को आपने हिंदी–संस्कृत पढ़ाना होगा।

मैंने कहा–बाबूजी! सेवा तो जो मुझसे हो सकेगी करूंगा परंतु इतना तो ध्यान कीजिए। थर्ड मास्टर साहिब केवल बी.ए. हैं वे 75 रुपए पाते हैं और मुझे काम भी उनसे ज्यादा करना होगा और मेरे पास उपाधियां भी उनसे अधिक हैं– इस मंहगाई के जमाने में क्या 35 रुपए में मेरा गुजारा हो भी सकेगा।

''होगा या नहीं, यह सोचना हमारा काम नहीं। आपको 35 रुपए मंजूर हों तो काम पर आ जाइए।''

''मैंने कहा–बाबूजी! हम घर में पांच प्राणी हैं। इतना तो आपको खयाल होना चाहिए। अधिक न सही थर्ड मास्टर के बराबर तो मेरा दर्जा मानिए। मैंने आखिर कौन–सा अपराध किया। क्या मेरा यह अपराध है कि मैं संस्कृत पढ़ाऊंगा और वह अंग्रेजी। आप लोग तो संस्कृत के बहुत भक्त हैं, इस देवभाषा का उद्धार चाहते हैं, तो क्या यह बातें केवल लोगों के जजबात को भड़काने के लिए ही सभा–सोसायटियों के मंच पर से बार–बार कही जाती हैं....

मैंनेजर साहिब बीच में ही बोल पड़े–''देखो भाई तुम यहां नौकरी की दरखास्त करने आए हो न कि उपदेश करने। हमारा जो ग्रेड है हम उसी पर चलेंगे। आपको 35 रुपए ही मिलेंगे, नहीं गुजारा होता तो फालतू टाईम में ट्यूशन कर सकते हो।''

आखिर 35 रुपए पर ही झख मारनी पड़ी। दस से पांच तक स्कूल में पढ़ाता, फिर आप जानते हैं धर्म–स्कूल के पंडित–संस्कार भी मुझे ही निबटाने पड़ते और पंडित को जो ट्यूशन में मिलता है वह तो आप जानते ही हैं। अंग्रेजी ट्यूशन के पच्चास तो हिंदी–संस्कृत ट्यूशन के पांच। आखिर ऐसे कब तक चलता। रोग ने घर में आ डेरा जमाया। हवन में अन्य घरों में सेरों घी आग में डाला जाता, मेरे घर में रोटी चुपड़ने तक को घी न था। मां बीमार पड़ गई। इलाज के लिए पैसे तक पास न थे। बड़े–बड़े आदमियों के दर तक पहुंचा, किसी ने ध्यान तक न दिया–मां चल दी, पत्नी सूखकर कांटा हो गई। बच्चे हड्डियों का पिंजर बन कर रह गए। उनका दु:ख मुझसे देखा न गया– और आज मैं यहां हूं। इस जमायते रिसर्च विभाग का सुपरिन्टेंडेंट हूं। उन लोगों को मेरी चिंता न थी,उन्हें तो अपने ग्रेड की रक्षा के लिए मर मिटना था। आज यहां मुझे पांच सौ रुपये मासिक वेतन मिलता है। यह मकान, बिजली, पानी सब फ्री है। हिंदू–समाज के प्रति चाहे मेरी जो भावनाएं हों परंतु हिंदूधर्म के उच्चतम आदर्शों के प्रति आज भी मेरे हृदय में प्रेम और श्रद्धा है। अलबत्ता आपको मेरे वर्तमान बाह्य–स्वरूप को देखकर दु:ख अवश्य होगा, परंतु आप जाइए उन समाज के चौधरियों, संस्कृति के उद्धारकों, देव–वाणी के प्रचारकों के पास और पूछिए उन्हें, महाशय! धर्म मित्र को अब्दुलगनी बनाने के अपराध का अपराधी कौन?

''क्यूं भई तांगे वाले एक बात पूछूं बुरा तो न मानोगे।''

तांगे वाला मुंह से तो कुछ न बोला, लेकिन जरा गरदन मेरी तरफ मोड़ कुछ ऐसी नजर से उसने मेरी ओर देखा कि बोलने से भी कुछ ज्यादा बोल दिया। मैंने पूछा–टांगे वाले! तुम्हारा नाम क्या है। ''अब्दुलगफूर''–लेकिन तुम देखने से तो अब्दुलगफूर लगते नहीं।

''फिर जो कुछ लगता हूं वही कह दीजिए।''

मैंने कहा–भाई! तुम तो देखने में बिल्कुल हिंदू लगते हो।

''इसमें शक ही क्या है, महाराज! हिंदू तो हम हैं ही अभी तक भी हमारे सगे संबंधी सब हिंदू ही हैं।''

मानो उसके पूर्व–संस्कार एक दम चेत गए हों– वह फिर बोला मैं अपनी मरजी से मुसलमान नहीं बना, मुसलमान बनकर जीने में मुझे कोई खुशी नहीं।

''परंतु तुम मुसलमान बने क्यूं?''

'' तो क्या इसमें मेरा दोष है? हम लोग चमार हैं, महाशय जी! लेकिन चमार का काम तीन पुस्त से नहीं किया। मेहनत–मजदूरी से अपना पेट पालते हैं।''

''लेकिन अगर तुम चमार का काम करते भी तो इसमें बुराई क्या है। अगर चमड़े की चीजें बनाना बुरा है तो चमड़े की बनी हुई चीजों का इस्तेमाल करना भी बुरा है और अगर चमड़े के बूट पहनना, घरों में चमड़े के बक्स रखना, घड़ियों में चमड़े के तस्में बांधना अच्छा है तो निश्चय ही चमार का स्थान सोसाइटी में उन चीजों का प्रयोग करने वालों की अपेक्षा कहीं अच्छा है।''

''लेकिन सब लोग तो आप सरीखे विचार के नहीं। यदि सबके विचार ऐसे ही हाते तो आज हम लोगों को यह दिन काहे को देखने पड़ते।''

लेकिन तुम पर मुसीबत क्यों पड़ी?

''महाराज! मेरा अच्छा खासा परिवार है। बड़ी मेहनत करके मैंने चार पैसे जमा किए। सोचा मेहनत–मजदूरी कब तक चलेगी, मैंने एक टांगा–घोड़ा खरीद लिया। यहां हरिद्वार के पास ही मेरा गांव है। सोचा था बाल–बच्चों की अच्छी तरह गुजर

हो जावेगी। लेकिन जिसे मैंने मुसीबतों का अंत समझा था वह तो मुसीबतों का श्रीगणेश निकला। मेरे नए टांगे को अड्डे पर देख सभी टांगे वाले तो आग-आग हो गए, मानो मैं ही उनके हिस्से की जायदाद का एक नया दावेदार आ गया हूं। देखिए महाशय! यह हरिद्वार है, हिंदुओं का तीर्थ है। लाखों यात्री यहां तीर्थ करने आते हैं और इन सब के बीच में मुसलमान तांगे वाले बड़ी शान के साथ रहते हैं। ढाका, नवाखली में कुछ भी हो, यह टांगे वाले इन्हीं हिंदुओं को मूंड-मूंड कर खूब कमाई बना रहे हैं। ज्यूं ही मैंने तांगा चलाना शुरू किया, कैसा गजब का तांगे वालों में मैंने इंत्तिहा देखा। सर्वप्रथम अड्डे के चौधरी ने मेरे तांगे का विरोध किया-हम चमार का तांगा चलने नहीं देंगे। मैं रोता-पीटता कांग्रेस वालों के पास पहुंचा। उनके कहने-सुनने पर चौधरी ने तो मुझे नहीं रोका, परंतु अब अनोखी मुसीबत थी। मेरा टांगा साफ-सुथरा फर्स्ट क्लास था, घोड़ा भी बहुत बढ़िया-परंतु ज्यूं ही दो चार सवारियां टांगे में बैठीं कि पीछे से झट मुसलमान टांगे वाले ने आवाज कसी-अबे चमार के बच्चे! अब हरिद्वार में दुनिया का धर्म भ्रष्ट करेगा? सवारियां सहम सी जातीं। एक दूसरा मुसलमान आता और सवारियों को सुनाकर कहता-अजी! यह जात का चमार है, चमार। सवारियां अपने आप ही उतर जातीं और मैं मुंह देखता रह जाता। हिंदू टांगे वाले थोड़ी भी मेरी मदद करते तो मैं हिम्मत न हारता, परंतु इस षड्यंत्र में तो वे मुसलमानों से घी-खिचड़ी हो चुके थे। पहले तो मुसलमान तांगे वाले ही मेरा विरोध करते थे अब कुछ एक धर्मावतारों ने भी मेरे तांगे का विरोध शुरू कर दिया। जमाना कैसा जा रहा है, महाराज! यह आप से छिपा नहीं। एक ओर मुस्लिम तांगे वाले मुझे परेशान करते थे, दूसरी ओर मुझे यह प्रलोभन दे रहे थे कि यदि मैं मुसलमान बन जाऊं तो मुझे कोई रोक-टोक नहीं। लेकिन उनके झांसे में आकर मैं अपना धर्म छोड़ने को तैयार न था।

इन हिंदुओं के दिल में इतनी भी दया नहीं आई कि मेरे बाल-बच्चों का मेरा और मेरे घोड़े का क्या बनेगा। इन्होंने इतना भी न सोचा कि ऐसे मैं कब तक गुजारा कर सकूंगा। भूखों मरने तक की नौबत आ गई। एक दिन मेरे तांगे में चार सवारियां बैठीं, चलने ही लगा था कि-झट किसी ने कह दिया अजी यह तो चमार का तांगा है। उस समय मेरे सिर पर चोटी थी, शरीर पर धोती और कुर्ता था, मैंने कहा-"चमार क्या आदमी नहीं होते?" लेकिन चारों सवारियां तो वहीं दिल तोड़ बैठीं। दो तत्काल उतर गई, दो भी अनमनी-सी हो रही थीं। तुर्की टोपी लगाए दूसरा तांगेवाला झट

तांगा बढ़ा लाया। चारों सवारियों ने उस मियां के तांगे में बैठकर मानों अपना डूबता हुआ धर्म बचा लिया। इस घटना का मेरे दिल पर बहुत बुरा असर हुआ। मेरा दिल टूट गया। आखिर मेरा कुछ अपराध भी तो हो। मुझे रात भर नींद नहीं आई और अगले ही दिन...जब मैं प्रभुदयाल की बजाए अब्दुलगफूर बनकर आया मानो मेरा सभी कष्ट जाता रहा।

अड्डे का चौधरी भी अब मेरी इज्जत करता है। हिंदू टांगे वाले मुझ से खौफ खाते हैं, मुस्लिम तांगे वाले मुझे अपना समझते हैं। धर्मावतारों का धर्म अब मेरे तांगे में बैठने से खराब नहीं होता। आप लोगों की दुआ से 10,12 रोज कमा लेता हूं। घर की हालत रुपया पैसे के लिहाज से तो अच्छी है। लेकिन चित्त को शांति नहीं–अपनी तो नहीं, मगर बच्चों की मुझे चिंता है। मैं नाममात्र को मुसलमान हूं, दिल अभी तक हिंदू धर्म के रंग में रगा हुआ है। मैं अब भी हिंदू धर्म को अच्छा समझता हूं। गंगाजी को सिर झुकाता हूं, पंडित जी को प्रणाम करता हूं। हिंदुओं की बहू–बेटियों की इज्जत करता हूं, परंतु मेरी संतान पढ़–लिखकर समझदार हो जाने पर अपनी असलियत को पहचानेगी, जब वह मेरी मुसीबतों की करुण कहानी सुन कर मेरे धर्म भ्रष्ट होने के रहस्य को जानेगी, फिर अगर वह अपने पिता के अपमान का बदला लेने के लिए जिन्ना, सुहरावर्दा, के रूप में प्रकट हो तो फिर आप ही बताइए, पंडित जी महाराज! मेरी संतान के इस भयंकर पाप के लिए अपराधी कौन?

उसके सिर पर चोटी भी थी, गले में यज्ञोपवीत भी था, तुर्की टोपी और सलवार को भी उसने जीवन भर हाथ न लगाया होगा। परंतु था वह मुसलमान। इसका नाम था रफीक अहमद। मैंने जरा डरते–डरते पूछा, भाई रफीक अहमद! अमृतधारा की बोतल पर नाईट्रिक एसिड का यह लेवल कैसा। रफीक अहमद ने मेरी ओर देखा, मैं जरा सहम–सा गया। कोई जमाना था कि मुसलमान यह सुनकर प्रसन्न होते थे कि वे कभी हिंदू थे, परंतु आजकल किसी मुसलमान को यह पूछना कि वह

मुसलमान कैसे बना, जान को हथेली पर रख कर ही ऐसा प्रश्न पूछा जा सकता है। फिर भी मैंने हिम्मत की। सच पूछो तो उसके सिर पर फहरा रहा राष्ट्रीय झंडा देखकर ही मैंने इतनी हिम्मत की।

''लेकिन आप पहले यह बताएं आप हैं कौन?''

''आदमी हूं। हाड़-मांस का बना इंसान हूं और क्या हूं जो कुछ हूं आपके सामने हूं। वैसे एक लेखक हूं, देश का एक सिपाही हूं। मुझे आपके इस रूप को देखकर बहुत खुशी हुई लेकिन आपके नाम को सुनकर मुझे दु:ख हुआ।''

''यह आपकी कमजोरी है। आज तो जमाना हिंदू-मुस्लिम इत्तिहाद का है। एक ही शरीर मे गंगा-यमुना का संगम देखकर आपका दु:खी होना उचित नहीं।''

''गंगा-यमुना का संगम होता तो मुझे प्रसनता ही होती लेकिन यहां तो पूर्व-वाहिनी गंगा और पश्चिम-वाहिनी दजला बनावटी तौर पर मिले हुए दिखा दिए गए हैं। अप्राकृतिक तथा बनावटी चीज को देखकर असलियत की चिंता में आंसू बहाना उचित ही है।''

''तो क्या किसी हिंदू के मुसलमान बन जाने पर आपको दु:ख होता है।''

''यदि कोई हिंदू इस्लाम की दार्शनिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक महत्ता को सोच-समझकर उसकी शरण में जाता है तो मुझे न दु:ख होता है और न सुख, परंतु समाज का सताया हुआ, पथ भ्रांत, नौकरी, जमीन, औरत, धन के लोभ में यदि कोई हिंदू मुसलमान बनता है अथवा तलवार के जोर से डरा धमका कर मुसलमान बनने पर मजबूर किया जाता है तो मुझे इतना दु:ख होता है, जो कहने की चीज नहीं, अनुभव की ही चीज है।''

''तो आप कांग्रेसी होते हुए भी हिंदू-मुस्लिम एकता में विश्वास नहीं रखते।''

''जिस एकता से आपका तात्पर्य है वह एकता किसी सूरत में हो नहीं सकती। हिंदू-मुस्लिम एकता का शोर केवल अंग्रेज को डराने धमकाने के लिए ही है! हिंदू-मुस्लमानों के सिद्धांत शत प्रतिशत परस्पर विरोधी हैं। इन दोनों में एकता हो ही नहीं सकती। इस्लाम के पास कोई चीज नहीं जो हिंदू-धर्म के पास न हो। बाहर के मुसलमानों की तो मैं कह नहीं सकता परंतु हिंदू-स्थान में तो इस्लाम का सारांश हिंदुओं की प्रत्येक सामाजिक, नैतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक बात का विरोध करना है। परंतु यह बहस जो आपने छेड़ दी है यह कोई अच्छी बहस नहीं। मैं तो आपसे केवल यही जानना चाहता हूं-गंगा की वादियों में यह दजला अफरात की नदियां कैसे बहा रखी हैं।''

''इसको जान लेने से क्या लाभ।'' मैं इस कौम को यह बता सकूंगा–उसने अपने ही हाथों अपनी दौलत को कैसे बरबाद किया।''

मैं ठाकुर हूं, पंडित जी महाराज! मेरी एक लड़की है–मैंने घोषणा की जो भी हिंदू नवयुवक मेरी कन्या से विवाह करना चाहेगा मैं उसे हाथी दहेज में दूंगा। आज तक एक भी ऐसा नवयुवक मुझे नहीं मिला।

''लेकिन आप ठाकुर से मुसलमान बने कैसे।''

ठाकुर सहिब का छिपा हुआ स्वाभिमान जाग उठा–बोले!'' कौन कहता है मैं मुसलमान हूं। मैं आज भी ठाकुर हूं और जीवन भर ठाकुर रहूंगा।''

''भगवान् आपकी ऐसी सुबुद्धि को जीवन–पर्यंत बनाए रखे– परंतु मैं आपकी बनवास गाथा सुनने को उत्सुक हूं।''

मैंने कोई अपराध नहीं किया, मैंने किसी ब्राह्मण का अपमान नहीं किया, मैंने किसी गौ को लात नहीं लगाई, मैंने वेद और पुराण की निंदा नहीं की, मैंने किसी का घर नहीं जलाया, मैंने किसी की आजीविका नहीं छीनी, मैंने जो कुछ किया, मैं आज तक भी मानता हूं मैंने अच्छा किया।

''लेकिन आपने किया क्या।''

''हमारे मुहल्ले में एक अच्छे भले घर की बेटी, विवाह के दस ही दिन पीछे विधवा बन गई। उस बेचारी ने पति–दर्शन तक न किया था। मुझे बताया गया कि अब आयु–पर्यंत उस देवी का विवाह नहीं हो सकता, मैंने कहा–आखिर इस देवी ने क्या अपराध किया। उत्तर मिला– इसके पूर्व कर्मों का फल। मैंने कहा–जब इसके पुनर्विवाह द्वारा इसके जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है, तो जो बात हमारे सामर्थ्य में है उसे न करते हुए पूर्व–कर्मों का बहाना बनाकर खाहमखाह एक प्राणी के जीवन को नष्ट करना यह कहां की बुद्धिमत्ता है। परंतु मेरी किसी ने एक न सुनी।

वह अपने मां–बाप की एक लड़की थी। पिता का कुछ वर्ष पहले ही देहांत हो गया था। पुत्री के विधवा हो जाने पर माता के दिल पर भी वह धक्का लगा कि फिर वह संभल न सकी और एक ही वर्ष पश्चात् वह भी चल दी।

अब वह देवी इतने बड़े घर में बिल्कुल अकेली थी। मैंने कहा–गृहस्थ के सुख की दृष्टि से न सही वैसे भी इतने बड़े घर में इस देवी का अकेला रहना असंभव है, एक दो दिन की बात हो सो नहीं, यहां तो जिंदगी भर का सवाल है। लेकिन सब प्रश्नों का मुझे एक ही उत्तर मिला–शास्त्र में विधवा विवाह की आज्ञा नहीं।

मैं मन मसोस कर रह गया। मैंने देखा गुंडे लोग उस देवी को पथ-भ्रष्ट करने के लिए उस घर के चारों ओर एक भयंकर जाल बिछा रहे थे, मैंने कहा-एक ही डंडे से आप सबको हांकना चाहते हैं।, अवस्था और परिस्थिति का भी तो कुछ ध्यान करना चाहिए। अपने-अपने समय के अनुसार ही शास्त्र बनाए जाते हैं और सच बात तो यह है पंडित जी महाराज, जो शास्त्र-शास्त्र की दुहाई मचाते हैं, उन्होंने शायद किसी शास्त्र को खोलकर भी न देखा हो। जिस बात को कहने से उनका अपना स्वार्थ पूरा हो और प्राणी को कष्ट हो वही इन लोगों के लिए शास्त्र है। मैंने कहा-गुंडों के जाल में फंस जाने पर क्या धर्म की नाक नहीं कटेगी? परंतु मेरी बात पर किसी ने ध्यान न दिया। एक बड़े धर्मात्मा बोले-गुंडों के साथ भले ही भाग जाए, परंतु विधवा विवाह का शास्त्र में कोई विधान नहीं। पंडित की बात मुझे तीर के समान लगी। उन्हीं दिनों हमारे नगर में समाज का उत्सव हुआ। बड़े जोरदार लैक्चर हुए एक वक्ता महोदय ने विधवाओं का बड़ा भयानक चित्र खींचा। मैं उस समय 25 वर्ष का नवयुवक था, अविवाहित था। मैंने वहीं बैठे-बैठे संकल्प किया मैं उस देवी को अपनी धर्मपत्नी के रूप में स्वीकार करूंगा।

और बिरादरी के घोरतम विरोध होने पर भी मैंने अपना संकल्प पूरा किया। मैंने उस देवी को धर्म पत्नी के रूप में स्वीकार किया। मैं एक बहुत बड़े खानदान का आदमी हूं। अच्छा खासा जमींदार हूं। मैं यदि चाहता, अन्य स्थानों पर बीसियों विवाह कर सकता था, परंतु एक आर्य देवी का उद्धार करना मेरा कर्त्तव्य था, मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया।

मेरा विवाह क्या हुआ, मानो चारों तरफ बदतमीजी का एक तूफान सा उठ खड़ा हुआ। ''धर्म डूब गया, धर्म डूब गया'' की दुहाई मचने लगी। धर्म तभी बच सकता था अगर वह देवी किसी गुंडे के साथ भाग जाती या अपने ही घर में किसी गुंडे के साथ बैठ जाती। बिरादरी ने हमें खारिज कर दिया, हमने कोई परवाह न की। कुओं पर हमारा चढ़ना बंद कर दिया गया। मैंने कहा-जब इन कुओं से मुसलमान पानी भर सकते हैं तो हम क्या मुसलमानों से भी गए गुजरे हैं-लेकिन हमें पानी नहीं भरने दिया। हमने घर में नलका लगवा लिया। मैं और मेरी धर्म पत्नी ही जानते हैं वे तूफानी दिन हमने कैसे गुजारे। इस कशमकश के दिनों में कुछ एक कांग्रेसी तथा आर्य समाजी भाइयों ने हमारा जरूर साथ दिया लेकिन जिस समय उन्हें हमारा साथ देना चाहिए था, उस समय यह लोग भी आंखें दिखा गए। मेरी एक लड़की है। जब

वह सोलह सत्रह वर्ष की हुई हमें उसके लिए वर की खोज करनी थी। लड़की में कोई दोष नहीं, लेकिन यह हिंदू समाज मेरे और मेरी धर्मपत्नी के अपराध का दंड मेरी पुत्री को देना चाहता था। मैंने सोचा कहीं किसी आर्य समाजी घरों में ही कोई वर मिल जाए, परंतु न जाने क्यों मुझे सब ओर से निराशा हुई। आप ही बताइए मैं लड़की को कब तक घर में बिठाये रखता। लड़की सब प्रकार से गुणवती है उसका दोष केवल इतना है कि वह उस प्रेम का फल है जिसे समाज की आंखें देख न सकीं। इधर हिंदुओं में यह हाल था कि नीच-से-नीच हिंदू भी एक बाल-विधवा की पुत्री से विवाह करने को तैयार न था और उधर यह हालत थी कि एक बहुत बड़े खानदान के मुसलमान जिनका खानदान एक ही पीढ़ी पहले बहुत अच्छे प्रकार का ठाकुर वंशी था, उनका लड़का एम. बी.बी.एस. क्लास में पढ़ता था। वह खुद मेरे पास आए, बोले-मैं अपने लड़के को आपकी झोली में डालता हूं। हमारे घर में कभी मांस नहीं बनता, हमारे बच्चे सभी हिंदी पढ़े हैं। मुसलमान होते हुए भी हमने अपने पुरुखों की परिपाटी को नहीं छोड़ा। आपकी पुत्री मेरे घर में बिल्कुल अनुकूल वातावरण पाएगी। मैंने एक बार फिर हिंदू समाज में वर प्राप्ति के लिए सिर तोड़ कोशिश की परंतु निष्फल। एक ओर थी घृणा, कठोरता, अविश्वास और दूसरी ओर था विश्वास, नम्रता और प्रेम। -मैंने विश्वास और प्रेम का पल्ला पकड़ा। आज मेरी पुत्री अपने घर में सुखी है परंतु जिस बात का आपको दु:ख है, उसका मुझे भी दु:ख है परंतु ऐसी दु:ख पूर्ण परिस्थिति में हमें लाने के लिए अपराधी कौन?

''सच मानिए पंडित जी महाराज! मेरी लड़की तो साक्षात् देवी है।''

मैंने बात काटते हुए कहा, किंतु भाई साहिब! देवियां दूध-मलाई की बनी नहीं होती। देवियों के शरीर में भी खून का प्रवाह बहता है, विधवा होने के पश्चात् भी देवियों का रक्त, रक्त ही रहता है, पानी नहीं बन जाता। उनका हृदय ही रहता है, पत्थर का ढेला नहीं बन जाता; उनकी अंतड़ियां ही रहती हैं, लोहे की जंजीरे नहीं बन जाती। किसी देवी के वैधव्य पर तरस खाकर कामदेव उसका पीछा नहीं छोड़

देता। देवी की पदवी प्राप्त कर लेने पर स्त्री-स्त्री ही रहती है। वह पत्थर की मूर्ति नहीं बन जाती। आदर्शवाद के काल्पनिक जगत् से नीचे उतर वास्तविकता के संसार में बैठकर सोचना सीखिए। जानते हो जमाना कैसा जा रहा है? पूर्वी बंगाल में विधवाओं पर जो-जो अत्याचार हुए और इन अत्याचारों के कारण समस्त हिंदू जाति को जिस जिल्लत का सामना करना पड़ा, क्या हमारा फर्ज नहीं कि उन अपनी गलतियों के लिए पश्चाताप करें और उनसे कुछ शिक्षा प्राप्त करें। पूर्व पत्नी के देहांत पर यदि पति को विवाह करने की खुली छुट्टी है तो पूर्व-पति के देहांत पर पत्नी को भी पुनर्विवाह का पूरा-पूरा अधिकार है।

''परंतु धर्मशास्त्र में तो विधवा विवाह की आज्ञा कहीं भी नहीं।''

''संतान होते हुए भी, यहां तक कि पोते और पोतियां होते हुए भी अनेकों विवाह रचाने की आज्ञा है, क्या आप मुझे किसी धर्मशास्त्र में दिखा सकते हैं।'' मैंने कहा-''भाई साहब! जिन शास्त्रों की तुम दुहाई मचाते हो वे उस समय लिखे गए थे जब उम्र लंबी थीं। दूध, दही, घी की नदियां बहती थी। लोगों का जीवन बिल्कुल प्राकृतिक था। खाना-पीना खूब मिलता था। जीवन की आवश्यकताएं कम थीं। मशीनरी का जमाना न था। लोग हाथ से काम किया करते थे, तीर्थ यात्रा भी पैदल करते थे। स्वास्थ्य सबका उत्तम था। अकाल मृत्यु नाम को भी न थी। आपस में प्रेम था, श्रद्धा थी तथा विश्वास था। सर्वत्र सुख शांति थी, आज जैसे दंगे-फसाद न थे, मुसलमान यद्यपि यहां थे, परंतु जिन्ना टाईप की मनोवृत्ति उनमें बिल्कुल न थी। उन मुसलमानों में से जो थोड़े बहुत पितृ-पक्ष से गजनवी थे, उनके दिल में भी हिंदुत्व के प्रति श्रद्धा थी। जो कारणवश हिंदुओं से मुसलमान बने थे, वे नाममात्र को मुसलमान थे, स्वयं वे अपने को धर्म से पतित हुआ मानते थे। इसके लिए उन्हें स्वयं ग्लानि थी। अपने अपराधों के लिए वे प्रायश्चित करने को तैयार थे। यही कारण था कि मुसलमान होते हुए भी वे हिंदुओं के लिए अपने प्राणों तक का उत्सर्ग करने को तैयार थे। परंतु अब जमाना बदल चुका है। प्रत्येक मुसलमान आज हिंदू को अपना शत्रु और हिंदू के शत्रु को अपना मित्र समझता है। जिन्ना ने उनके दिल में यह खयाल जमा दिया है कि उनकी गरीबी, कंगाली तथा अन्य कमजोरियों का एकमात्र कारण हिंदू ही है। आज प्रत्येक नगर प्रत्येक ग्राम ज्वालामुखी बना हुआ है। हिंदुओं और मुसलमानों के आपस में मन फट चुके हैं। संसार की कोई भी शक्ति इन्हें अब जोड़ नहीं सकती, ऐसे संदिग्ध वातावरण में मर्दों का ही जीवन

संशयपूर्ण बन चुका है। फिर अबलाओं का तो कहना ही क्या। आपने कभी सोचा ऐसे आपत्काल में असहाय विधवा देवियों की क्या दुर्गति होगी।''

मेरी बातों को उन्होंने बहुत ध्यानपूर्वक सुना, परंतु बात रही वहीं की वहीं। बोले-''आपका कहना यथार्थ है, परंतु हमारी बिरादरी में विधवा विवाह आजतक नहीं हुआ। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं कि मैं पहल कर सकूं।''

इस घटना के कुछ ही महीने पश्चात्, वही सज्जन मुझे मिले। मैंने उन्हें बेहद हतोत्साह, खिन्न, दुःखी तथा संतप्त पाया। मुझे देखते ही उनकी आंखें अश्रुओं से परिपूर्ण हो गईं। मेरा माथा ठनका। बिजली के समान एक खयाल दिमाग में दौड़ गया। उस ग्राम में जहां इनकी पुत्री ब्याही थी और जहां वह अपने पूर्व पति की पुनीत स्मृति में माला फेरती हुई अपने वैधव्य के आरक्षित जीवन को व्यतीत कर रही थी, उसी ग्राम में अभी हाल ही में भारी उपद्रव मचा। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हजारों गुंडों ने ग्राम पर धावा बोल दिया। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही रक्षा में तत्पर था। सभी को अपनी ही जान की फिकर पड़ी थी। सभी लोग घरों के दरवाजे बंद कर जान छिपाए भीतर बैठे थर-थर कांप रहे थे। इस उपद्रप में उस देवी पर भयंकर विपत्ति आई होगी। मैंने दिल मजबूत करके पूछा-कमला आजकल यहीं है अथवा ससुराल।

अश्रुओं की धारा फूट कर बह निकली। उनका कंठ रूक गया। वह कुछ बोल न सके। मैंने कहा उस ग्राम में बड़ा भारी, उत्पात मचा था, कमला सुरक्षित तो है।

''उसे असहाय, अबला, अनाथ समझ गुंडों ने घर पर धावा बोल दिया। औरत की जात, इन गुंडों से अपनी रक्षा कैसे कर सकती। घर बरबाद हो गया। कमला का कोई पता नहीं। अभी-अभी आर्य समाज के मंत्री से मिलकर आया हूं। हिंदू सभा के प्रधान से भी मिलूंगा।

लेकिन आर्य समाज के मंत्री ने ही तो आपको कहा था, पुत्री का शीघ्र ही पुनर्विवाह कर दो। उस समय क्या आपने आर्यसमाज की परवाह की। यदि कमला का संरक्षक उसके पास होता बेचारी को कुछ तो आसरा मिलता। कंट्रोल और करफ्यू के जमाने में कभी तुमने सोचा औरत की जात घर के भीतर छिपकर कब तक निर्वाह कर सकेगी। विवाह से तो धर्म डूब जाता, आरक्षित अवस्था में उसके अपहरण पर धर्म का बेड़ा बराबर तैरता रहा। उस समय कुछ अधिक कहना मैंने उचित न समझा। लालाजी बहुत दुःखी थे। मैंने देखा मेरे शब्दों से उन्हें और भी दुःख हो रहा है। मैंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा-लालाजी! जितना दुःख आपको है, उतना ही मुझे भी है,

लेकिन आपकी और इस समस्त जाति की इस दुर्गति के लिए अपराधी कौन?

उस दिन हजरते कायदे आजम ने बी.बी.सी. लंदन से अमेरिका के नाम ब्रॉडकास्ट किया। शायद मेरा ऐसा लिखना ठीक न हो। यूं कहना चाहिए, उस दिन चर्चिल एंड कंपनी अनलिमिटेड ने पाकिस्तानी सभ्यता का एक बेहतरीन नमूना संसार के सन्मुख पेश करने के लिए अपने कायदे आजम को ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन लंदन स्टेशन पर खड़ा किया। संसार की आंखों में कांग्रेस और हिंदुओं को जलील करने की कोशिश करते हुए इस शख्स ने कहा– कांग्रेसी हकूमत चोरों, डाकुओं, लुटेरों और कातिलों की हकूमत है। बिहार में लाखों घरवाले बेघर हो गए और तीस हजार जान से मार डाले गए–उस दिन मैं विश्वज्ञान–मंदिर में था। श्री स्वामी जी महाराज समाचार पढ़ते हीं बोले पराशर जी! जिन्ना ने जो कुछ कहा, क्या यह सर्वथासत्य है? मैंने कहा इन बातों का सत्य के साथ दूर का भी वास्ता नहीं।

लाखों शरणार्थी जो बिहार को छोड़ बंगाल में बसने जा रहे हैं, क्या यह भी झूठ है?

''बसने वे जा रहे हैं, जिनका बिहार में अपना कुछ भी नहीं। न तो जिनका घर है न दर; न जमीन न जायदाद, न नौकरी न रोजगार। उन्हें कुछ दिन बिहार–बंगाल की सीमा के पास ही बसा देना यह मुस्लिम लीग की एक प्रोपेगंडा की चाल है। कुछ दिन यह लोग आसनसोल में पड़े रहेंगे और लीगी अखबार खूब हाशिये बना–बनाकर खबरें छापेंगे। बुखारी ब्रादर्ज की जद्दी जायदाद बना हुआ ऑल–इंडिया रेडियो भी बढ़ाचढ़ाकर खबरें सुनाएगा और कांग्रेसियों की बात तो आप जानते ही हैं, जिन पांडवों ने संसार की दिग्विजय की, जिस धनुर्धारी अर्जुन ने गांडीव की टंकार से धरती को छेद दिया, अपनी सती साध्वी द्रौपदी को भरे दरबार में अपमानित होते देखकर भी वे कुछ न कर पाए। लीग प्रोपेगंडा से भयभीत हो बिहार की कांग्रेसी सरकार उन्हीं निखट्टुओं को लौटाने के लिये प्रार्थना करेगी, हाथ–पैर जोड़ेगी और यही आवारागर्द लोग पहले जिन्हें भीख मांगने पर भी कोई एक धेला तक न देता था, बिहार की कांग्रेसी सरकार इनके लिए नए–नए काम तलाश करेगी और जब तक काम न दिलाएगी, तब तक बैठों ठालों को दूध–चाय सप्लाई करेगी।

''लेकिन तीस हजार जो मरने की बात लिखी है।''

''वह भी सरासर झूठ है।''

''अगर झूठ है तो बिहार सरकार इसका प्रतिवाद क्यों नहीं करती।''

''करती तो है, परंतु डर-डर कर, छिप-छिप कर वह कहती है- बिहार के दंगों मे हताहतों की संख्या अधिक नहीं। अकेले नागरनासा में जिसके संबंध में पहले 500 मरने की खबर थी, पीछे यह संख्या कुल 35 ही निकली जिनमें 25 मुसलमान और दस हिंदू थे?''

''तो फिर लीग एक ही तरफा प्रचार क्यों करती है?''

''कलकत्ता के दंगे में संतप्त बिहारी अपना सर्वस्व खोकर बिहार लौटे। तत्पश्चात् पूर्वी बंगाल का उपद्रव हुआ। वहां से हिंदू देवियों को भगा-भगा कर उत्तरी बिहार में लाया जाने लगा। उधर उत्तरी बिहार में भी लीगी उपद्रव की तैयारियों में थे। संघर्ष शुरू हो गया। जवाहरलाल उस दिन कलकत्ता में थे। दंगे की खबर सुनते ही, बिना मौका देखे, बिना सच्ची-सच्ची घटनाओं को जाने, केवल इसलिए कि बिहार हिंदू प्रांत है जवाहर ने स्वयं सर्वप्रथम हिंदुओं को ही लताड़ना शुरू किया। जवाहर ने समझा यह मौका उसे परमात्मा ने दिया है। बिहार के उपद्रवों का सारा दोष हिंदुओं के मत्थे मढ़कर वह कबायली इलाके के बजीरियों को अपने मुस्लिम पक्ष-पाती, न्यायकारी, समदर्शी होने का बहुत अच्छा सबूत दे सकेंगे।....बस फिर क्या था एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा-जय प्रकाश से लेकर जवाहरलाल तक, शाहनवाज से लेकर मौलाना हिफजर्रहमान तक जितने भी कांग्रेसी थे वे हिंदुओं के ही पीछे हाथ धोकर पड़ गए। सर्वप्रथम इन्हीं लोगों ने बिहार की मृत्यु संख्या को बढ़ा-चढ़ा कर कहना शुरू किया, सर्वप्रथम इन्हीं लोगों ने बिहार की घटनाओं को हद से ज्यादा महत्त्व दिया। शुरू-शुरू में एक भी कांग्रेसी नेता ने इतना भी नहीं कहा कि दंगों में कुछ हिंदू मरे और कुछ मुसलमान। सबने यही कहा-केवल मुसलमान ही मारे गए। तो आज हमारी ही अपनी भूलों से फायदा उठाकर यदि जिन्ना संसार की नजरों में हमें गिराने की, कातिल और जालिम साबित करने की कोशिश कर रहा है तो आखिर उसे इस प्रकार के विषैले प्रचार के लिए सामग्री (Raw-material) सप्लाई करने के लिए अपराधी कौन?

''जो ताकत गांधी और जवाहर बीसियों वर्ष जेल की तकलीफें सहने के बाद, हजारों नौजवानों को फांसी के तख्ते पर लटका देने के बाद, लाखों नर-नारियों को जेल में बंद कराने के बाद भी हासिल न कर सके, वह ताकत मैंने आराम से बैठे हासिल कर ली। मैंने एक भी मुसलमान को जेल नहीं भेजा, एक भी मुसलमान को फांसी पर नहीं लटकाया, मुसलमान की जेब से एक धेला भी अंग्रेज के खजाने में जुर्माने की शक्ल में दाखिल नहीं किया, फिर भी मैंने मुसलमान के हाथ में कांग्रेस से भी ज्यादा ताकत, ज्यादा सरकारी नौकरियां, ज्यादा पॉलिटिकल हकूक दिलवा दिए हैं'' यह थी गर्वोक्ति जोकि लीग के कायदे आजम ने दिल्ली की सुनहरी मस्जिद में मुसलमानों को मुखातिब करते हुए की।

वैसे तो मुसलमानों के मजमें में किसी हिंदू का लैक्चर सुनने जाना कोई आसान बात नहीं। हिंदुओं के जलसों में मुसलमान खूब बन-ठनकर तुर्की टोपी लगाकर जाते हैं और व्याख्यान में एक मुसलमान को देख वक्ता महोदय की आशाओं पर मानो घड़ों पानी फिर जाता है। तत्काल वक्ता महोदय, अपने वास्तविक स्वरूप को छोड़ **''समोऽहम् सर्वभूतेषु, न मे द्वेषोऽस्ति न प्रिय''** का लघुत्तम स्वरूप धारण कर लेते हैं और दूसरी ओर इस्लामी जलसे में कोई धोती वाला चला भी गया, अव्वल तो उसकी जान की खैर नहीं और अगर कहीं लैक्चरार महोदय की नजर चढ़ गया तो बस फिर तो जो कुछ सुनना पड़ेगा सो थोड़ा। परंतु हमें भी सुनने का ऐसा चस्का पड़ा है कि बस दो साथी साथ ले सर पर कफन बांध मस्जिद में घुस ही तो गए।

वहां तो खैर! खैरियत से कट गई, परंतु लाठियां खाकर भी शायद मुझे इतनी चोट महसूस न होती, जितनी जबरदस्त चोट यह शब्द सुनकर मुझे महसूस हुई। मस्जिद से निकलते ही मेरा मित्र बोला-देखिए पाराशरजी! इस शख्य का हौसला कितना बुलंद हो चुका है।

मैंने कहा-''बुढ़ाने में इज्जत मिली है और मिली भी हमारी अपनी गलतियों की

बदौलत। आज इसका हौसला बुलंद क्यों न हो।''

''लेकिन इस शख्स को यह इज्जत अंग्रेज की बदौलत ही तो नसीब हुई है।''

''अंग्रेज पर इलजाम लगाना, अपनी कमजोरियों को अंग्रेज के गले मढ़ना, यह तो भारतीय देशभक्ति का एक फैशन सा बन चुका है। मैं अंग्रेज को बिल्कुल निर्दोष नहीं कहता, परंतु अंग्रेज से भी बढ़कर इस शख्स को महत्त्व हमी ने दिया। सन् 31 में इसकी लीग में चार मेंबर भी न थे। सन् 35 के इलैक्शनों में इस शख्स को एक भी प्रांत में सफलता नहीं मिली। पंजाब और सिंध और बंगाल जिनकी शह पर यह शख्स आज दनदनाता फिरता है इन तीनों में सर सिकंदर अल्लबख्श और फजलुलहक की हकूमत थी। जिन्ना को यह लोग समझते ही क्या थे। उस अवस्था में भी गांधी महाराज इस शख्स की मिन्नत खुशामद करने मालाबार हिल पर पहुंचे। आज तो भले ही यह शख्स मुसलमानों का प्रतिनिधि होने का दावा करे और उसे महत्त्व देने वाले भी उसके इस दावे को स्वीकार कर लें परंतु 38, 39 में तो इसके पास ऐसा दावा करने का कोई बहाना न था। उस समय जिन्ना को क्या समझ कर उसके हाथ में कोरा चैक दिया गया। अंग्रेज इस शख्स को ऊंचा उठा सकता था लेकिन गांधी को इसके घर पर जाने के लिए मजबूर नहीं कर सकता था। गांधी और कांग्रेस साफ घोषणा कर देते–भारतीय राजनीति में जिन्ना की सिवाय व्यक्तिगत पोजीशन के और कोई हैसियत नहीं। उसकी लीग का किसी भी प्रांतीय असेंबली में कोई महत्त्व नहीं, फिर कांग्रेस उसके साथ क्यों बातचीत करे। कांग्रेस को साफ शब्दों में घोषणा कर देनी चहिए थी कि मुसलमानों के हितों के संबंध में उसे कोई बात करनी होगी तो वह मौ. आजाद, गफ्फार, खांसाहिब, अल्लाबख्श, किदवई, हुसैन, अहमदमदनी, अताउल्लाशाह बुखारी, डॉक्टर जाकिर हुसैन के साथ करेगी। जो मुसलमान कांग्रेस के साथ थे, जो मुसलमान कांग्रेसी झंडे के नीचे जेलों में गए उनकी तो कांग्रेस ने कुछ भी परवाह न की और अंग्रेजों के इस शो बोआए के दरे दौलत पर उसके घर जाकर बीसियों बार सजदा किया। अंग्रेज यही तो चाहता था। गांधी–जवाहर ने भारतीय राजनीति में जो उच्चतम स्थान प्राप्त किया है, अंग्रेज यह चाहता है कि वही स्थान एक ऐसा व्यक्ति प्राप्त करे जो दिलोजान से भारत में अंग्रेजी राज का पक्षपाती हो। अंग्रेज को वह शख्स मिला– मुहम्मदअली जिन्ना। अंग्रेज ने इस शख्स को तलाश किया, कांग्रेस ने इस शख्स को लीडर बनाया और सेवाग्राम के संत ने इसकी लीडरी पर ''कायदे आजम'' का ठप्पा लगा

दिया। जिस शख्स को भारत में तो क्या बंबई तक में कोई पूछता न था आज वही शख्स भारतीय राजनीति का कर्णधार (Moving Figure)बना हुआ है। विट्टो उसके हाथ में है। सोते समय अगर वह बड़बड़ाता भी है तो अखबार मोटे अक्षरों में उसकी खबर छापते हैं। बुढ़ाने में उसे यह इज्जत नसीब हुई है। ऐसा खुशनसीब शख्स आज लाखों के मजमें में इतनी बड़ी-बड़ी बनाता है, तो आप ही सोचें इस शख्स को इतना शक्तिशाली बनाने के लिए अपराधी कौन?

दिल्ली का नाम शाहजहानाबाद था। असली दिल्ली आधुनिक दिल्ली से 13 मील दूर दक्खिन की ओर यमुना के किनारे महरौली ग्राम के आस-पास थी। उस दिल्ली को जाने का आज भी दिल्ली में एक दिल्ली दरवाजा है। वैसे तो दिल्ली में आज भी हिंदुओं की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा अधिक है, परंतु सौ दो-सौ वर्ष पहले दिल्ली में 80 प्रतिशत हिंदू थे। हिंदुओं की अपनी ही गलतियों से थोड़े ही वर्ष हुए मुहल्ले के मुहल्ले मुसलमान बन गए। लाल कुएं में एक कूचा है जिसका नाम है कूचा पंडित। कोई जमाना था जब इस कूचे में सब पंडित ही पंडित थे परंतु आज आप इस कूचे में जाइए। चिराग लेकर ढूंढने पर भी पंडित तो क्या इस कूचे में दूसरा भी कोई हिंदू आपको न मिलेगा। यही हाल बाड़ा हिंदूराव का है।

सदर बाजार से होती हुई दिल्ली क्लाथ मिल की ओर जो ट्राम चलती है, जहां पर यह ट्राम समाप्त होती है उस स्थान का नाम है, बाड़ा हिंदूराव। कोई जमाना था जब यह स्थान हिंदू शूर-वीरों का सर्वश्रेष्ठ गढ़ था, परंतु खुदा का फजल समझिए, हमारी अपनी गलतियों का फल समझिए अथवा इसी सौभाग्यशालिनी दिल्ली का दुर्भाग्य समझिए आज यही बाड़ा हिंदूराव हिंदुओं के लिए एक मुसीबत बना हुआ है। जितने भी पाकिस्तानी जलूस दिल्ली में निकलते हैं सबका श्रीगणेश यहीं से होता है। सदर बाजार के बड़े-बड़े दुकानदार इसी स्थान पर रहते हैं। ये दुकानदार लाखों-करोड़ों का व्यापार करते हैं। बहुत धनी-मानी लोग तथा डीलडौल ही इनके उच्चकुलोद्भव होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। दो-तीन वर्ष पहले तक तो यह

लोग कभी तुर्की टोपी नहीं पहनते थे, हजामत भी इंसानों की तरह बनवाते थे, सर पर अनेक छिद्रधारी तिनकों की बनी टोपी पहनते थे, परंतु नई पनीरी शतप्रतिशत पाकिस्तानी पैदा हो रही है। बड़े बुजुर्गों की टोपी तो पुरानी ही है परंतु हजामत ने Two inverted commas and one semicolon का रूप धारण कर लिया है। नई पौद की टोपी बिल्कुल लाल हो चुकी है।

इसी बाड़ा हिंदूराव से आप चलें सदर की ओर तो दस कदम पर दांयें हाथ कुछ भड़भूजों की दुकाने आपको मिलेंगी। भड़भूजे प्रायः सबके सब हिंदू ही होते हैं। यह घटना लगभग दस वर्ष पहले की है। उस दिन लीग वाले कोई अपना दिन मना रहे थे, मैंने देखा एक भड़भूजा शक्लोसूरत से जो बिल्कुल हिंदू ही प्रतीत होता था उसकी दुकान पर लीगी परचम फहरा रहा था। मेरा माथा ठनका। उस समय तो ट्राम में बैठे-बैठे ही मैं आगे निकल गया, परंतु असलियत को जाने बिना मुझे चैन कहां। तीन-चार दिन बाद मैं उसकी दुकान पर पहुंचा, कुछ चने खरीदने के बहाने। दो आने के मैंने चने लिए। जब ले चुका तो मैंने बहुत ही अच्छे ढंग से उस बूढ़े से पूछा-बाबा! तुम्हारा नाम क्या है।...बूढ़ा चौंक पड़ा? उसने नाम नहीं बताया। उसका लड़का पास ही बैठा था, बोला-नाम पूछने से आपका मतलब? मैंने उस समय अपने को बहुत संभाला। किसी नए मुसलमान से जो स्वयं नहीं बल्कि हिंदू-समाज का सताया हुआ मुसलमान बनने पर मजबूर हुआ हो और फिर जमाने की थपेड़ें सहता वह देखा-देखी खूब पक्का मुसलमान बन चुका हो, उससे यह पूछना कि यह मुसलमान कैसे बना, जान को हथेली पर रखकर ही ऐसा कदम उठाया जा सकता है। परंतु मुझे तो पूछे बिना चैन ही न थी। मैंने कहा भाई साहिब! बुरा मत मानना आज तक जितने भी मैंने भड़भूजे देखे सब हिंदू थे। हिंदू तो आप भी दीखते हैं, लेकिन यह दुकान पर हरा झंडा कैसा।''

''हम हिंदू नहीं मुसलमान हैं?'' वह लड़का बोला।

असली मुहिम्म का आगाज तो अब था। ''मुझे माफ करना''- मैंने अत्यंत नम्रतापूर्वक कहा-''आप तो बिल्कुल हिंदू लगते हैं। अपने को मुसलमान कहना आपने कब से शुरू किया।'' मेरे शब्दों ने बूढ़े के भीतर छिपी हिंदुत्व की भावना को मानो चेता दिया-बोला, हिंदू ही थे पंडित जी्! परंतु कर्मों का खेल? इतना कहकर बूढ़ा चुप हो गया। मैंने कहा-बाबा! कर्मों का खेल कैसा, जबरदस्ती तो कोई किसी का दीन नहीं बिगाड़ सकता।

''जब हम जबरदस्ती बिगड़े बैठे हैं तो फिर आप कैसे कहते हैं कि नहीं बिगड़ सकता।''

''लेकिन जबरदस्ती आप बिगड़े कैसे।''

''पंडित जी महाराज! आप जानते हैं हमारी दुकान सबसे पहले है। जरा भी दंगा-फसाद हुआ हमारी दुकान की शामत आई। हिंदू तो सब अपने-अपने घरों में जा छिपते हैं, हमारी दुकान मुसलमानों के बीच। करें तो क्या करें। पिछली बार जब दंगा हुआ बहुत बड़े हजूम ने हम पर धावा बोल दिया। या मरो या मुसलमान बनो। करते क्या ? सोचा अभी तो जान बचाओ पीछे देखा जाएगा। बहुत होगा तो यह दुकान छोड़ कहीं दूसरे बाजार में दुकान कर लेंगे। मैंने कहा, भाई! मैं बाल-बच्चेदार हूं, हमने तो चने बेच अपना पेट पालना है, हमें मार कर तुम्हारे हाथ क्या आएगा। हमारी जान बख्शो। उस समय मैंने मुसलमान बन जाने का वचन देकर जान बचाई। जुम्मे के दिन वे लोग मुझे मस्जिद में ले गए। मुझसे कलमा पढ़वाया। मैंने भी सोचा पढ़ लो कलमा। कलमा पढ़ लेने मात्र से क्या कोई मुसलमान थोड़े ही बन जाता है। जब दिल हिंदू है तो संसार की कोई ताकत किसी को मुसलमान नहीं बना सकती।

समय टल गया। दिल्ली में फिर शांति हुई। मेरे कलमा पढ़ने की बात बिरादरी को मालूम हो चुकी थी। अब बिरादरी का कोर्टमार्शियल लगा। मैंने कहा- मैं दिल से कभी मुसलमान नहीं बना। उस समय एक तरफ मौत थी और दूसरी तरफ थोड़ी-सी नीति द्वारा जान बच सकती थी। मैंने सोचा शठों के साथ शठता का ही बर्ताव करना चाहिए। कुत्तों की मौत मरने से क्या लाभ। मैंने उस समय आपद् धर्म का पालन किया और कलमा पढ़कर जान बचाई। अब मैं वह दुकान छोड़कर अन्यत्र चला जाऊंगा। फिर मुझे क्या खतरा है। बिरादरी जो मेरे लिए प्रायश्चित निश्चित करे मैं वह प्रायश्चित्त भी करने को तैयार हूं। पहले के ही समान मुझे हिंदू समझा जाए और मेरे साथ यथापूर्व रोटी-बेटी का संबंध बनाए रखा जाए। मैंने बहुत हाथ-पैर जोड़े। बिरादरी की लाख मिन्नत खुशामद की, परंतु पंडितजी महाराज! यह बिरादरी वाले तो दूसरे के घर को आग लगाकर ही दम लेते हैं। इन्हें दूसरे को फांसी पर चढ़ा कर ही संतोष होता है। बिरादरी ने अपना अंतिम निश्चय किया-हमारी क्षमा-प्रार्थना को बेदर्दी से ठुकरा दिया गया।हमारे साथ सब प्रकार का रोटी-बेटी का संबंध बंद कर दिया। बिरादरी का यह दंड मेरे लिए मृत्यु-दंड से भी बदतर था, अच्छा होता मैं इस अपमान को सहन करने से पहले ही इस संसार से उठ जाता। परंतु बच्चों के लिए जीना ही पड़ा। मैं तो आज भी नाममात्र का मुसलमान हूं परंतु बच्चों पर

जमाने की साहबत का पूरा-पूरा रंग चढ़ता ही जा रहा है। यह झंडे सब बच्चों ने ही लहराए हैं, मैं तो इनके पक्ष में नहीं। अभी-अभी बच्चों के इस्लामी जोश का यह हाल है, कल न जाने कैसा आएगा। अगर यही बच्चे हिंदू रहते समाज के रत्न बनते, अब न जाने क्या बनेंगे। कभी-कभी सोचता हूं यही बच्चे कल अगर मौला बनकर दिल्ली के चांदनी चौक में प्रकट हुए तो फिर? फिर इस हमारे पाप और संताप के लिए-अपराधी कौन?

उस दिन सीताराम जी के दिल में बैठे-बिठाए न जाने क्या बलबला उठा, एकदम जाकर उन्होंने अल्टीमेटम दे ही तो दिया। ''चौबीस घंटे के अंदर-अंदर या तो तुम सब लोग हिंदू बन जाओ नहीं तो यहां से डेरा-डांटा उठाकर चलते बनो।'' यह बात कनखल की है। सीताराम जी कनखल की ओर से हरिद्वार यूनियन के मेंबर हैं। जिन दिनों नोवाखाली के संबंध में बड़ी भयंकर खबरें आ रही थीं उन दिनों सीताराम जी के दिल ने भी जोश मारा कनखल के चौक में बीसियों वर्ष से कुछ गूजर-मुसलमान रहते थे। सीताराम एकदम उनके पास पहुंचे और तत्काल उन्हें चौबीस घंटे में या तो कनखल खाली कर देने अथवा हिंदू बन जाने का नोटिस दे दिया।

''हम तो यहीं जन्मे और यहीं मरेंगे, दादा! अब तो हम यहां से जाने से रहे। सारी उमर तो कनखल में बिताई, अंत वेला में कनखल छोड़ कहां जाएं। तुम चौबीस घंटे कहते हो, हम तो कहते तुम अभी हमें हिंदू बना लो। लो बना लो अभी, इससे बढ़कर हमारा बड़ा भाग्य और क्या होगा। लेकिन भाई सीतताराम! हमें यह बता दो-हमें पंडित बनाओगे- क्या बनाओगे? भंगी-चामर तो हम बनने से रहे...।''

अब तो पंडित सीताराम जी चकराए।''खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे'' वाली बात और कुछ न सूझा तो एकदम जोश में आकर बोले-मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। चौबीस घंटे का वक्त है खूब सोच-विचार लो'' इतना कहकर सीताराम वहां से खिसकते बने। ऐसी बात छुपी रह जाए, यह तो बिल्कुल नामुमकिन। चौबीस घंटे बीत गए। सीताराम का अल्टीमेटम सीताराम के लिए ही जान का बवाल बन गया।

24 घंटे बीत गए। अल्टीमेटम की अवधि पूरी हो चुकी। परंतु सीताराम खुद अपने अल्टीमेटम के लिये बेकार हो चुके थे गूजर तो रहे वहीं के वहीं और बात ज्वालापुर तक ही नहीं सहारनपुर और लखनऊ तक बढ़ गई।

इस घटना के चार रोज बाद मैं कनखल आश्रम में पहुंचा। उन दिनों क्या दिल्ली, मेरठ और सब जगह वातावरण ही लड़ाई-झगड़े की बातों से भरपूर था। श्री स्वामी जी महाराज बोले-पाराशर जी! हमारे यहां भी दंगा होते-होते बचा। मैंने पूछो-वह कैसे। उत्तर में श्री स्वामी जी ने सीताराम जी के अल्टीमेटम की कथा सुनाई। तत्पश्चात् श्री स्वामी जी बोले-''पाराशर जी! आप दिन-रात इस हिंदू कौम की चिंता में लगे रहते हैं और इस कौम की यह हालत है कि लोग अपनी इच्छा से अपना उद्धार कराने के लिए प्रार्थनाएं करतो सकें, दूसरी ओर नोवाखाली की घटनाएं आपके सामने हैं जहां तलवार की नोक पर जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन किया जा रहा है। ऐसी अवस्था रहते हुए यदि भगवान् न करे सौ पचास वर्ष में सर्वत्र ऐसे ही उपद्रव जोर पकड़ जाएं तो आप ही बताइए इस देवभूमि भारतवर्ष में देवासुर-संग्राम मचाने के लिए अपराधी कौन?

उस दिन मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। मेरे एक बहुत पुराने कांग्रेसी मित्र से मैं कार्यवश उन्हें मिलने गया। मैंने देखा उनके कमरे में, एक भी कांग्रेसी नेता का चित्र न था। एक ही सप्ताह पूर्व की बात है, मैं उन्हें जब मिला था मैंने देखा कमरे में सर्वत्र गांधी, जवाहर, पटेल, गफ्फार के चित्र सुशोभित थे। मैंने दीवारों पर पूर्ण हड़ताल देखते ही पूछा, क्यों भाई ''इंक्लाब जिंदाबाद'' का श्रीगणेश इन दीवारों से ही शुरू किया गया? क्या खुनामी हो गई इन दीवारों से। बोले-सारा जीवन कांग्रेस में होम दिया लेकिन अब कांग्रेस पर से श्रद्धा जाती रही।

मैंने कहा-जीवन में भावुकता का समावेश कोई अच्छा गुण नहीं। शायद बिहार और नवाखाली की घटनाओं का यह प्रभाव है।

''नहीं इनके इलावा और भी बहुत-सी बातें हैं। मुझे पक्का विश्वास हो चुका

है कि कांग्रेस हिंदुओं के साथ न्याय नहीं कर सकती।''

''जब स्वयं हिंदू ही हिंदुओं से न्याय नहीं करते तो फिर यदि कांग्रेस ने भी अन्याय कर लिया तो कौन सी बड़ी बात है।''

''अलीगढ़ में मुस्लिम-यूनिवर्सिटी के तालवेइल्मों ने वह ऊधम मचाया। कांग्रेस ने हिंदुओं के आंसू पोंछने के लिए यूनिवर्सिटी पर दो लाख जुर्माना किया। इस घटना को दो वर्ष होने को आए कांग्रेस पूरी ताकत लगाकर भी एक पाई तक वसूल न कर सकी। इलाहाबाद में मुसलमानों पर उपद्रव का टैक्स लगाया गया, मुसलमानों ने टैक्स देने से साफ इंकार कर दिया। कांग्रेस मुंह देखती रह गई एक कानी कौड़ी तक न मिली। उधर हापुड़ में स्पष्ट रूप से मुसलमानों की ओर से पहल होते हुए भी कांग्रेसी सरकार ने केवल हिंदुओं पर ही दो लाख रुपया दंड लगाया और असलियत को जाने बिना अगले दिन पुलिस यह दंड वसूल करने भी लग गई। मैं कहता हूं क्या यह अन्याय नहीं? गढ़मुक्तेश्वर के लिए कांग्रेस ने तहकीकाती कमेटी बिठाई। डासना में एक भी आदमी को गिरफ्तार तक न किया गया। यह एक ही शहर का रोना नहीं कांग्रेस हकूमतों में नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में यही अन्याय का राज्य है। जिन लोगों की बोटों से पन्तजी प्रधान बने,जिन लोगों की वोटों से कांग्रेस ने इतना बड़ा रुतवा पाया उन्हीं के प्रति ऐसा अन्याय और ऐसा विश्वासघात......।''

जोश में वह और न जाने क्या कुछ बोल जाते। मैंने उनके जोश को ठंडा करते हुए कहा-भाई साहिब! हकूमत करना और चीज है, हकूमत पर नुक्ता चीनी करना बिल्कुल दूसरी चीज है। कांग्रेस के प्रति आपका रोष मिथ्या कदापि नहीं। यह दिल भी आप के ही समान इस दर्द से भरा है, लेकिन इस बात को आप न भूल जाइए, इसी कांग्रेस के कर्णधार सेवाग्राम के संत महीनों से नवाखली में धूनी रमाए बैठे हैं। अस्सी वर्ष की आयु में ग्राम-ग्राम पैदल घूमते हुए, पाकिस्तान की उस भूमि को ''रघुपति राघव राजा राम'' के जयगान से परम पवित्र बनाने का यज्ञ रचाए हैं। जिन हिंदुओं के लिए आप इतने चिंतित हैं। आप ही बताइए 90 लाख साधुओं में से कितने राम के भगत पूर्वी बंगाल पहुंचे। लाखों विधवाएं दु:खी हैं, करोड़ों अनाथ और हरिजन दु:खी हैं, गरीब अनाथ और दलित दु:खी हैं। इन हिंदुओं ने क्या अपने हिंदू भाइयों पर कभी तरस खाया? घर में बैठे-बैठे बातें करना आसान है, आप जरा प्लेटफार्म पर कांग्रेसी राज्य के विरुद्ध एक अक्षर तो कहकर देखिए। आपके कथन की यथार्थता को मानते हुए भी कोई हिंदू आपकी बात तक सुनने को तैयार

न होगा। आप इस विषय में कोई पुस्तक लिखिए, कोई उसको पढ़ने तक को तैयार नहीं। हिंदुओं पर कांग्रेस का वह रंग चढ़ चुका है जिसे कोई भी कैमिकल एक्शन उतार नहीं सकता। कांग्रेस के नशे में तो हिंदुओं ने भाई परमानंद और श्यामा प्रसाद मुखर्जी तक की जमानतें जब्त करवा दीं। सिंध की लीगी वजारत ने 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पाबंदी लगाई, अगर हिंदुओं को यत्किंचित् भी अपने भले-बुरे का ज्ञान होता तो वे कम से कम दो प्रांतों में बंबई और बिहार में हिंदू महासभा का मंत्रीमंडल बनने देते। सिंध की लीगी वजारत से बंबई के मराठा टक्कर लेते, बंगाल से बिहार निपट लेता। सिंध में अगर 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पाबंदी लगती तो बंबई कुरान पर पाबंदी का एलान कर देता। लीगी वजारत के होश एक ही दिन में ठिकाने लग जाते। जिन हिंदुओं की आप चिंता करते हैं, क्या खुद उन्हें कभी भी अपनी चिंता हुई। जाइए और इन्हीं हिंदुओं से जरा पूछिए लीगी प्रांतों में हिंदुओं की जान की रक्षा करने के लिए क्या वे हिंदुस्तान के किसी एक प्रांत में हिंदू महासभा का मंत्रीमंडल बनाने को तैयार हैं? यदि नहीं तो मैं आप से पूछता हूं बताइए हिंदुओं के सर्वनाश के लिए, हिंदू देवियों के अपहरण, सिंध में 'सत्याथ प्रकाश' की जब्ती, नवाखाली तथा पूर्वी बंगाल के अन्य उत्पातों के लिए अपराधी कौन?

शाम के साढ़े चार बजे से सुहागपुर की चौपाल में ग्राम की पंचायत उस देवी की किस्मत का फैसला करने के लिए बैठी। सारी रात बीत गई। प्रातः के 6 बज गए लेकिन हिंदू समाज का चीफ कोर्ट नौन स्टाप इमरजैंसी डिस्कशन के पश्चात् भी किसी निर्णय पर पहुंच न सका। मीटिंग खत्म नहीं हुई-वह अभी चालू थी। अभियुक्त को फांसी के तख्ते पर लटकाए बिना वह समाप्त कैसे हो सकती थी।

बात केवल इतनी ही थी एक 18 वर्ष की लड़की, जिसके पति का दो वर्ष पहले देहांत हो चुका था उसके पुत्र पैदा हुआ। परमात्मा की लीला भी कितनी विचित्र है। जो चाहते नहीं, जो मांगते नहीं उनकी इच्छा के विपरीत परमात्मा छत फाड़कर उनके घर में डाल जाता है। जो मांगते हैं, तरसते हैं अनेक प्रकार के अनुष्ठान करते

हैं, परमात्मा उनकी ऐप्लीकेशन पर गौर तक किए बिना उसे रद्दी की टोकरी में डाल देता है। उस देवी ने परमात्मा के दरबार में कोई प्रार्थनापत्र नहीं भेजा था, तथापि परमात्मा ने उसे एक पुत्र का परमिट दे ही दिया।

संसार में शायद एक भी देवी ऐसी न होगी जिसके हृदय में माता बनने की लालसा न हो। यदि मेरे इस कथन के विपरीत संसार में कोई है भी वह देवी नहीं पाषाण की मूर्ति ही हो सकती है। विधवा और सधवा का विचार तो हमारी अपनी ही कल्पना मात्र है। समाज की गति को नियंत्रण में रखने के लिए हमीं ने कुछ एक नियम बना रखे हैं, परंतु एक ही नियम तीन काल के लिए पत्थर की लकीर नहीं बन जाता। देश काल को ध्यान में रखते हुए ही उस नियम की उपयोगिता परखी जा सकती है। समाज के नियम मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिए हैं न कि उसे बंधन में डालने के लिए। यदि कोई व्यक्ति, स्त्री हो अथवा पुरुष, समाज के बनाए हुए नियम को अपने ऊपर अत्याचार समझता है उसे अधिकार है वह उन नियमों के प्रति विद्रोह करे।

हां! तो मैं हिंदू समाज के उस चीफ कोर्ट का वर्णन कर रहा था। मैं उस चौपाल के पास से गुजरा थोड़ी ही देर में मैं सारा मामला भांप गया। एक बूढ़े बाबा जोर-जोर से धर्म-धर्म की दुहाई मचा रहे थे। मैंने कहा बाबा! आखिर कौन सी प्रलय आ गई। बोला, अजी! विधवा के लड़का हुआ। मैंने कहा लड़का तो हो चुका अब तुम चाहते क्या हो-"हम इस औरत को बिरादरी में नहीं रहने देंगे। मैंने कहा, बाबा! एक क्षण के लिए मान लो कि बेचारी औरत से थोड़ी-सी भूल हो भी गई, लेकिन वह बिरादरी को कुछ दे ही रही है, छीन तो नहीं रही। तुम इस लड़की को दंड देना चाहते हो, लेकिन जो बालक अभी धरती पर आया ही है, जो अभी तक अच्छी तरह मां के स्तन का दूध तक पीना नहीं सीखा उसे तुम कौन से अपराध में दंड दे रहे हो? माता-पिता के दोष के लिए निर्दोष पुत्र को फांसी पर क्यों चढ़ाया जाए? उस औरत को बिरादरी से निकाल देने पर आखिर बिरादरी का कौन सा भला हो जाएगा?

"हम ऐसे चरित्रभ्रष्ट लोगों को बिरादरी में नहीं रख सकते" "लेकिन जो चरित्रभ्रष्ट लोग अपने रुपए के जोर पर चुंगी और बोर्ड के मैंबर बने हैं उनके सामने जाकर तुम लोग काहे को नाक रगड़ा करते हो? बिरादरी से निकलकर वह औरत रहेगी तो इस शहर में। अगर वह इसी मुहल्ले में भी रहना चाहे तो आप उसका कुछ भी बिगाड; नहीं सकते। अच्छा तो यही है, तुम लोग उस देवी को हौसला दो ताकि

वह अपने नवजात शिशु का भली प्रकार से पालन पोषण कर उस बालक को भावी भारत का राष्ट्रपति बनाए।''

''लेकिन इस औरत ने जो पाप कर्म किया है''

''पाप कर्म नहीं किया, बल्कि बड़े से बड़ा पुण्य कर्म किया है। इसने हमारी जाति को एक रत्न दिया है। यह देवी है, हमें इसके प्रति आभार मानना चाहिए। आज वोट युग है। जिन लोगों की गिनती ज्यादा होगी उन्हीं के हाथ में राज-शक्ति होगी। जो कर्म हमारी संख्या को घटाता है वह पाप है, जो हमारी संख्या में वृद्धि करता है वह धर्म है। पाप और पुण्य की यही कसौटी है।''

लेकिन मेरे समझाने का उन लोगों पर कुछ भी असर न हुआ। पंचायत के कुछ आदमी जरूर मेरी हां में हां मिलाने लगे, लेकिन असली समझना तो औरतों का होता है। औरतों को समझाए कौन-मुझे जो दु:ख हुआ, नहीं जानता शब्दों में कैसे प्रगट करूं।

पूरे पांच वर्ष पश्चात् एक बार मैं उस लाइन से गुजर रहा था। पुरानी स्मृतियां फिर से ताजा हो गई। सुहागपुर में मैंने एक दिन ठहरने का निश्चय किया। मेरी शंका सोलह आना सत्य निकली, हिंदू समाज के इन चौधरियों ने उस देवी को बिरादरी से खारिज करके ही दम लिया। आखिर वह देवी एक मुसलमान स्कूल मास्टर के हत्थे चढ़ गई। मैंने उस बालक को जिसके जन्म के समय उसकी मां को बिरादरी से खारिज किया गया था, देखा। वह कितना सुंदर था मानो वह साक्षात् देव बालक प्रतीत होता था। उस बालक का नाम था अश्फाक। यदि अश्फाक के स्थान पर उसका नाम रमेश होता, उस बालक को आशीर्वाद देकर मुझे कितना आनंद प्राप्त होता, परंतु अब उसका नाम अश्फाक था। अत्याचारी समाज की वह जीती-जागती निशानी था। उस बालक को देखते ही पहले तो मुझे बेहद खुशी हुई परंतु तत्काल ही वह खुशी एक अवर्णनीय दु:ख में बदल गई। दिल में खयाल आया यदि यह बालक बड़ा होकर और असलियत को जानकर अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए दिल्ली के मौला का रूप धारण कर ले तो हमारे उस सर्वनाश के लिए अपराधी कौन?

कल जब मैं ट्राम से उतरा, मैंने देखा बाड़ा हिंदुराव में दूर-दूर तक हरे रंग की झंडियां लगी हैं। स्वागत द्वारों का निर्माण हो रहा है, बिजली के रंग-बिरंगे बल्ब भी फिट किए जा रहे हैं। मैंने ट्राम से उतरते ही एक मियां भाई से पूछा-कहो भाई, आज क्या बात है? जवाब मिला- आज कायदे आजम की इकहत्तरवीं साल गिरह है। मैंने कुछ भी नहीं कहा, चुपचाप करोलबाग की ओर चल दिया। दूसरों के बारे में तो मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं, परंतु नवंबर के उपद्रवों में बाड़े के टांगे वालों ने जो-जो गुल खिलाए, मैंने यह निश्चय किया है कि जीवन पर्यंत कभी किसी मुसलमान के तांगे पर नहीं बैठूंगा। उस रोज यद्यपि रात्रि सामने प्रत्यक्ष दीख रही थी, और मंजिल अभी तीन मील तय करनी थी तथापि मैंने बड़ी तेजी से पैदल ही मंजिल की ओर बढ़ना शुरू किया। तभी एक सरदार जी मिल गए, उन्होंने भी करोलबाग जाना था। सोचा, अच्छा ही हुआ एक साथी तो मिला, और वह साथी भी कृपाणधारी सिंह।

दस बारह-कदम चलने पर सरदार जी बोले-यह जिन्ना न जाने कहां से टपक पड़ा। हमारी उमर भी पचास के लगभग होने को आई। 20 वर्ष तो दिल्ली में ही रहते हो गए। जिन्ना की सालगिरह भी एक दो साल से ही मनाई जाती देखी।

मैंने कहा-सरदार जी, यह दिन तो आना ही था, अच्छा हुआ हमारे सामने ही आ गया।

''लेकिन यह दिन आया ही क्यूं।''

मैंने कहा-सरदार जी, यह दिन आना ही था। हमारी गलतियों ने यह दिन लाना ही था। माता ने लड़के को स्कूल में भेजा। लड़का था शरारती, उसने मचाया शोर या कर बैठा कोई और गुस्ताखी। मास्टर ने उसको दंड देते हुए उसका नाम ही स्कूल के रजिस्टर से काट दिया। लड़के ने बहुतेरी-अनुनय विनय की। बहुतेरे हाथ पैर जोड़े। ''मास्टर जी, मुझे बैंच पर खड़ा कर दो, मास्टर जी? मेरे दो चार

बेंत मार लो, मास्टर जी, मुझे जो चाहे दंड दे लो लेकिन मुझे स्कूल से न निकालो, इससे मेरा जीवन ही नष्ट हो जाएगा। मेरे में दोष हैं तभी तो मेरे मां-बाप ने मुझे यहां आपके पास भेजा। अगर मैं पहले ही समझदार होता तो यहां काहे को आता। आपका फर्ज है, आप अच्छे तरीके से मेरे दोष को दूर करने का यत्न कीजिए। लेकिन मास्टर माना नहीं। उसने तीन-चार लड़कों की मदद से उस बालक को कमरे से बाहर निकाल दिया। उसका नाम रजिस्टर से काट दिया और साथ में यह भी लिख दिया कि जिस बालक को आज निकाला गया है, जब तक सूर्य और चंद्रमा रहें, तब तक यह बालक तथा इसके वंश का कोई भी बालक इस स्कूल में दाखिल न किया जाए। लड़के ने फिर भी हाथ जोड़कर कहा-मास्टर जी, कसूर मैंने किया, आप मेरी आने वाली संतान को उनके किस अपराध में दंड दे रहे हैं। उनके जन्म से पहले ही आपने कैसे अनुमान लगा लिया कि वे भी ऐसा ही शोर मचाएंगे। क्या जरूरी है कि चोर का लड़का चोर ही हो? क्या जरूरी है कि साधु के घर साधु ही पैदा हो? क्या हिरण्यकशपु के घर प्रहलाद नहीं पैदा हुआ? क्या उग्रसैन के घर में कंस नहीं जन्मा? लेकिन मास्टर ने कुछ न सुनी। वह अपनी हठ पर बराबर कायम रहा।

बालक ने बाहर खड़े-खड़े भी बहुत संतोष किया, बहुत अनुनय विनय की परंतु सब बेकार। आखिर निराश होकर वह किसी अज्ञात स्थल की ओर चल दिया। ऐसे को तैसा मिले कर-कर लम्बे हाथ। आगे कुछ दूर जाने पर उसे एक आदमी मिला। वह भी पहले इसी स्कूल में पढ़ता था, उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया था। उस आदमी ने उस बालक को संतोष देते हुए कहा-तुम चिंता मत करो। उस पहले स्कूल का खयाल बिल्कुल भूल जाओ। तुम्हारे लिए मैंने एक नया स्कूल खोला है। इस स्कूल में न कोई फीस है, न कोई डिसिप्लन है और न ही नियम पूर्वक कोई पढ़ाई का कोर्स ही है। एक बार स्कूल में जाकर नाम लिखा दो, फिर सालभर जहां चाहो दुडंगे लगाते फिरो। साल बाद जब नतीजा बोलेगा तो बस पहली से लेकर दसवीं तक सारे ही पास। इस स्कूल का नाम है-पाकिस्तान।

उस पाकिस्तानी स्कूल में दाखिल होकर भी वह बालक पहले स्कूल में जाने को तड़प रहा था। अनेक बार वह पहले स्कूल के मास्टर के पास गया। कहा-अब तो दरवाजा खोल दो। मास्टर ने कहा-दरवाजा नहीं खुल सकता। स्कूल की ईंट से ईंट भले ही बज जाए, दीवार तोड़कर, छत फाड़ कर भले ही भीतर आ जाओ, अपने

हाथों से दरवाजा नहीं खोलूंगा। निराश होकर वह बार-बार उसी पाकिस्तानी स्कूल में लौट आता रहा। आखिर वह बिल्कुल निराश हो गया, उसने पहले स्कूल का खयाल ही दिल से भुला दिया। पाकिस्तान के स्कूल में पढ़ता हुआ वह पाकिस्तान के गीत गाने लगा। कितने ही मलकाने, कितने ही राजपूत, मेवाती, वर्षो से हिंदू बनने को तड़पते रहे, हमने उनकी कुछ भी परवाह न की-सरदार जी, अब आप ही सोचिए आज यही शेखसाहिबान अगर पाकिस्तान के शहंशाह का जन्म दिन मनाते हैं तो इसके लिए अपराधी कौन?

दिल्ली में अन्य बातों का भले ही कष्ट हो, परंतु मुफ्त अखबार पढ़ने की तो बड़ी ही मौज है। फतेहपुरी में आप चांदनी चौक की ओर जाने वाले ट्राम-स्टॉप पर दो मिनट खड़े होकर एक ही नजर में देश भर के सभी अखबार पढ़ जाइए। अखबार पढ़ना भी आजकल के सभ्य सांसारिकों का एक अमल-सा बन गया है और फिर मुफ्त का अखबार...काजी साहिब ने तो मुफ्त की शराब तक न छोड़ी थी फिर भला मुफ्त की अखबार कौन छोड़े। दिल से मैं अखबारों के बहुत विरुद्ध हूं। यदि किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से हिंदुस्तान के सभी अखबार बंद हो जाएं, मुझे सबसे ज्यादा खुशी होगी। यदि आज सभी अखबार बंद हो जाएं, मेरा देश दो ही दिन में स्वर्ग बन जाए। यदि हमारे देश में अखबार का और छापेखाने का रिवाज न चलता, मेरा खयाल है मेरा देश कभी का आजाद हो चुका होता। अखबारों ने ही जिन्ना को कायदे आजम बनाया, अखबारों ने ही दो कौड़ी कीमत के आदमियों को आसमान पर चढ़ाया। अखबारों ने ही एक दूसरे पर कीचड़ उछाल कर भाई को भाई से लड़ाया।

अब तो मुझे अखबार पढ़ने का उतना शौक नहीं, परंतु फिर भी फतेहपुरी का चक्कर तो रोज ही लगा आता हूं। कल जब मैंने अखबारों पर नजर दौड़ाई, मिलाप की सुर्खी पढ़ कर मेरा दिल बैठ सा गया- ''कांग्रेस की मुस्लिम लीग को नई पेशकश।'' मेरे दिल पर बहुत चोट लगी। पास ही में एक दूसरे सज्जन खड़े थे,

बोले–कांग्रेस फिर वही गलती करने जा रही है। मैंने कहा, निश्चय रखिए कांग्रेस फिर वही गलती नहीं करेगी। यह सब अखबारी प्रोपेगंडा है। आजकल अखबारी दुनिया में बड़ा भारी कंपीटीशन है। कोई जमाना था लाहौर से केवल दो अखबार निकलते थे, अब उसी लाहौर से पूरे एक दर्जन दैनिक तो उर्दू के ही निकलने लगे। अखबार अपनी सुर्खियों के कारण ही बिकते हैं। खबर में कुछ असलियत हो या न हो, अखबार वाले ऐसी सुर्खी जरूर देंगे, जिससे पढ़ने वाले के जिस्म में सनसनी–सी पैदा हो और पूरा हाल जानने के लिए एक दवन्नी निकाल कल वह जरूर ही एजेंट महोदय की भेंट चढ़ा दे।

मैंने तो अखबार खरीदा नहीं परंतु साथ वाले आदमी ने दवन्नी निकाल ऐजेंट की ओर फेंक ही दी और अखबार उठा लिया। मोटी खबर के नीचे छोटी सुर्खी थी–''ग्रुपबंदी के सवाल पर कांग्रेस अंग्रेज के सामने झुक जाएगी''–फिर खबर थी–''गुटबंदी के बारे में कांग्रेस मंत्री मिशन के 6 दिसंबर वाले एलान को मान लेगी'' अखबार हाथ में लिए हम दोनों कंपनी बाग की ओर चल दिए। वे महाशय बोले–तो आसाम को लीग के हवाले कर दिया जाएगा? मैंने कहा–आपने कुछ दिन पहले गांधी जी का वह संदेश पढ़ा था जो उन्होंने आसाम के संबंध में आसाम वासियों के नाम प्रकाशित किया था–

''आसाम को कभी भी बंगाल के प्रति आत्म समर्पण नहीं करना चाहिए। अगर आसाम में मर्द रहते हैं तो मर्दानगी के साथ उन्हें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी होगी, संसार भी अगर अपना सारा जोर लगाकर आसाम को बंगाल के साथ बांधना चाहे तो आसाम को पूरी ताकत के साथ आत्मरक्षा करनी चाहिए। ऐसी प्रेरणा देते हैं तो आसाम वासियों को गांधी की बात भी नहीं माननी चाहिए। विधान परिषद् के गुटों में विभक्त होते ही आसाम को परिषद् से अलग हो जाना चाहिए। गांधी महाराज द्वारा ऐसी स्पष्टोक्ति के पश्चात् इस प्रकार की खबर बिल्कुल निराधार है।''

''लेकिन कौम्यूनल एवार्ड के संबंध में भी तो कांग्रेस ने आरंभ में ऐसी ही दृढ़ता दिखाई थी, पीछे Neither accepted nor Rejected रद्द न कबूल का बहाना बना आखिर कांग्रेस ने कौम्यूनल एवार्ड रूपी विष का प्याला पी ही लिया। अगर आसाम को बंगाल के हवाले करना अन्याय है तो शत प्रतिशत बंगाली डाक्टरों, बैरिस्टरों, प्रोफेसरों, साहित्यकों, आचार्यों को बिल्कुल निरक्षर तुअस्सवी, अयोग्य लोगों की मताहती स्वीकार करने के लिए मजबूर करना क्या यह अन्याय नहीं?

यू.पी. के 14 प्रतिशत मुसलमानों को 40 प्रतिशत और पंजाब में 49 प्रतिशत हिंदुओं को 39 प्रतिशत सीटें देना क्या यह अन्याय नहीं? केंद्र में 10 करोड़ हरिजनों को एक सीट और चार-पांच करोड़ लीगियों को पांच सीट देना क्या यह अन्याय नहीं? और क्या कांग्रेस ने इस अन्याय को स्वीकार नहीं किया? लीग ने स्वयं ही घर बैठे जब हिंदुओं को Caste Hindus और Non Caste Hindus सवर्ण तथा अवर्ण इन दो हिस्सों में बांट दिया, क्या कांग्रेस ने शिमला सम्मेलन के समय इसे स्वीकार नहीं किया? जब पहले भी इतने अन्यायों को अन्याय समझती हुई भी कांग्रेस उन्हें सहर्ष स्वीकार कर चुकी है, फिर यदि आज आसाम के बारे में भी हमारे दिल में वैसा ही संदेश पैदा होता है तो आप ही बताइए महाशय! इस संदेश को हमारे हृदयों में जागृत करने के लिए अपराधी कौन?

मैंने कहा, पीछे जो कुछ हुआ सो हुआ। कांग्रेस में अब इतनी हिम्मत आ गई कि वह सार्वजनिक रूप से अपनी गलती को माने। अभी जवाहरलाल एटली के विशेष निमंत्रण पर लंदन गए, उन्हें नहीं जाना चाहिए था। जवाहरलाल ने खुले आम अपनी इस भूल को स्वीकार किया।

''लेकिन मेरा संदेश भी झूठा नहीं महाशय! कांग्रेस में मुसलमानों का जो फिफ्थ कालम शामिल है वही कांग्रेस की कमजोरी का कारण है। जवाहरलाल, पटेल, राजेंद्र प्रसाद, गांधी महाराज की महानता में, दूरदर्शिता तथा न्याय प्रियता में कोई संदेह नहीं। खान अब्दुलगफारखां, मौलाना आजाद, डॉक्टर खान साहिब का व्यक्तित्व चंद्रमा के समान निर्मल है, परंतु जमीयतुल-उलेमा, अहरार, खाकसार तथा कुछ एक तथाकथित आजाद और कौम परस्त मुसलमान ऐसे वक्तों में कांग्रेस की दृढ़ता को डांवाडोल कर देते हैं, अपने को सच्चा मुसलमान और पक्का मुसलमान साबित करने के लिये वे कांग्रेस पर अपना दबाव डालते हैं, वे इस बात की धमकी देते हैं, यदि कांग्रेस ने उनकी बात नहीं मानी वे सर्वसाधारण मुसलमानों की दृष्टि में गिर जायेंगे। कांग्रेस को छोड़ कर वे लीग में शामिल हो जाएंगे। ऐसी बातें सुनकर कांग्रेस का दिल हिल जाता है। जो काम मुस्लिम लीग से अपूर्ण रह जाता है उसे यह कौम परस्त पूरा कर देते हैं। इन लोगों ने लीग की अन्याय पूर्ण मांगों की कभी भी मुखालफित नहीं की। एक भी मुसलमान ने इस बात का प्रौटेस्ट नहीं किया कि 90 प्रतिशत हिंदू संख्या वाले आसाम को क्यूं बंगाल के साथ बांधा जाता है। विपरीत इसके मौलाना हिफजुर्रहमान से लेकर अल्लामा मशरकी तक सभी लोग, गुटबंदी

के प्रश्न पर कांग्रेस ने जो दृढ़ता दिखाई है इसके लिए कांग्रेस को ही बुरा-भला कह रहे हैं। मुसलमान मानों दोनों हाथों से खा रहे हैं। लीग अंग्रेज से बहुत कुछ ले लेती है और उस अन्याय की मांग पर कौम परस्त कांग्रेस द्वारा स्वीकृति की मोहर लगवा लेते हैं। सन् 27 से बराबर इनकी यही नीति रही है। कांग्रेस शायद जिन्ना के साथ बात न करती,उसे इतना महत्त्व न देती परंतु इन्हीं कौम परस्तों ने कांग्रेस को मजबूर किया कि वह जिन्ना के साथ बात-चीत करे। लीगियों तथा दूसरी तथा कथित कौम परस्त मुस्लिम जमायतों के भेद कुछ भी नहीं। शत प्रतिशत मुसलमान पक्के मुसलमान हैं और सबके सब पाकिस्तान अर्थात् इस्लामी प्रभुत्व के पक्के पक्षपाती। कांग्रेस आजादी की तरंग में मस्त है। उसके सिर पर केवल एक ही धुन सवार है, जैसे भी हो सके अंग्रेजों को हिंदुस्तान से निकाला जाए। भले ही सारा हिंदुस्तान नवाखली और ढ़ाका का नमूना बन जाए।

''मैंने कहा-''भाई साहिब, यह सब आपका भ्रम है। कांग्रेस आसाम के मामले पर नहीं झुकेगी।''

यदि उसमें ऐसी दृढ़ता थी तो उसे मई सन् 46 में ही ब्रिटिश योजना को ठुकरा देना चाहिए था। 16 मई के बयान में मंत्री मिशन ने साफ-साफ कह दिया था कि आसाम बंगाल के साथ रहेगा। यही नुक्ता तो बंदर के विचार के समान मिशन की योजना का आधार है। अंग्रेजों की दोनों तरह मौज है। अगर कांग्रेस ने 6 दिसम्बर वाली व्याख्या को मान लिया तो समझिए लीग-ब्रिटिश संघ ने बिना तोप और तलवार चलाए आसाम को फतह कर लिया। यदि कांग्रेस ने उसे स्वीकार न किया तो विधान-परिषद् की योजना ही वापिस ले ली जाएगी। कांग्रेस इस बात को जानती है। कौम परस्त मुसलमान अंग्रेज की चाल को फेल कर देने का बहाना बना कर कांग्रेस को लीग के प्रति आत्म समर्पण की सलाह दे रहे हैं। अब तक के लक्षण तो यही बता रहे हैं कि कांग्रेस 6 दिसम्बर वाले एलान को मान लेगी। परमात्मा करे वह न माने, परंतु यदि कौम्युनल एवार्ड के समान ऊटपटांग-सा बहाना बना कर उसने आसाम को लीग के हवाले कर ही दिया तो आप ही बताइए महाशय इस हिंदुस्तान में पाकिस्तान की स्थापना करने के भीषण अपराध का अपराधी कौन?

''क्या हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे हट रहे हैं। मंत्री-पद ग्रहण करने से हमारी स्थिति सुदृढ़ नहीं बल्कि कमजोर हो गई। कदम-कदम पर हमारे नेताओं को ब्रिटिश सरकार के छिपे हुए किंतु वास्तविक विरोध का मुकाबला करना पड़ा है। कांग्रेसियों को उन लीगियों के साथ एक ही सरकार में मिलकर काम क्यों करना चाहिए जोकि प्रांतों में कांग्रेस सरकार का विरोध कर रहे हैं तथा लोगों को जघन्य हिंसा व बर्बरता के लिए उकसा रहे हैं। हम यह नहीं चाहते कि आप पदत्याग कर दें,पर हम चाहते हैं कि अपनी नीति बदल डालें।''

-मा. मोतासिंह

''भारत कभी भी शांतिपूर्ण उपायों से ब्रिटेन से आजादी हासिल नहीं कर सकता। हमें अंत:कालीन सरकार से अलहदा होकर ब्रिटिश सरकार से लड़ना होगा। पं. नेहरू के कल के भाषण से मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि अनेक परीक्षणों के बाद कांग्रेस आखिर अपनी 8 साल पुरानी जगह पर ही लौट आई है।''

-पटवर्धन

3

पाराशर-स्मृति

कृते तु मानव धमास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।
द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः।।

प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से विराट् पुरुष ने घोर तप करके 10 महर्षियों को सर्वप्रथम उत्पन्न किया। इन दश प्रजापतियों ने सात मनु, देवताओं तथा ब्रह्मर्षियों को उत्पन्न किया। पूर्वजन्म के शुभकर्मों का फल देने के लिए उस परमात्मा ने कल्पना मात्र से स्वर्ग की रचना की। इस स्वर्ग का नाम उसने आर्यावर्त रखा। यह पुण्य भूमि भारत ही वास्तव में स्वर्ग है। अनेक जन्मों के संचित शुभ कर्मों के फल स्वरूप ही मनुष्य को इस पवित्र स्वर्ग–पुरी में जन्म मिलता है।

आदि सृष्टि में इस समस्त धरती पर आर्यों का निवास था। महाभारत पर्यंत समस्त भू मंडल पर एक मात्र भारतीय आर्यों का प्रभुत्व रहा, चंद्रगुप्त-अशोक तक भी भारत गौरवशाली रहा। दाहर, हर्ष तथा भोज तक भी वह गौरव बना रहा, परंतु दाहर के पश्चात् वह गौरव नष्ट-भ्रष्ट हो गया। पृथ्वीराज, प्रताप, शिवाजी महाराज, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविंद सिंह, वीर बंदा वैरागी, स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारत को पुनः गौरवशाली बनाने का पूरा-पूरा यत्न किया, परंतु दुर्देव टला नहीं, गुलामी का पिशाच पहले से भी अधिक अपने पांव जमा रहा है।

जिस समय धरती बनी ही थी, उसके पुत्र परस्पर प्रेम से रहते; न कोई राजा था, न कोई प्रजा थी, न कोई अपराध था और न ही अपराधी। संसार का व्यवहार सत्य से परिपूर्ण था। उस युग को सत्‌युग कहते थे। पुनः जब सत्य ने राजनीति का पर्दा ओढ़ लिया। सांसारिक प्रभुता पाने के लिए संघर्ष चले। उस संघर्ष में भारत सब देशों का सिरमौर था वह त्रेतायुग था। पुनः जब अपने देश के बाहर हमने स्वयं ही अपना प्रभुत्व ढीला कर दिया, परंतु अपने देश में हम स्वतंत्र थे वह द्वापर युग था, पश्चात् जब ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ के वशीभूत हो हमने अपने हाथों अपनी स्वाधीनता को नष्ट करके मध्य एशिया से आये हुए मूर्ख, उजड्ड, असभ्य मुगलों की पराधीनता स्वीकार की तब से कलियुग का आरंभ हुआ।

सत्‌युग में केवल एक ही वर्ण था, त्रेता, द्वापर में चार वर्ण थे। कलियुग में स्वदेशी शरीर तथा विदेशी विचार वाला एक पांचवां वर्ण संकर भी उत्पन्न हुआ जिसे ''मुसलमान'' कहा जाता है। वर्णों में ऊंच-नीच का भेद कुछ नहीं। मशीन को चलाने के लिए जैसे सभी पुर्जे अपने अपने स्थान पर श्रेष्ठ हैं, वैसे ही समाज की रचना के लिये प्रत्येक वर्ण समान रूप से मूल्यवान् हैं।

जन्म से सभी शूद्र हैं, पश्चात् गुण, कर्म स्वभावानुसार मनुष्य का वर्ण निश्चित किया जाता है। ब्राह्मण के घर में पैदा हुआ नीच वृत्ति का पुत्र शूद्र है और शूद्र कुल में उत्पन्न हुआ आचारवान् तथा विद्वान् पुत्र ब्राह्मण है। एक ही जन्म में एक ही मनुष्य ब्राह्मण भी हो सकता है, क्षत्री भी, वैश्य भी और शूद्र भी।

वर्ण तथा आश्रम व्यवस्था समाज के लिए अत्यंत लाभप्रद है, परंतु यदि राजा भी वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा का पालन करने वाला हो तब। राजा की सहायता तथा सहयोग के बिना वर्णाश्रम धर्मका पालन असम्भव ही है अतः वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था का विचार बिल्कुल उठा देना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए वह अपने

नाम के साथ पंडित, लाला इत्यादि किसी शब्द का प्रयोग न करे।

वर्ण धर्म के समान ही आश्रम धर्म का पालन भी बिना राज्य की सहायता के सर्वथा असंभव है, पराधीनता के युग में गुरुकुलों तथा ऋषि-कुलों की सफल स्थापना असंभव है। आर्य समाज, सनातन धर्म इत्यादि संस्थाओं को चाहिए कि वे सरकारी पढ़ाई के साथ-साथ प्रतिदिन दो घंटे धार्मिक ज्ञान में भी विद्यार्थियों को दक्ष करें। सभी धार्मिक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी ही होना चाहिए।

कन्याओं को अवश्य ही शिक्षित करना चाहिए, परंतु कन्याओं की शिक्षा बालकों की शिक्षा से बिल्कुल भिन्न होनी चाहिए। कन्याओं को अंग्रेजी पढ़ाना बुरा है और उर्दू पढ़ाना पाप है। हिसाब, विदेशी, जुगराफिया, जौमेट्री, अलजेबरा कन्याओं को नहीं पढ़ना चाहिए। धार्मिक शिक्षा कन्याओं को अवश्य ही सिखानी चाहिए। बालक तथा बालिकाओं की शिक्षा पृथक्-पृथक होनी चाहिए। सह शिक्षा अच्छी नहीं।

उत्तम गुणवती कुलीन घर की कन्या के पिता को चाहिए कि कन्या के अनुरूप शुभ गुणों से युक्त, वेद-वेदांग पढ़े, बुद्धिमान्, सबको प्रिय लगने वाले, जिसके नपुंसक न होने की किसी यत्न से परीक्षा की गई हो ऐसे युवावस्था के वर को खोज कर विवाह करे।....

प्राचीन काल में बारात लेकर जाने का रिवाज न था, यह रिवाज मध्य काल की आवश्यकता थी। अब इस रिवाज की आवश्यकता नहीं, कन्यापक्ष वालों से परिचय प्राप्त करने के तौर पर केवल पांच सात मुख्य मुख्य सज्जनों का एक दिन के लिये जाना बहुत काफी है। विवाह में सब प्रकार का आडंबर वर्जित है, संपूर्ण विवाह की क्रिया पर पंद्रह बीस रुपए से अधिक कदापि खर्च नहीं करना चाहिए।

गहने और कपड़े को जिन दिनों स्त्री धन का रूप दिया गया था उन दिनों चांदी पांच पैसे तोला थी और सोना दो-तीन रुपए तोला था। कीमती कपड़े तैयार हो जाने के बाद किसी काम के नहीं रहते, सोना 105 रुपए तोला मिलता है अतः स्त्री धन का दृष्टिकोण अब बदल जाना चाहिए। सच बात तो यह है कि पति का चरित्र ही स्त्री का सबसे श्रेष्ठ स्त्री धन है। जिस देवी को यह रत्न प्राप्त है वह सदा सुखी है। तथापि अकस्मात् विपत्तिकाल में कन्या के लिए पिता को अपनी देखरेख में एक विशेष रकम बैंक में जमा करा देनी चाहिए।

किसी के साथ विधिवत् विवाही हुई कन्या को यदि कोई अन्य को देने के लिए किसी प्रकार ले आवे तो राजा उसे चोर के तुल्य दंड दे। यदि वाणी मात्र से कन्या

का दान किया हो परंतु सप्तपदी पर्यंत विवाह न हुआ हो तो उसी अवसर पर किसी दूसरे श्रेष्ठ वर से कन्या विवाह दे। यदि कोई दोष युक्त लड़के को उसका दोष प्रकट किए बिना विवाह दे तो राजा वर पक्ष वालों को दंड दे और विवाह अनियमित घोषित किया जाए।

वर-वधू का चुनाव करते समय जातिपांति का ध्यान बिल्कुल नहीं करना चाहिए। कीचड़ में पड़ा हुआ रत्न क्या कोई छोड़ देता है? लाल गुदड़ियों में ही होते हैं। योग्य चरित्रवान् तथा गुणवान् संबंध जहां भी प्राप्त हो उसे स्वीकार करना चाहिए। हां! इतनी बात का ध्यान अवश्य ही रखना चाहिए कि जिस घर में संबंध किया जाए वहां का खान-पान, रीति-रिवाज, बोल-चाल अपने अनुकूल हों, अपने ही घर के समान हो। संबंध न तो बिल्कुल पास ही करना चाहिए और न ही बहुत दूर। पास होने में प्रीति नहीं रहती, दूर रहने में आवागमन का कष्ट होता है।

प्राचीन काल में इस देश में केवल चार वर्ण थे और इन चारों वर्णों के परस्पर संबंध होते थे। इतिहास में अनेक ऐसे दृष्टांत मिलते हैं, जब राजाओं ने ब्राह्मण कन्याओं से और ऋषियों ने राज परिवारों में विवाह किए। विदेशियों के साथ भी खुला संबंध होता था। आज परिस्थिति भिन्न है। एक पांचवां वर्ण मुसलमान भी बन चुका है। इस पांचवें वर्ण में चारों वर्णों के लोग हैं। इनमें से बाहर से आया हुआ एक भी नहीं। 10 प्रतिशत इनमें ब्राह्मण हैं, 20 प्रतिशत क्षत्री हैं, 20 प्रतिशत वैश्य हैं और 50 प्रतिशित शूद्र हैं। इन सबका रक्त और हिंदुओं का रक्त एक समान है अत: चारों वर्णों को किसी मुसलमान की कन्या से विवाह करना उत्तम ही है।

स्त्री का अपना कोई मजहब नहीं, पति का धर्म ही उसका अपना धर्म है। मुसलमान पिता के घर में पैदा हुई कन्या हिंदू पति को प्राप्त कर हिंदू ही बन जाती है। मुस्लिम घरों की भीतरी सामाजिक अवस्था, उनका खान-पान, रीति-रिवाज अनुकूल न होने के कारण किसी हिंदू कन्या का संबंध मुसलमान के साथ कभी न करना चाहिए। हां यदि कोई मुस्लिम परिवार बाकायदा शुद्ध होने के पश्चात् हिंदुओं के समान ही रहन-सहन बना ले तो उस परिवार के साथ संबंध स्थापित करने में कोई बुराई नहीं।...

विवाह के आठ प्रकार है, अपनी-अपनी हैसियत, स्वभाव तथा रहन-सहन को ध्यान में रखते हुए देश कालानुसारी किसी एक प्रकार से विवाह संपन्न करे। योग्य वर को अपने घर पर यथाशक्ति द्रव्य सहित कन्या का दान करना। '**ब्रह्म विवाह**'

कहाता है। एक या दो गौ बैल वर से लेकर विधिपूर्वक कन्या का दान **'आर्ष विवाह'** है। हम दोनों साथ-साथ अग्निहोत्रादि धर्म करेंगे, ऐसा कहकर सम्पन्न होने वाला विवाह **'देव-विवाह'** कहाता है। हम मिलकर गृहस्थ धर्म का पालन करेंगे, ऐसा कह कर कन्या के पिता से कन्या की याचना करने वाले वर को विधिपूर्वक कन्या देना **'प्रजापत्य विवाह'** कहाता है। कन्या के माता-पिता को कुछ द्रव्य देकर विधिपूर्वक कन्यादान **'आसुर विवाह'** कहाता है। कन्या और वर दोनों की परस्पर इच्छा से संयोग हो जाना **'गंधर्व'**, युद्ध में कन्या पक्ष वालों को जीतकर बलपूर्वक कन्या को ले आना **'राक्षस'** तथा छल-कपट से कन्या को ले आना **'पैशाच विवाह'** कहाता है। इन सब प्रकार के विवाहों में ब्रह्म तथा गंधर्व की प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है।.... आर्ष विवाह में वर से प्राप्त बैल कन्या के पिता को कन्यादान के रूप में लौटा देने चाहिए। अनेक प्रकार के विवाहों के समान प्राचीन शास्त्रकारों ने पुत्रों के भी अनेक प्रकार माने हैं और यह सभी प्रकार के पुत्र अपने पिता के प्रति एक समान अधिकार रखते हैं। विवाहादि संस्कार किए हुए अपने क्षेत्र में आप जिसको उत्पन्न करें, उसे औरस पुत्र कहते हैं। जो मृत अथवा नपुंसक की स्त्री में नियोग द्वारा संतान उत्पन्न की जाय उसे **क्षेत्रज**। माता व पिता आपात्काल में जिस समाज जाति वाले प्रीतियुक्त पुत्र को संकल्प करके दे दें वह **दत्तक**। जो पुत्र, पुत्र के समान मान लिया जाय वह **कृत्रिम**। जो गर्भिणी स्त्री से विवाह करे, उससे उत्पन्न वह **सहोढ**। जो घर में पैदा हो जाए परंतु उसके पिता का पता पीछे चले वह **गूढज**, कुंवारी कन्या से उस कन्या के माता-पिता की अनुमति प्रदान किए बिना जो संबंध करता है उससे जो पुत्र हो वह **कानीन**।

यदि कोई स्त्री-पुरुष अग्नि-साक्षी किए बिना ही परस्पर संबंध स्थापित करते हैं और वे उस संबंध के फल के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी निभाने को तैयार हैं, तो ऐसा संबंध निंदनीय कदापि नहीं। जिस प्रेम का उद्देश्य केवल वासनाओं की तृप्ति ही है उस प्रेम की अवश्य ही निंदा करनी चाहिए। तथापि उचित अथवा अनुचित सम्बन्ध द्वारा प्राप्त संतान का तो समाज को किसी भी अवस्था में तिरस्कार नहीं करना चाहिए और जिस देवी ने उस संतान को प्राप्त किया है, उसे कभी दोष नहीं लगाना चाहिए। दोष सदैव पुरुषों का ही होता है स्त्रियों का कदापि नहीं।

स्त्रियां कभी भी अपवित्र नहीं होतीं। सोमादि देवता का अधिकार होने से सोमदेव ने स्त्रियों को पवित्रता दी है, गंधर्व देवता ने स्त्रियों को अच्छी वाणी दी है और अग्नि

देव ने स्त्रियों को तेज दिया है अतः स्त्रियां स्वयं ही प्रतिमास शुद्ध हो जाती हैं। यदि कोई स्त्री बलात, अपहृत अवस्था में बलात्कार पूर्वक पर पुरुष से सहवास कर भी ले तो भी उस स्त्री को किसी प्रकार बाह्यशुद्धि की आवश्यकता नहीं। ऋतुकाल होने पर वह व्यभिचार के दोष से स्वतः मुक्त हो जाती है।

स्त्रियों के चरित्र पर कोई अनावश्यक संदेह नहीं करना चाहिए। जिस घर में स्त्री-पुरुष दोनों की सर्वथा अनुकूलता रूप परस्पर प्रेम होता है वहां धर्म, अर्थ, काम तीनों बढ़ते हैं। स्त्री का परम-धर्म यही है कि वह पति की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करे, जिस कारण स्त्री के द्वारा वंश को गौरवयुक्त करने वाली उत्तम संतान प्राप्त होती है, जिससे पुरुष को चाहिए कि स्त्रियों का आदर सत्कार पूर्वक भरण पोषण और उनकी रक्षा करे।

मासिक धर्म के आरंभ में सोलह दिन स्त्रियों के ऋतुकाल के होते हैं इनमें भी प्रथम चार दिन, अमावस्या, अष्टमी, पूर्णमासी और चतुर्दशी इन पर्व दिनों में जो पुरुष स्त्री के पास कदापि नहीं जाता, वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी ही कहाता है। पुरुष को चाहिए कि वह केवल अपनी ही स्त्री से अनुराग करे, क्योंकि स्त्रियों की रक्षा अवश्य करनी चाहिए। यदि पुरुष व्यभिचारी होगा तो स्त्री की रक्षा कदापि नहीं हो सकती। संतान पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ने की संभावना है।

स्त्री क्षेत्र रूप और पुरुष बीजरूप होता है, बीज और खेत इन दोनों में बीज प्रधान है। जैसे किसान सदैव श्रेष्ठ बीज बोता है उसी प्रकार उत्तम संतान चाहने वाले पुरुष को संयम द्वारा अपने वीर्य को शक्तिशाली बनाना चाहिए। दूसरे के खेत में बोया हुआ बीज सर्वथा निष्फल ही है। उसी प्रकार बुद्धिमान तथा शिष्ट पुरुष को भूल कर भी दूसरे की स्त्री में कभी बीज न बोना चाहिए।

एक संतान प्राप्त हो जाने पर माता-पिता को कम-से-कम पांच वर्ष तक संयम का जीवन व्यतीत करते हुए अपनी संतान के संस्कारों को शुद्ध तथा पवित्र बनाने में सारी शक्ति लगा देनी चाहिए। जन्म से ही जो संस्कार वेद ने कहे हैं वे संस्कार आडंबर रहित होकर अवश्य ही करने चाहिए। बच्चों का यज्ञोपवीत तथा प्रारंभिक वेदारंभ किसी स्कूल में नहीं बल्कि धर्म-पाठशाला में होना चाहिए।

बड़े भाई की स्त्री छोटे भाई के लिए गुरु-पत्नी के समान है और छोटे भाई की स्त्री बड़े को पुत्रवधू के समान कहा है। बड़ा भाई छोटे भाई की स्त्री के साथ व छोटा भाई बड़े भाई की स्त्री के साथ बिना आपत्काल के कभी सहवास न करे।

संतान न हो तो पुत्र की इच्छा से भले प्रकार नियोग की हुई स्त्री को देवर या अन्य सपिण्ड से यथेष्ट संतान उत्पन्न कर लेनी चाहिए। विधवा के साथ नियोग करने वाला मौन होकर अर्थात् वासनात्मक बाते न करके रात्रि में सहवास करे तथा केवल एक पुत्र उत्पन्न करे, दूसरा कभी नहीं।

प्रत्येक नगर में ऐसी एक पाठशाला अवश्य ही स्थापित की जाए जहां पर बच्चों का वेदारंभ संस्कार हो। प्रत्येक वैदिक धर्मी को चाहिए सरकारी स्कूल में भेजने से पहले दो वर्ष तक बालक अथवा बालिका को इस पाठशाला में भेजे। इस पाठशाला के अध्यापक अनुभवी तथा देश हितैषी होने चाहिए। दो वर्ष में बच्चों को साधारण हिंदी संस्कृत तथा ऐतिहासिक कथाओं का मौखिक ज्ञान कराना अनिवार्य है।

कुल की शोभा ज्येष्ठ पुत्र से ही है, पिता की संपूर्ण जायदाद पर केवल ज्येष्ठ पुत्र का ही एक मात्र अधिकार है। शेष पुत्र केवल निर्वाह मात्र प्राप्त करने के अधिकारी हैं। पिता की अचल सम्पत्ति में पुत्री का कानून कोई अधिकार नहीं। यदि पुत्री ही सब बहन भाइयों में ज्येष्ठ है और वह आयुपर्यंत अपने पिता ही के घर पर रहना चाहती है तो पिता को यह अधिकार है कि वह अपनी चल अचल सम्पत्ति अपनी पुत्री को दे सके। परंतु विवाहित अवस्था में पुत्री का अपने पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं। एक से अधिक पुत्रियां होने पर पिता उन्हें स्वेच्छा से जो चाहे दे सकता है।

विवाह के पश्चात् किसी प्रकार की संतान होने से पूर्व यदि हुई हो और रही न हो तब भी पति अथवा पत्नी में से किसी का भी देहांत हो जाए तो एक दूसरे को पुनर्विवाह का अधिकार है, परंतु संतान होने पर किसी को भी पुनर्विवाह का अधिकार नहीं।

यदि कोई विधवा है, उसके संतान भी है, परंतु वह विधवा संतान की पालना करने में असमर्थ है तो उस विधवा को सक्षम पति के साथ पुनर्विवाह का पूरा-पूरा अधिकार है। यदि कोई विधुर पूर्व पति से प्राप्त संतान की परवरिश का बहाना बना कर विवाह करना चाहता है, वह यदि चाहे तो केवल किसी विधवा के साथ विवाह कर सकता है, परंतु उस दूसरे विवाह से प्राप्त संतान को अचल संपत्ति में किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं। समाज में अधिक विधवाओं का होना समाज के लिए दु:ख का कारण है। अत: विधवा विवाह अवश्य ही होना चाहिए।

यदि पुत्रवती विधवा अपनी समस्त आयु को अपनी संतान को योग्य बनाने तथा

अपनी अन्य बहनों का संकट दूर करने में लगा देना चाहती है; गृहस्थ के जंजाल से ऊपर उठ कर वह अपने जीवन को देश तथा ईश्वर की उपासना में अर्पण कर देना चाहती है–वह देवी धन्य है।

वर–वधू का चुनाव करने में सर्वाधिकार माता–पिता को ही होने चाहिए। लड़के–लड़कियों को चाहिए कि वे अपने विवाह संबंध में न तो स्वयं कभी सोचें और न ही अपना जीवन साथी स्वयं तलाश करने की कोशिश करें। यह चिंता माता–पिता पर छोड़ दें।

विषय भोग की इच्छा विषयों के भोग से कभी शांत नहीं होती, जिस पुरुष को सुनने से, स्पर्श करने से, भोजन से और पदार्थ के सूंघने से हर्ष–विषाद न हो वही 'जितेंद्रिय' है।

जल में सूर्य का प्रतिबिम्ब और बीच आकाश में भी सूर्य को न देखे, अपनी छाया पानी में न देखे। पानी बरसते में न दौड़े। तेज चाहने वाला पुरुष भार्या के साथ भोजन न करे। भार्या को भोजन करते हुए न देखें। नंगा स्नान कभी न करे। मार्ग में जल, चिता तथा टूटे देवस्थान में कभी मूत्र न करे। दिन और दोनों संध्याओं में उत्तर की ओर मुख करके तथा रात को दक्षिण की ओर मुंह करके मलमूत्र त्याग न करें, आग को मुख से न फूंके, पैरों को आग पर न तपावे, संध्याकाल में भोजन, शयन तथा यात्रा न करें। सूने मकान में अकेला न सोए, रात को वृक्ष के नीचे न रहे, चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग कभी न करे। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी तथा संन्यासी पाओं में चमड़े की जूती कभी न पहरें। रात को कभी न जागें। विरोध वाले के घर भोजन न करें, बैल की पीठ पर सवारी न करें, भोजन करने से पूर्व पैर अवश्य धोलें, सिर में तेल लगाकर अन्य किसी अंग को न छुएं, जूठन न छोड़े, जूठन न खाये, अतिथि का आदर करें। अतिथि जब विदा हो तो सौ कदम तक उसे छोड़ने के लिये साथ–साथ चलें, पश्चात् कुशल मंगल पूछ लौटती वेर अभिवादन करें। मिताहारी हों। मांस का प्रयोग कभी न करें।

जो अहिंसक प्राणियों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह पुरुष लोक और परलोक दोनों में दुःख पाता है। प्राणियों की हिंसा किये बिना मांस कभी उत्पन्न नहीं हो सकता, अतः मांस खाना भयंकरतम पाप है। जिसकी सम्मति से मारते हैं, जो अंगों को काटकर अलग–अलग करता है, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला, खाने वाला, यह सभी घातक के समान ही पापी

हैं। पराए मांस में जो अपना मांस बढ़ाने की इच्छा करता है, वह महापापी है।

संस्कृत परमात्मा की भाषा है, हिंदी आत्मा की भाषा है। आत्मज्ञान की प्राप्ति के इच्छुक को संस्कृत तथा हिंदी का ज्ञान अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए।

वे लोग जिनके घर में रेडियो, टेलीविजन हैं, महादुर्भाग्यशाली हैं। मानो उन बदकिस्मत लोगों ने अपने कमरे में ऐसा निशाचर बिठा लिया है जो दिनरात घर के बाल बच्चों को कुमार्ग का ही सबक पढ़ाता रहे, और उनके जीवन को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए रात-दिन गंदी गजलें उनके कानों में डालता रहे।

दैनिक अखबार पढ़ना मनुष्य के अंत:पतन का हेतु है। आत्मोन्नति के इच्छुक को दैनिक पत्र कदापि पढ़ने नहीं चाहिए। पाक्षिक तथा मासिक पत्र जिनमें आत्मज्ञान तथा राष्ट्रोन्नति संबंधी विचार हों उन्हीं का स्वाध्याय करना श्रेयस्कर है।

वही खद्दर पहनना धर्म है जो स्वयं अपने घर में अथवा अपने ही मुहल्ले के अथवा शहर के अपने हितचिंतक स्त्री-पुरुष द्वारा तैयार किया गया हो। विरोधी के हाथों का जैसे अन्न दूषित है वही बात कपड़े में भी जानो। अन्न तथा वस्त्र दोनों ही सद्भावना से दिए हुए ही गुण करते हैं।

भारत में उत्पन्न हुए प्रत्येक भारतीय को गृहस्थाश्रम के पश्चात् पचास वर्ष की अवस्था को पार करते ही एक बार राष्ट्रीय एकता की भावना से समस्त भारत के तीर्थों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। परंतु तीर्थ यात्रा रेल, मोटर द्वारा नहीं पैदल ही हो। रेल द्वारा यात्रा फलदायिनी नहीं।

पुत्र के लिए देवता माता है, माता के लिए देवता पुत्र है; पत्नी के लिए देवता पति है और पति के लिए देवता अपना परिवार है। समूचे परिवार के देवता सच्चे देशभक्त हैं। सच्चे देशभक्तों की भक्ति ही देश की भक्ति है। ब्राह्मण के घर में पैदा हुआ ब्राह्मण नहीं। जो सच्चा देशभक्त है, दूसरे के लिए सहर्ष कष्ट सहता है, स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ में ही स्वार्थ समझता है, वही सच्चा ब्राह्मण है।

श्राद्धों के दिन पितरों के नाम पर देशभक्त विद्वानों का श्राद्ध अर्थात् श्रद्धापूर्वक करना अच्छा ही है। उन विद्वानों का जन्म से ब्राह्मण होना आवश्यक नहीं। श्राद्ध के दिन से कम से कम कई मास पूर्व श्राद्धकर्ता को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। एक सप्ताह पूर्व से उसे मिताहारी रहते हुए भूमि पर सोना चाहिए तथा सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करना चाहिए। श्राद्ध के दिन घर पर आए विद्वानों से उसे अपने पूर्वजों के सद्गुणों की चर्चा करनी चाहिए।

जो भी दान–पुण्य करना हो तो वह अपने ही शहर के लिए करना चाहिए। यदि हम अन्य शहरों की चिंता छोड़ अपने नगर को ही श्रेष्ठ बनाएं तो प्रत्येक नगर स्वर्ग तुल्य बन सकता है। विशेष–विशेष अवस्थाओं में अकाल, अग्नि, जल तथा सांप्रदायिक दंगों के कारण क्षतिग्रस्त लोगों की सहायता अवश्य ही करनी चाहिए।

सतयुग में श्रद्धा अधिक थी इस कारण दान आप जाकर देते व श्रद्धा सहित बुलाकर त्रेता में देते थे, याचना करने वाले को द्वापर में श्रद्धायुत हो देते थे और अब कलियुग में दान सेवा करा कर देते हैं। जो दान आप जाकर दिया जाता है, वह उत्तम है, बुलाकर जो दान दिया जाता है वह मध्यम है और जो दान याचना करने पर दिया जाता है वह निकृष्ट है और जो सेवा कराकर दान दिया जाता है, वह निष्फल है।

देश का उद्धार सभी भारतीयों की एकता में ही है, परंतु हिंदुओं को हिंदू–मुस्लिम एकता का विचार दिल से निकाल देना चाहिए। यद्यपि दिल से उन्हें किसी भी भारतीय का अनिष्ट चिंतन नहीं करना चाहिए। हिंदुओं का हिंदू–मुस्लिम एकता के लिये चिंतित होना तथा इसके लिए यत्न करना सर्वथा व्यर्थ है। हिंदू–मुस्लिम एकता तभी हो सकती है जब स्वयं मुसलमान इसकी चिंता करेंगे और सच्चे दिल से इसकी कोशिश करेंगे।

आर्य समाज और सनातन धर्मसभा को चाहिए वे सिद्धांतों तथा परलोक संबंधी मामलों पर झगड़ने की बजाए एक हो जाएं। धार्मिक शिक्षा का काम आर्य समाज संभाले और स्कूली शिक्षा का काम सनातन धर्म सभा। हरिजनों को चाहिए वे अपने को दलित तथा कुछ और समझना छोड़ दें। वे अपने को सवर्ण और हिंदुओं के समान समझें और सवर्ण हिंदू उनके साथ समानता का व्यवहार करें। सिखों को चाहिए वे भी अपने वास्तविक स्वरूप को न भूलें।

महापुरुषों की जयंतियों तथा अन्य राष्ट्रीय पर्वों को सबको मिलकर बड़ी शान से मनाना चाहिए, परंतु दो बातों का सदैव ध्यान रखा जाए, जिन बातों के प्रदर्शन से हमारी हंसी हो, उन बातों को नहीं करना चाहिए तथा जिन लोगों को हमारे त्योहार के साथ कोई दिली हमदर्दी नहीं, उन्हें उत्सव में शामिल नहीं करना चाहिए।

देश का नाश होने के समय, परदेश में रोगयुक्त होने पर और आपत्तियों के आने पर पहले सब प्रकार से अपने ऊपर विपत्ति आने पर कोमल व कठोर व जिस किसी उपाय से हो सके, अपने आपका उद्धार करे। इसके पीछे सामर्थ्ययुक्त होकर धर्म का अनुष्ठान करें। आपत्तिकाल उपस्थित होने पर शौचाचार का विचार न करें। पहले

अपना उद्धार करें, इसके पीछे स्वस्थ होकर धर्माचरण करें।

भारत के लिए प्रजातंत्र शासन–प्रणाली ही सर्वथा युक्त है, परंतु उस प्रजातंत्र में प्रत्येक नर–नारी को मताधिकार कदापि नहीं होना चाहिए। नागरिक जीवन तथा सदाचार, शिष्टाचार संबंधी एक विशेष परीक्षा निश्चित ही जाए। प्रांतीय भाषाओं में वह परीक्षा हो। जिन्होंने वह परीक्षा पास की हो केवल उन्हीं को मताधिकार होना चाहिए।

परंतु जो महानुभाव शासन सभाओं के सदस्य (Ministers and M.L.A.) बनना चाहें उनकी नागरिक जीवन की योग्यता और शैक्षिक योग्यता उच्च तो होनी चाहिए, इसके अतिरिक्त उनकी आयु 50 वर्ष से कम तो कदापि न हो।

प्रांतों का पुनर्विभाजन आवश्यक है। पंजाब के हरयाणा तथा जालंधर डिवीजन, लाहौर तथा अमृतसर नगर पंजाब के पृथक् प्रांत होने चाहिए, पश्चिमी बंगाल को भी पूर्वी बंगाल से अलग कर देना चाहिए।

एक व्यक्ति के पास उतने ही मकान होने चाहिए, जितने उसकी रिहायश के लिये आवश्यक हों। शेष मकान राज्य को उचित मुआविजा देकर स्वयं अपने कब्जे में कर लेने चाहिए। जमींदार उसी को मानना चाहिए जो स्वयं अपने द्वारा काश्त करे। एक व्यक्ति के परिवार की आवश्यकताओं को देखते हुए तथा उस व्यक्ति की हिम्मत का भी ध्यान रखते हुए उतनी जमीन काश्त के लिये उसे दे देनी चाहिए।

4

भारतीय राष्ट्र का नव निर्माण

मोहन नहीं है?

गोकुल वही है मथुरा वही है, मथुरा में बहती यमुना वही है।
यमुना के जल की महिमा वही है, लोगों की इस पर श्रद्ध वही है।
यमुना के तट पर गौओं के झुरमुट, सूरत वही है, नकशा वही है।
मंदिर वही हैं, इन मंदिरों में रौनक वही है, शोभा वही है।
जो रासलीला देखी थी हमने ब्रजवासियों की लीला वही है।
शक्ति में भक्ति, भक्ति में मुक्ति, इस ज्ञानवाली गीता वही है।
जो कुछ जहां था सब कुछ वहीं है।
लेकिन कन्हैया घर में नहीं है।।

यमुना के तट पर मोहन नहीं है, मोहन नहीं है, जीवन नहीं है।
यमुना की लहरें बेताबोबेकल, इन पर पुराना यौवन नहीं है।
पंडे पुजारी गिनती से बाहर, लाखों में इक भी ब्राह्मण नहीं है।
दुखिया के सिर पर चलते हैं आरे, गाय का कोई मामन नहीं है।
गीता के सिमरन होते हैं अब भी, सुनने को कोई अर्जुन नहीं है।
हिंदू वही हैं पर हिंदुओं में जीवन का कोई लक्षण नहीं है।

मोहन की नगरी बरबाद देखी।
बरबादियों से आबाद देखी।।

–मोहन लाल शहीद वकील
अलीपुर (मुजफ्फरगढ़)

सीख, ओ, हिंदू जाति!

कुछ अपने भूत से, कुछ अपने वर्तमान से–
और कुछ अपने आने वाले काले–काले भयंकर भविष्य से।

सीख, ओ, वीर जाति!

कुछ करोड़ों बाल–विधवाओं के शाप से, कुछ विधवा सिधवाओं के संताप से और कुछ अपनी गोदी में पड़े दस करोड़ अछूतों के परिताप से।

सीख, ओ, ऋषि संतान!

कुछ अपने शक्ति के ह्रास से, कुछ अपनों के द्वारा हो रहे अपने उपहास से। और कुछ.... हताश नौजवानों के जीवन–नाश से।

सीख, ओ, भारत संतान!

कुछ पूर्वी बंगाल के संतप्तों की चीखों पुकार से, कुछ सिंध में हो रहे धर्म पर भीषण प्रहार से। और कुछ यत्र–तत्र–सर्वत्र त्रस्त हिंदुओं के हाहाकार से।

सीख, ओ आर्य संतान!

देख! तुझे निगलने के लिए पाकिस्तान का विषैला नाग फन फैलाए खड़ा हैं कांग्रेस, जिस पर तुझे इतना अभिमान था उसने भी तेरा साथ छोड़ दिया। देख! शस्य श्यामला––भारत वसुंधरा आज अपने ही सपूतों के रक्त से रक्त वर्णी हो रही है। देश! पुण्य–भूमि भारत को मरुस्थल में बदल देने के लिए चर्चिल–जिन्ना का षड्यंत्र आज भयंकरतम रूप में प्रकट हो रहा है। मातेश्वरी भागीरथी के वक्षःस्थल

पर पाकिस्तान का विष वृक्ष। देख! अपने ही घर में अपने ही सपूतों द्वारा अपनी महान् दुर्गति–धर्म के नाम पर अधर्म, ईश्वर के नाम पर पाप, मजहब के नाम पर धोखा, फरेब, छल, कपट, मिथ्याचार, दुराचार....

और चेत, ओ, भारत संतान!

नहीं तो मिट जायेगाी, धरती तल से नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगी।

ऋषिराज महामना मालवीयजी का अंतिम संदेश

वर्षों से लगातार हिंदू सच्ची हिंदू–मुस्लिम एकता को मूर्तिमान् देखने के लिए अपनी ओर से पूर्ण चेष्टा करते रहे और उदारता से काम लेते रहे। आज भी हिंदू सहयोग करने और सहिष्णुता से काम लेने को तैयार हैं। **परंतु मुझे यह देखकर दुःख है कि उनकी सहिष्णुता का अर्थ दुर्बलता किया जा रहा है और उनके सहयोग को अधिकांश मुसलमानों के द्वारा ठुकराया जा रहा है। असहिष्णुता की भावना से नहीं, वरन पूर्ण सावधानी तथा मनन–चिंतन के उपरांत मैं यह वक्तव्य दे रहा हूं।** क्योंकि यह निश्चित है कि जब तक हिंदू एक जाति के रूप में कमर कसकर तैयार नहीं हो जायेंगे, तबतक हिंदू मुस्लिम समस्या अपनी सारी भयंकरताओं को साथ लिये बनी ही रहेगी।

हिंदू नेताओं का जैसा कर्त्तव्य अपनी मातृभूमि के प्रति है, वैसा ही अपने धर्म, संस्कृति और अपने हिंदू–बंधुओं के प्रति भी है। **यह नितांत आवश्यकता है कि हिंदू अपने को संगठित करें, सब एक होकर काम करें, निःस्वार्थ और देशभक्त कार्यकर्ताओं का एक दल निर्माण करें, जिनका एकमात्र उद्देश्य सेवा हो। जाति तथा वर्णगत भेदों को भुला दें और हिंदू–जाति की रक्षा के लिए और अपने आदर्श तथा संस्कृति को बचाने के लिए अधिक से अधिक त्याग करें।**

हिंदुओं को प्रभाव पूर्ण रूप में संगठित होने की नितांत आवश्यकता क्यों है। इसके कारणों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। परंतु आज देश भर में मुसलमानों की राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं के कैसे विचार हैं और वे क्या

कर रहे हैं, इसका–उल्लेख करना यहां आवश्यक है। मुसलमान नेताओं के द्वारा दिए हुए अग्निमय भाषण, अज्ञात मुसलमान–संस्थाओं द्वारा सावधानी के साथ जान बूझकर तैयार किए हुए गुप्त लेख, मुस्लिम–लीग का धमकियों से भरा हुआ राजनीतिक रुख, कलकत्ते का हिंदू हत्याकांड, पूर्व बंगाल में मुसलमानों के सुसंगठित दलों के द्वारा किए हुए कुकर्मों के रोमांचकारी समाचार और देशभर में दंगों का उत्पादन देखकर प्रत्येक हिंदू का हृदय निश्चित ही रोष से खौलने लगना चाहिए ओर हिंदू जाति की रक्षा के लिए कुछ कर डालने को उमड़ उठना चाहिए।

वर्तमान घटनाचक्र के निरीक्षकों और आलोचकों में से बहुतों का यह निश्चित मत है कि परिस्थिति का यह रूप क्षणिक नहीं है और हिंदू जाति को यदि जीवित रहना है तो उसे कमर कसकर तैयार हो जाना चहिए। वर्षों और शताब्दियों से हिंदुओं की मनोवृत्ति धर्म की अपेक्षा राष्ट्रीयता की ओर अधिक झुकी रही है। हिंदू सत्य का प्रेमी और अहिंसा का विश्वासी है। उसमें युद्ध की भावना का अभाव है और एक राष्ट्रगत मनुष्यों में परस्पर लड़ाई–झगड़े की भावना से उसे घृणा है। हिंदुओं की इस मनोवृत्ति से लाभ उठाकर मुसलमानों ने अपनी मांगों को बढ़ा दिया और उन पर धार्मिकता का रंग चढ़ा कर नया जोश भर दिया है। इस प्रकार के लड़ाई झगड़ों की जड़ झूठा प्रचार है और मुसलमान इस कार्य में अपनी आशा से भी अधिक सफल हुए है।

पिछले तमाम वर्षों में हिंदुओं ने सदा हानि उठाई है। कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था है और मुस्लिम–लीग सांप्रदायिक। फिर भी दोनों के साथ बराबरी का व्यवहार किया गया है और इस प्रकार बहुसंख्यक (हिंदू) जाति के आधिकारों को कुचला गया है। उनकी आशाओं पर विकसित होने के समय ही पानी फेर दिया गया है और भारतीय राष्ट्रीयता के नाम पर उनकी संस्कृति और धर्म की सर्वथा अवहेलना की गई है।

हिंदुओं की तथा अन्य जातियों की राजनीतिक उन्नति कांग्रेस के हाथों में सुरक्षित मानी जा सकती है। परंतु हिंदुओं के विशुद्ध सांप्रदायिक प्रश्नों पर धार्मिक सांस्कृतिक और सामाजिक उन्नति के प्रश्नों पर अंतिम निर्णय देने का अधिकार निश्चय ही किसी हिंदू–संस्था को ही है जो उसकी ओर से बोलने तथा कार्य करने के लिए प्रतिनिधित्व करती हो। धर्म–परिवर्तन निश्चय ही

रुकने चाहिए। साथ ही, ऐसे मुसलमानों को और खासकर उनको जिनका जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन कर दिया गया है और जो हिंदू होना चाहते हैं- विशेष सुविधा देनी चाहिए। हिंदुओं को निश्चय ही ऐसे आवश्यक उपाय कर लेने चाहिये कि जिससे मुसलमानों द्वारा दी हुई आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार की धमकी उल्टे उन्हीं के सिर पर जाकर नाचे। **हिंदुओं को भयमुक्त होकर बहादुर और मजबूत बनना चाहिए। सैनिक-शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। स्वयं-सेवकों की संस्थाएं बनानी चाहिए और आत्मरक्षा के लिए एक केंद्रीय स्वयं-सेवक सेना का निर्माण करना चाहिए।**

बहुसंख्यक हिंदू-जाति के लिए मुत्यु का परवाना लेकर आने वाली इस महामारी के आक्रमण के विरुद्ध हिंदुओं को सिर उठाना चाहिए। चेतावनी की घंटी बज जानी चाहिए। पर कमर कसकर तैयार होकर, स्वयं सेवक-संस्थाओं का निर्माण कर या अपने दृष्टिकोण को सैनिक रूप देकर वे किसी के प्रति किसी प्रकार हिंसा की इच्छा नहीं करेंगे। आत्मरक्षा और आत्मस्थिति ही उनका ध्येय है। स्वयं जीवित रहना और दूसरों को जीवित रहने देना ही उनके उद्‌देश्य हैं। **जो हिंदुओं को शांति के साथ नहीं रहने देना चाहते उनके प्रति किसी प्रकार की सहिष्णुता नहीं हो सकती। यदि धर्म की ही पुकार है तो अवश्य ही उसमें धार्मिक दृढ़ता की गूंज होनी चाहिए। रक्षा की व्यवस्था निश्चय ही इतनी प्रभावशाली हो कि आक्रमण निश्चित रूप से व्यर्थ हो जाए।** आत्म-सम्मान ऐसी बहादुरी से भरा होना चाहिए कि जिससे स्फुट आक्रमण भी निश्चित रूप से असफल हो जाएं। कोई भी मूल्य देकर शांति चाहने से समस्या का समाधान नहीं होता-सांप्रदायिक समस्या का तो और भी नहीं। हिंदुओं को निश्चय ही, अपने प्रत्येक हिंदू भाई के प्रति कर्त्तव्य पालन करने के लिये उत्साहित करना चाहिए और उन्हें अपने को धन्य मानना चाहिए कि वे उन ऋषियों और महात्माओं के धर्म के अनुयाई हिंदू हैं जिन्होंने मनुष्यों की वासस्थली वसुंधरा को स्वर्ग बनाने की चेष्टा की और सारे जगत् को कुटुम्बवत् मानकर भ्रातृत्व का प्रचार किया।

हिंदुओं को हिंदुओं की सेवा करनी चाहिए। हिंदुओं को आज अपने संरक्षण की बड़ी आवश्यकता है। बर्बरतापूर्ण आक्रमण, मिथ्या राजनीतिक प्रचार अथवा मेल-मिलाप-नीति की मिथ्या कल्पना या निर्जीव बना देने वाले

तत्त्व-ज्ञान के द्वारा हिंदू अपने धर्म को मरने देना नहीं चाहते, अपनी संस्कृति को मिटने देना नहीं चाहते और न अपनी संख्या को ही घटने देना चाहते हैं। **यदि हिंदू अपनी रक्षा नहीं करेंगे तो उनके नष्ट होने में देर नहीं लगेगी। यदि वे पिछड़े रहे तो रौंदकर क्रिया रहित और निर्जीव बना दिए जाएंगे। उन्हें अकर्मण्य बिल्कुल नहीं रहना चाहिए। उनमें अवश्य ही साहस होना चाहिए। उन्हें मरने से कभी नहीं डरना चाहिए।** उन्हें परस्पर भाई-भाई की तरह प्रेम करना चाहिए ओर प्रत्येक हिंदू के प्रति सहनशील होना चाहिए; परंतु उन मुसलमानों के प्रति सहनशील बिल्कुल नहीं होना चाहिए, जो इन्हें शांति के साथ रहने देना नहीं चाहते।

मैं इस प्रकार की प्रेरणा करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं; क्योंकि इस समय मानवता दांव पर लगी है। हिंदू-संस्कृति और हिंदू-धर्म खतरे में है। परिस्थिति संकटापन्न है और ऐसा समय आ गया है कि हिंदू एक होकर सेवा तथा सहायता के साधनों को परिपुष्ट करें और अपनी रक्षा तथा अपने स्वत्व को प्रभावशाली बनावें।

समूचे भारतवर्ष में अनेकों मुसलमान-नेताओं ने अपने लेखों और आडंबरपूर्ण व्याख्यानों में जहर मिलाया है। मुस्लिम-लीग के नेताओं, मि. गजनफर अली खा तथा दूसरों ने अपने लेखों तथा व्याख्यानों में जंगली और दायित्वशून्य भाषा में हिंदुओं को चुनौती दी है। बंगाल की घटनाओं पर एक भी मुस्लिम-लीगी नेता ने घृणा प्रकट नहीं की है। बल्कि इन बर्बर तथा पाशविक घटनाओं पर वे एक आंतरिक आनंद का अनुभव करते हैं। मैं उनकी-सी विष घुली स्याही में अपनी लेखनी डुबोकर कुछ नहीं लिखना चाहता। मैं अपने हिंदू-भाइयों से यह नहीं कहता कि जहां मुसलमान कमजोर या कम हों, वहां वे उन पर आक्रमण करें। **पर हिंदुओं से मैं यह अवश्य कह रहा हूं कि जहां वे दुर्बल हों, वहां सबल बनें और जहां उनकी संख्या कम हो वहां सफलतापूर्वक अपनी रक्षा करें।** हिंदू-बहुसंख्यक प्रांतों में हिंदुओं ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों का कभी विरोध नहीं किया, बल्कि उनके अधिकारों की गारंटी दी है। हालांकि वे देखते आ रहे हैं, कि मुस्लिम बहुसंख्यक प्रांतों में न केवल हिंदुओं के अधिकारों की भीषण एवं क्रूर अवहेलना की जाती है बल्कि उनके जीवन, धन और धर्म पर भी आघात होता है! सामाजिक

संगठन के आधार पर निर्मित अराजनीतिक संस्थाओं के अभाव ने राष्ट्रीयता के मोर्चे को बहुत दुर्बल बना दिया है और खुश करने की राजनीतिक नीति को तथा मुस्लिम-लीग की असंभव मांगों को जन्म दिया है।

केवल धर्म और संस्कृति के नाम पर ही नहीं, अपनी प्यारी जन्मभूमि के नाम पर भी मैं समस्त हिंदुओं से अपील करता हूं कि यदि वे भारतवर्ष में चिरकाल के लिए शांति चाहते हैं और ऐसा संदेश देना चाहते हैं कि जिसको मुसलमान तथा अन्य जाति एवं धर्म के लोग सुनें तो वे एक हो जाएं और अपनी रक्षा करें। संदेश यह हो कि -''**जैसे वे पहले रह चुके हैं, अब भी वे एक साथ, एक ही भूमि पर रहना चाहते हैं और यदि वे हिंदुओं के साथ शांति से रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही हिंदुओं के धर्म का आदर करना पड़ेगा, वे हिंदुओं के पूजागृहों-मंदिरों को भ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और धार्मिक स्वतंत्रता, जीवन की पवित्रता एवं स्त्रियों के सतीत्व का उन्हें अवश्य सम्मान करना पड़ेगा।**''

कांग्रेसी महापुरुषों की सेवा में!

आपने जो इस बार गलती की है इस गलती ने आपकी पहली सभी गलतियों को मात कर दिया है। चालीस करोड़ नर-नारियों की जिंदगी और मौत के सवाल को आपने सत्य और अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्ति के लिए महज एक प्रयोगशाला समझ रखा है। **अंग्रेज को निकालने की धुन में आप भारत में औरंगजेबी राज्य को मजबूत कर रहे हैं। आपने हिंदुओं से विश्वासघात किया है; सिखों का, फ्रंटियर के पठानों का और भोले-भाले आसामियों का तो आपने सर्वनाश ही कर दिया।** परंतु याद रखिए विश्वासघात के इस पाप के भागी बनकर भी आपकी मनोकामना पूरी न होगी। जिन्ना कभी तुम्हारे साथ मिल बैठने को तैयार न होगा। कितना अच्छा होता आप अपनी आब को, अपनी शान को कायम रखते। यदि अंग्रेज न्यू दिल्ली के राजमहल में बैठ कर आपको विधान बनाने की इजाजत न देता, आप जंगलों में बैठकर स्वतन्त्र भारत के भाग्य का निर्णय करते। आजाद, आसफ, किदवई, गफ्फार तो आपके साथ थे ही। आपको चिंता किस बात की थी? **नोट कर लीजिए**

जिन्ना अंग्रेज का है और अंतकाल तक वह अंग्रेज का ही रहेगा। आसाम ही नहीं, फ्रंटियर और पंजाब ही नहीं तुम उसकी झोली में बंबई, मद्रास, नागपुर और लखनऊ भी डाल दो, जिन्ना जिसका था उसी का रहेगा।

निःसंदेह जिन्ना एक भाग्यशाली आदमी है। उसकी इच्छा बराबर पूरी होती जा रही है। जिन्ना कहता है कांग्रेसी प्रांतों में जिन मुसलमानों को कष्ट है, वे सिंध और बंगाल में आ जाएं। कांग्रेस कहती है–हम मुसलमानों को किसी प्रकार का कष्ट न होने देंगे। लाड़ला बेटा, लगा घर की मटकियां फोड़ने। वह जानता है मुझे किसी ने कुछ कहना तो है नहीं। बच्चा लाड़ला हो, चरित्रहीन हो और फिर उसकी खुशामद भी की जाए तो मानो घर की ईट से ईट बजने में कोई संदेह नहीं। यही अवस्था आजकल कांग्रेसी प्रांतों की हो रही है। **मुसलमानों के हौसले बेहद बुलंद हैं। अत्याचारी और आततायी होते हुए भी वे मानों दूध के धुले हैं।** लीगी प्रांतों में खुले आम हिंदुओं के संहार की स्कीमें बनती हैं, कांग्रेसी प्रांतों में हिंदुओं के संहार की स्कीमें तो नहीं बनती, परंतु ऐसी स्कीमें बनाने वालों की पीठ जरूर ठोंकी जाती है। **हिंदू-मुस्लिम के मुकाबले में स्पष्टतया मुसलमानों का दोष होते हुए भी हिंदुओं पर ही जुर्माना होता है, उन्हीं को जेल में ठूंसा जाता है। आखिर यह खेल कब तक खेला जाता रहेगा।**

हिंदू जन्म से ही देशभक्त है। मुसलमान इस देश को अपना देश नहीं समझता; अगर समझता भी है तो केवल इस दृष्टिकोण से जैसे एक कसाई अपनी बकरियों को अपनी समझता है। मुसलमान को आशा दिलाने के लिए अरब, ईरान, फारस के रेगिस्तान बहुत काफी हैं, हिंदू हिंदुस्तान के बाहर कहां झांक सकता है। मुसलमान के लिए देशभक्ति एक पेशा है हिंदू के लिए देशभक्ति धर्म है; देश उसके जीवन का अंग है। मुसलमान कभी-कभी इसलिए गांधी टोपी पहन लेता है ताकि कोई बिड़ला या डालमियां उसकी संस्था के लिए दो चार लाख का चैक दे दे, अथवा कोई कांग्रेस कमेटी उसे एम.एल.ए. बनाने के लिए अपने फंड में से लाख दो लाख रुपया इलैक्शन प्रौपेगंडा में स्वाहा कर दे, अथवा पंत या सिन्हा कहीं अपनी मिनिस्ट्री में उसे एक-आध ओहदे पर रौनक अफरोज कर दे। लेकिन हिंदू की तो मां कैद है। जिस माता का उसने दूध पिया, जिस माता की गोद में उसने जीवन की निर्दोष

घड़ियां सुख पूर्वक व्यतीत की आज उसकी जननी–जन्मभूमि आतताइयों द्वारा पदाक्रांत हो रही हैं। हिंदू के सामने अपनी माता के पिये दूध का बदला चुकाने का प्रश्न है। जो भी उसे कहता है–मैं तुम्हारी माता को आजाद करा दूंगा वह आंख मीचकर उसके पीछे चल देता है। इसलिए हिंदू ने आपको वोट दिए, इसलिए हिंदुओं ने अपनी किस्मत की बागडोर आपके हाथों में पकड़ा दी, उसे विश्वास था यही सूरमा मेरी मातृभूमि के बंधन काटेंगे। आज भी हिंदू का ऐसा ही विश्वास है और आप हिंदुओं के साथ जैसा चाहें व्यवहार कर लें आप पर हिंदुओं का विश्वास वैसा बना रहेगा। **मुसलमानों को आप हजार सिर पर चढ़ाएं, वक्त पर यह कभी काम नहीं आएंगे। हिंदू को आप जितना चाहें पीस डालें, परंतु भारत माता की जय सुनते ही उसका खून पिघल जाएगा और तिरंगे की लाज रखने के लिए इंक्लाब जिंदाबाद का नारा लगाता हुआ वह जान की बाजी लगा देगा।** इसलिए मैं आपकी सेवा में प्रार्थना करता हूं–हिंदुओं के प्रति आपको विश्वासघात कदापि नहीं करना चाहिए। मैं यही नहीं कहता कि आप किसी के साथ अन्याय करें, मैं आपसे यही प्रार्थना करता हूं, आप सबके साथ एक सा न्याय करें।

मैं हिंदू–मुस्लिम एकता का विरोधी नहीं परंतु किसी भी नूतन प्रयोग की अंतिम सार्थिकता को समझने के लिए साठ–पैंसठ वर्ष का समय बहुत काफी होता है। आप लोगों ने विगत पचास वर्षो में हिंदू–मुस्लिम एकता का जो तजुर्बा किया, देख लीजिए उसका फल। आप एक भी मुसलमान दिखाइए जो आपकी प्रयोगशाला में आकर फिरकापरस्त की बजाए सच्चे अर्थो में कौम परस्त बना हो, विपरीत इसके मैं सैकड़ों ऐसे मुसलमानों के नाम पेश कर सकता हूं जो कांग्रेस रूपी लैबोरेटरी में आकर कौम परस्त से कट्टर फिरकापरस्त बन गए। कोई जमाना था मिस्टर जिन्ना कांग्रेस के जनरल सैक्रेट्री थे, कोई जमाना था हसरत मोहानी भी कौमियत के तराने गाते थे, कोई जमाना था अल्लामा इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' के नगमें गाकर भारत का सर बुलंद किया था। आज यह सब कहां है? कहां है जफरअलीखां, कहां है आलम, कहां दाऊद गजनवी, मुहम्मद हुसैन और इफ्तखार। **अच्छा होता यदि कांग्रेस हिंदू मुसलमान का भेद भुलाकर केवल देशभक्तों से ही कुर्बानी की अपील करती। आजादी की लड़ाई जीतने के लिए सौदा फरोशों की**

नहीं सरफरोशों की जरूरत है।

मुसलमान जब तक मुसलमान है कभी देशभक्त नहीं हो सकता, हिंदू जब तक वह हिंदू है कभी पर देशभक्त नहीं हो सकता। इसलिए मैं आप से कहता हूं आजादी की जंग में सौदे की भावना को पनपने मत दीजिए। जिसको शौक है आए, शौक नहीं भले ही घर में बैठा रहे। आजादी की जंग संख्या बल से नहीं चरित्र बल से जीती जाती है। आप मुस्लिम लीग को बिल्कुल भुला दीजिए। करोड़ों हिंदुओं का और जो मुसलमान स्वेच्छा से आपके साथ आएं उनको साथ लिए स्वातंत्रय समर में बढ़ जाइए। लीग जो कुछ भी कर रही है, लीग नहीं कर रही वास्तव में अंग्रेज कर रहा है। लीग के सामने झुकना साफ तौर पर अंग्रेज के सामने झुकना है। जिस वीरता के साथ कांग्रेस ने अंग्रेज का मुकाबला किया, लीग की हेकड़ी तोड़ने के लिए भी कांग्रेस को वैसी ही वीरता दिखानी चाहिए। लेकिन क्या कांग्रेस सचमुच ऐसी वीरता दिखाएगी?

हाल ही में दर्जनों बार मेरे मन में इस्तीफा देने का विचार उठा, कलकत्ता और बिहार की घटनाओं ने मेरा मन विक्षुब्ध कर दिया है। मैं तथा मेरे साथी आजादी लाने के लिए अंत:कालीन सरकार में प्रविष्ट हुए थे। यद्यपि हमारा यह दावा नहीं कि हम पूर्णत: सफल हुए हैं। हम बिल्कुल असफल भी नहीं हुए।

''मैं रक्तपात से नहीं डरता। इसमें शक नहीं कि देश में जो मौजूदा गृह-कलह उठ खड़ा हुआ है उससे मुझे बहुत दु:ख हुआ है परंतु इसका वीर हृदय से सामना तो करना ही होगा। मुझे आशा है स्थिति सुधर जाएगी। यह सच है कि देश के एक भाग की दूसरे भाग में प्रतिक्रिया होती ही है। कांग्रेस ने अतीत में अनेक संकटों व खतरों का सामना किया है और इस संकट में भी वह अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने में पीछे नहीं रहेगी भले ही इस काम में हममे से कुछ लोगों का बलिदान हो जाए।''

-मेरठ कांग्रेस पर-जवाहर के उद्‌गार

आर्य समाजी भाइयों की सेवा में!

मैं अपने बालकाल से ही आपसे प्रार्थना करता आ रहा हूं, आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य स्कूलों और कालेजों पर रुपया बरबाद करके आर्यपुत्रों तथा आर्य पुत्रियों को अंग्रेजी सांचे में ढालना नहीं। मैं आपको यह भी अनेक बार कह चुका हूं कि आर्य समाज का काम प्रति सप्ताह चार पांच आदमियों का किसी स्थान पर बैठ "अग्नये स्वाहा" की रट लगा लेने तक ही सीमित नहीं। आर्य समाज का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। यदि आप मेरी बात मानते आज अपने ही लोगों की गलतियों के कारण हमें संसार की नजरों में इस कदर जलील न होना पड़ता। मैं आपको आरंभ से ही कह रहा हूं आर्य समाज के लिए उपयुक्त क्षेत्र राजनीति का क्षेत्र ही है। **कांग्रेस जिस स्वराज्य की कल्पना करती है वह स्वराज्य नहीं औरंगजेबी राज्य है। जिस दिन पंजाब फ्रंटियर और ढाका बन जाएगा उस दिन कांग्रेस समझेगी उसका मिशन पूरा हो गया।** यदि आप भी कांग्रेस वाला सुराज चाहते हैं तो भले ही बच्चों को Jack and Jill, went up a hill रटाते रहिए और प्रत्येक रविवार को समाज मंदिर में बैठ डालडा फूंकते रहिए, परंतु यदि आप में अंश मात्र भी महर्षि दयानंद की स्पिरिट बाकी है, यदि आपके दिलों में वैदिक-सभ्यता के लिए कुछ भी प्रेम बाकी बचा है तो मैं आप से प्रार्थना करूंगा, चेतिए! भविष्य में आने वाले खतरे को पहचानिए। सत्य और न्याय की पताका फहराते हुए आगे बढ़िए, भारत में औरंगजेबी राज्य की स्थापना का सुख स्वप्न देखने वाले इन कांग्रेसियों के हाथों से देश और जाति की बागडोर छीन लीजिए।

आखिर हम कब तक बैठे तमाशा देखते रहेंगे। कांग्रेस के लिए मुख्य प्रश्न स्वराज्य प्राप्ति का नहीं रहा अब तो उसके सिर पर यही धुन सवार है कि वह अपने आपको जिन्नाह और लियाकतअली से भी बढ़कर मुसलमानों का शुभचिंतक सिद्ध कर सकें, भले ही उसके देखते-देखते हिंदुस्तान पाकिस्तान बन जाए। क्या यह समय की आवश्यकता नहीं कि वैदिक संस्कृति से प्रेम करने वाले हम सब सिख, जैन, बौद्ध, सनातनी, समाजी छोटे-छोटे पारलौकिक मतभेदों को भुलाकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एक हो जाएं। **सभी संप्रदायों को एक स्थान पर लाना और वैदिक स्वराज्य के लिए उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करना यह काम आर्य समाज का है। यह देश हिंदुओं का**

है, हिंदुस्थान में हिंदू राज्य का सुख स्वप्न कोई गुनाह नहीं लेकिन क्या मेरी कोई सुनेगा भी?

हरिजनों को संदेश

वास्तव में आप ही भारत माता के सच्चे सपूत हैं। धरती माता आप ही के सहारे खड़ी है। जो लोग आपको अछूत कहते हैं वे स्वयं अपने शत्रु हैं। यदि भारत के सभी राजा, महाराजा, वकील, बैरिस्टर, डाक्टर, साधु-महात्मा, पंडे-पुजारी दो वर्ष की छुट्टी लेकर पाताल लोक की यात्रा पर चले जाएं तो मेरे देश का कुछ भी न बिगड़े, परंतु यदि आप लोग दो दिन भी अपना कार्य ठप्प कर दें संसार एक दम चौपट हो जाए। काल का पेरा हुआ हिंदू आपको निर्बल बनाए रखने में ही गौरव मानता है, वह इतना भी नहीं समझता-कमजोर बुनियादों पर खड़ा मकान जीवन संघर्ष में कब तक टिक सकेगा।

आज अंग्रेज आपको भी मिनिस्ट्रियों तथा सरकारी नौकरियों का चस्का लगा रहा है। परंतु अगर अंग्रेज के दिल में आपके प्रति सच्चा दर्द होता मैं अंग्रेज की तारीफ करता, मैं उसे सबसे बड़े दलितोद्धारक समझता, लेकिन अंग्रेज ने आपको दिया क्या? आठ करोड़ मुसलमानों को तो उसने पांच सीटें दीं और दस करोड़ हरिजनों को केवल एक सीट। आप अंग्रेज से पूछिए उसने किस कानून-कायदे से आपको एक सीट दी। अगर अंग्रेज यह बहाना बनाता है कि आप बहुत पिछड़े हुए हैं तो अंग्रेज को पूछिए बंगाल और सिंध के लाखों, करोड़ों हिंदू, जमींदारों, वकीलों, बैरिस्टरों, प्रोफेसरों की जिंदगी जिन लीगियों के हाथ में दे रखी, है उन लीगियों में कितने ऐसे हैं जिन्हें अपने दस्तखत तक करने का भी ज्ञान है। वास्तव में अंग्रेज को आप से कोई हित नहीं उसे तो लीग के मुकाबले पर हिंदू की शक्ति को कमजोर बनाना है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह हाथों में कैंची लिए बैठा है। कभी इधर से काटता है कभी उधर से काटता है। मैं आपको कहूंगा-सर्वप्रथम तो आप हिंदुओं से अलग अधिकार मांगिए ही नहीं और यदि अंग्रेज आप पर अपनी अबरेरहमत बरसाने पर तुला ही बैठा है, आप उसे साफ-साफ कह दीजिए, खुदावंदा! हम 10 करोड़ हैं; अगर आठ करोड़ फरजिंदाने तौहीद को 5 सीटें

दोगे तो हम भी कम से कम 6 सीटें अवश्य लेंगे, फिर देखें अंग्रेज आपके प्रति कैसा हित दिखाता है।

लीग ने अपने कोटे की जो एक सीट योगेंद्रनाथ मंडल को दी है, इसमें जिन्ना की बहुत भारी राजनीतिक चाल है। एक सीट मंडल को देने से जिन्ना का कुछ भी नहीं बिगड़ा। इस सस्ते सौदे से वह अछूत कहलाने वाले वर्ग में दो पार्टियां पैदा करना चाहता है। इन दोनों में से एक पार्टी को अपने साथ मिलाकर वह संसार को यह बताना चाहता है कि लीग में केवल मुसमान ही नहीं, कांग्रेस में जैसे कुछ मुसलमान भी हैं इसी प्रकार लीग में कुछ हिंदू भी हैं, देश में वर्तमान राजनैतिक संघर्ष लीग को कांग्रेस के बराबर लाकर खड़ा कर देने के लिए ही है और हमारी अपनी गलतियों से अंग्रेज को अपने इस प्रयत्न में सफलता भी प्राप्त हो रही है।

हिंदू-समाज की छत्रछाया में रहते हुए आपको जो-जो भी कष्ट हैं वे किसी से भी छिपे नहीं, परंतु सामूहिक रूप से हिंदू समाज आपके उन दु:खों को दूर कर देना चाहता है। आज आपका सौभाग्य है कि देश में कांग्रेस शासन है। कांग्रेस रूपी रथ के गांधी महाराज कृष्ण हैं। गांधी अपने को भंगी कहने में गौरव मानता है। शिवजी महाराज भी तो भंगी ही कहाते हैं, भंगी का स्थान बहुत ऊंचा है। आज भारत के शासन की बागडोर सबसे बड़े भंगी के हाथों में है। आप उस भंगीराट गांधी की ओर देखिए, आप अंग्रेज की ओर क्यों देखते हैं। अंग्रेज आपको कागजी नोटों के बिना कुछ नहीं दे सकता, जिन्ना के पास सिवाए नफरत, हिकारत और वर्ग-द्वेष के और कुछ नहीं। गांधी के पास दिल है। उस दिल में आपका निवास है। वह दिल आपका है। वह आपका सबसे महान् शुभचिंतक है। वही आपके दु:ख को दूर करेगा। आप उस पर विश्वास रखिए। संत की तपस्या कदापि व्यर्थ नहीं जा सकती।

खालसा सूरमाओं की सेवा में!

मातृ–भूमि की स्वाधीनता के लिए आपने जो कुर्बानियां की हैं, हिंदुस्तान की आजादी के इतिहास में उन्हें स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। आपकी बहादुरी का सिंह–नीति का ही यह परिणाम है कि अत्यल्प संख्या में होते हुए भी भारत की राजनीति में आपका विशेष स्थान है। आज अंग्रेज ने राजनीतिक रूप से आपको हिंदुओं से अलग कर दिया, परंतु मुझे पूर्ण विश्वास है जब तक गुरुग्रंथ साहिब में गंगा राम, कृष्ण की महिमा रहेगी, जब तक गुरु के भक्त रहेंगे तब तक संसार की कोई भी शक्ति हिंदुओं और सिखों को धार्मिक रूप से दो नहीं कर सकती। कुछ वर्ष पूर्व कुछ एक स्वार्थी लोगों ने इस बात का भरसक प्रयत्न किया था कि पंथ–लीग गठबंधन हो सके, निश्चय ही ज्ञानियों की यह सबसे बड़ी अज्ञानता थी। परमात्मा का भला हो वे खौफनाक दिन निकल गए। आज मा. तारासिंह तथा ज्ञानी कर्तार सिंह की बुद्धि ठीक हो गई। लीग का पंथ के साथ गठबंधन बिल्कुल अप्राकृतिक था। परमात्मा का भला हो आज पंथ देश के साथ है।

एक बात से मैं आपको सावधान किए देता हूं। जिन्ना की कूटनीति कौटिल्य की नीति से कुछ कम भयंकर नहीं। प्रत्येक वह संप्रदाय जिसका मूल आधार भारतीय है, जिन्ना उस संप्रदाय के राजनीतिक महत्त्व को नष्ट–भ्रष्ट करना चाहता है। इस समय उसके सामने तीन मुख्य पहलवान हैं। असली पहलवान जिसका उसे मुकाबला करना था वह थी हिंदू महासभा, परंतु स्वयं हिंदुओं ने ही हिंदू महासभा को समाप्त कर दिया। अब रह गए तीन पहलवान–कांग्रेस, हरजिन तथा सिख एक साथ तीनों मोर्चों पर लड़ना इस 72 वर्षीय बूढ़े पहलवान की हिम्मत नहीं। बारी–बारी वह तीनों को समाप्त करना चाहता है। कांग्रेस ने भी बिना शर्त जिन्ना के आगे हथियार डाल दिए। ब्रिटिश संगीनों के बल पर जिन्ना पंजाब और आसाम की जो भी दुर्गति चाहे करे। उसे रोकने वाला कोई नहीं, आज हमारा पंजाब खतरे में है। हमारा अमृतसर, करतारपुर, पंजा–साहिब, कटासराज, अमरनाथ, लीग के हवाले कर दिया गया। आओ, हम सब पंजाबी, सिख समाजी, सनातनी छोटे–मोटे मतभेदों को भुलाकर एक हो जाएं और इस जिन्नाही पाकिस्तान की धज्जियां उड़ा दें।

साधु-महात्माओं की सेवा में!

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब हमारे देश पर आपत्ति आई, संत महात्माओं ने ही देश और जाति की रक्षा की। गृहस्थी लोगों का कर्त्तव्य आपकी पालना करना है और आपका कर्त्तव्य आततायियों के अत्याचारों से घर गृहस्थियों की रक्षा करना है। आज भी एक सच्चा संत नवाखाली के ग्राम-ग्राम में इसी पवित्र उद्देश्य क लिए भटक रहा है। यदि देश में थोड़े से भी ऐसे महात्मा और हों, सचमुच प्रभु-भक्तों की सभी आपदाओं का तत्काल अंत हो जाए।

धर्म के नाम पर, गौ और ब्राह्मण के नाम पर, देवी और देवताओं के नाम पर, देश और जाति के नाम, उन हजारों मंदिरों और मठों के नाम पर जहां कभी चौबीसों घंटे ''भज गोविंदम्'' की मनहर ध्वनि गूंजती थी, आज जहां सन्नाटा छा रहा है; उन टूटे हुए मकानों के नाम पर जिनकी दीवारों के पीछे चौबीसों घंटें बसंत की बहार थी आज यहां सुनसान दिखाई दे रहा है; उन उजड़े हुए ग्रामों के नाम पर जिनका कण-कण कभी वंदेमातरम् के जय गान से गूंजा करता था आज जिसके दरोदीवार से अल्लाहू अकबर की सदाऐं आती हैं; उन हजारों सती-साध्वियों के नाम पर जिनका सर्वस्व उनकी आंखों के सामने बर्बाद किया गया, जिनके सिर का सिंदूर जूती के तलवों से पोंछा गया, आज भी जबरदस्ती बुर्का पहने जो तलवार की नोंक पर गुंडों के घरों में पड़ी तड़प रही हैं, उन लाखों शरणार्थियों के नाम पर जो आज कड़कती हुई भीषण सर्दी में शरणार्थी कैंपों में पड़े धर्म रक्षा के लिए अनेकों कष्ट भोग रहे हैं। उन हजारों धर्म वीरों के नाम पर जिन्होंने हंसते-हंसते अपने अंग-अंग कटवा दिए, परंतु धर्म न छोड़ा मैं आपसे अपील करता हूं, मैं आपको अपने कर्त्तव्य का पालन कराता हूं। समर्थ गुरु रामदास, बंदा वीर बैरागी,गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविंदसिंह का रूप धारण कीजिए और - ''**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्**'' का जयघोष लगाते हुए पूर्वी बंगाल, सिंध फ्रंटियर के ग्राम-ग्राम में फैल जाइए!

विद्यार्थियों को!

राजनीति का मतलब लम्बी-चौड़ी तकरीरें करना, व्यर्थ में ही किसी के विरुद्ध जहर उगलना; गले फाड़-फाड़ कर नारे लगाना, मार्चिंग करते हुए सड़कों पर चक्कर काटना ही नहीं, सच्ची राजनीति यही है कि हम अपने देश से प्रेम करें। देश कोई मिट्टी और पत्थर नहीं, देश में रहने वालों का शुभचिंतन ही सच्ची देश भक्ति है। अंग्रेज का हिंदुस्तान से निकल जाना ही स्वराज्य नहीं, यदि हमारे हृदयों में अपने भाइयों-बहनों के प्रति सहानुभूति नहीं तो अंग्रेज के चले जाने पर जो स्वराज्य मिलेगा उसका मतलब यही होगा कि पहले अंग्रेज हमें नोच-नोच कर खाता था, अब उसके स्थान पर हम अपने देश भाइयों को नोच-नोच खाएंगे। विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी देश सेवा यही है कि वह योग्यतम संतान के आदर्श पिता बनने की तैयारी करें। मेरे देश का पतन तभी तो हुआ, जिस दिन से हमने स्वयं आदर्शहीन बनकर चरित्रहीन संतान पैदा करनी शुरू की।

आधुनिक स्कूल-कॉलेजों के स्टूडैंट्स को विद्यार्थी कहना-विद्या के पवित्र शब्द को कलंकित करना है। हमारा आदर्श, विद्या प्राप्ति कभी नहीं। या तो यह नौकरी प्राप्त करने का एक साधन है अथवा किसी भोलेभाले शिकार को फंसा कर तिलक और दहेज में उसे बेचारे का सर्वस्व हर लेने के लिए एक अपटूडेट "वीलाईज्ड षड़यंत्र। क्या आपकी अपनी भावी धर्म-पत्नी, अपने पुत्र की माता के पिता के गले मे अंगूठा देकर दस हजार मांगते शरम नहीं आती ? खुदा का खौफ क्या आपके दिल में बिल्कुल ही उठ गया। याद रखो, कल को जब तुम स्वयं पिता बनोगे और तुम्हारे सात दामाद तुम से सात मोटरें, सात रेडियो, सात मकान और सत्तर हजार नकद मांगेंगे उस समय तुम्हें जरूर खुदा याद आएगा।

देवियों के प्रति!

निश्चय ही हमारे देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि पुरुष ने स्त्री को अपने लिए केवल भोग–विलास की सामग्री समझ लिया है। **हमारी प्राचीन संस्कृति में देवियों को पुरुषों की अपेक्षा उच्च स्थान दिया गया था, गौरीशंकर, सीताराम, राधेश्याम, उमा–ईश, गंगा–विष्णु इत्यादि परंतु आज स्वयं देवियों ने ही पुरुष के हाथ का खिलौना बनकर अपने महत्त्व को बहुत नीचे गिरा दिया।** पुरुष में वीर्य शक्ति ही पुरुष को पुरुष बनाती है। यही आपकी सच्ची दौलत है आप इसे वृथा न होने दें। पति–पत्नी का संबंध केवल संतान उत्पत्ति के लिए ही होता है, भोग–विलास में जीवन–शक्ति को गंदी नालियों में फैंक देन के लिए नहीं होता। आपको चाहिए, आप पुरुष के मन को अधिक चंचल न बनने दें। स्त्री का तो केवल ध्यान ही पुरुष को पतन की ओर ले जाने के लिए बहुत काफी है, तिस पर पॉऊडर, क्रीम, लिपिस्टिक, रंग–बिरंगी शनील और ज्योरजैट पहन कर आखिर आप चाहती क्या हैं? आपको गहने और कपड़े के प्रलोभन में फंसाए रखना यह पुरुष की एक चाल है, आप इसके प्रति विद्रोह कीजिए। मैं आपको सच कहता हूं हमारे पुरखे जो फैशन से दूर थे वे हम से ज्यादा सुखी थे। सुख सादगी और संयम में है, विलासता और व्यभिचार में नहीं। पति और पत्नी संतान होने पर भी, संतान की इच्छा न होने पर भी जो परस्पर सहवास करते हैं वह भी व्यभिचार ही है।

आज तुम्हारे देश पर महान् धर्म संकट पड़ा है, इस संकट का श्रीगणेश पूर्वी बंगाल में हो चुका है। पूर्वी बंगाल में आज कितनी ही सती–साध्वियां गुंडों के कब्जे में हैं। भगवान् वे दिन किसी को न दिखाए, परंतु समय तो किसी के भोलेपन पर तरस नहीं खाता। आपको चाहिए अपने में वीरता पैदा करें। वे दिन गए जब राम–सीता की रक्षा करने समुद्र पार गए थे, आज कल के राम गांधी जी महाराज की कुटिया तक, अखबार के दफ्तर तक अथवा अधिक से अधिक पुलिस थाने तक हो आएंगे। आपका आदर्श प्रेमलता अथवा मन मोहनी की बजाए लक्ष्मी बाई तथा हाडारानी ही हो सकता है। यही आदर्श आपकी मान–मर्यादा की रक्षा कर सकता है।

देश-बंधुओं की सेवा में!

आजकल आपको कुछ भी कहना व्यर्थ है। उपदेश मनुष्य को आचारवान्, बुद्धिमान् तथा विद्वान बनाने के लिए किया जाता है। परंतु जब आप अनपढ़, मूर्ख तथा आचारहीन होते हुए भी बड़े-बड़े धर्मात्माओं, महात्माओं तथा विद्वानों की अपेक्षा अधिक नौकरियां, अधिक राजनैतिक अधिकार प्राप्त कर रहे हैं, निश्चय ही आपको किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं। आपका मुसलमान होना ही प्रत्येक स्थान पर सबसे बड़ा गुण माना जाता है।

एक प्रार्थना मैं आपसे अवश्य करूंगा-मनुष्यत्व संसार में एक दुर्लभ पदार्थ है। वैर विरोध की भावना रखते हुए भी इस रत्न को हाथ से कदापि खोना नहीं चाहिए। कमजोरों, बड़े बुजुर्गों, स्त्रियों तथा बच्चों के साथ इज्जत और मान का बर्ताव करना प्रत्येक संप्रदाय के माहपुरुष ने माना है। हिंदुओं ने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। उनके प्रति बदले की भावना दिल से निकाल दीजिए। आप भी अपने को हिंदू ही समझिए। आपके शरीर में भी राम-कृष्ण, शिवा-प्रताप का खून है।

आजाद हिंद सेना की घोषणा

प्लासी में सन् 57 की हार के बाद 100 साल तक हिंदुस्तानी अपनी आजादी के लिए बराबर लड़ते रहे। इस युग का इतिहास आजादी की खूनी लड़ाई का इतिहास है। सिराजूद्दौला, टीपू सुल्तान, हैदरअली, अवध की बेगमात, शक्तिसिंह, झांसी की रानी, तांतिया टोपे, नाना साहिब, शायद यह नहीं समझते थे कि विजय के लिए एकता पहली शर्त है। इसलिए 1857 में हमारी हार हुई। उसके बाद कायर अंग्रेजों ने हिंदुस्तानियों से हथियार ले लिए। कुछ दिन तक तो हिंदू चुपचाप रहे मगर 1885 में कांग्रेस की स्थापना से आजादी के इतिहास में नवीन युग का प्रारंभ हुआ। पहले यूरोपीय युद्ध तक सविनय उपायों से काम लिया, पश्चात् 1920 में जब हम निराश हो रहे थे तब पूज्य महात्मागांधी ने आगे आकर असहयोग और सत्याग्रह के दो अस्त्र हमें दिए। अतः राजनैतिक चेतना के साथ-साथ हममें राजनैतिक युद्ध की चेतना भी जागी। कांग्रेस मंत्रिमंडलों के अंतिम युग के समय हमने यह भी दिखा दिया कि प्रबंध में हम अंग्रेज से अधिक कुशल हैं। इस द्वितीय महायुद्ध में हमें आजादी की अंतिम लड़ाई छेड़ने का अवसर मिला है। हमें भूखे मारकर हमें बरबाद करके ब्रिटिश सरकार ने हमसे सारी श्रद्धा छीन ली है। उस पाश्विक शासन के अंतिम अवशेषों को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए एक भयानक क्रांति ज्वाला की आवश्यकता है। आजाद हिंद सेना उस ज्वाला को जला रही है। यह आजाद हिंद सरकार हिंदोस्तान के प्रति वफादार रहेगी। अतः हर एक हिंदुस्तानी को इसके प्रति वफादार होना चाहिए। बड़ों के नाम पर, आजादी के नाम पर, आने वाली पीढ़ियों के नाम पर हम एलान करते हैं कि अपना सर्वस्व देकर भी हम तब तक लड़ते रहेंगे जब तक शत्रु को हिंदुस्तान से निकाल न दें।

अंतर्वेदना

''अब ऐसा मालूम होता है कि कांग्रेस नेता इन 6 महीनों में सिर्फ झूठी दिखावटी बातें कर रहे थे और उनमें अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए ताकत नहीं थी। अगर मंत्री मिशन की व्याख्या इस प्रकार स्वीकार की जानी थी तो बंगाल और बिहार के सारे रक्तपात की जिम्मेवारी कांग्रेसी नेताओं पर आती है, न कि मुस्लिम लीग की हठधर्मी पर या ब्रिटिश सरकार की द्विमुखता पर जिसने कि असल में उन सब दु:खद कारणों को जन्म दिया।''

इस प्रस्ताव को पास करके कांग्रेस महासमिति ने गुंडागर्दी का संवर्धन किया है और उन उच्छृंखल शक्तियों को प्रोत्साहन दिया है जिन्हें कभी भी भरा नहीं जा सकता। पिछले 6 महीनों में सिवाय लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाही के और ऐसी कोई चीज नहीं हुई, जिसके कारण कांग्रेसी नेता अपना मन बदलते। वर्तमान आत्मसमर्पण अगले अध:पतन की सीढ़ी मात्र है और इससे देश में शांति और स्वतंत्रता के आंदोलन का ही पूर्ण सत्यानाश हो जाने की संभावना है।

मुझे इससे आश्चर्य नहीं हुआ कि नेताजी के भाई ने कांग्रेस कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया और श्री जय प्रकाश नारायण ने देने की धमकी दी है। समय आ गया है जब देश की सब वामपक्षी शक्तियों को एकत्र संगठित होकर राष्ट्रीय आंदोलन की आने वाले खतरों से रक्षा करनी चाहिए।

–शार्दूल सिहं कवीश्वर

जिस बात का भय था वही बात आखिर होकर ही रही। सीमा प्रांत, आसाम तथा पंजाबी हिंदुओं के साथ खुला विश्वासघात करके कांग्रेस ने लीग के सामने बिना शर्त हथियार डाल ही दिए। शिखंडी के कंधे पर बंदूक रखकर गोलियां चलाने वाले अर्जुन ने आखिर भीष्म पितामह को जख्मी कर ही दिया। एक बार गुटों में शामिल होकर पीछे अन्याय होता देख गुटों से बाहर आ सकना मुश्किल भी है, असंभव और निरर्थक भी। आज देश की आत्मा

खून के आंसू बहा रही है, **परंतु कांग्रेसी सूरमा जानते हैं हिंदू बात को बहुत जल्दी भूल जाता है। उसके साथ लाख अन्याय कर लो वह तो कांग्रेस को छोड़ने से रहा।**

राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परित्याग कर कांग्रेसी महापुरुषों ने प्रत्येक समस्या पर केवल अंत:राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करना शुरू किया है। उधर जिन्ना को 1957 में होने वाली मर्दुमशुमारी की चिंता है। हजारा, पूर्वी बंगाल इत्यादि में जो भी लूट मार हो रही है इसका एक मात्र उद्देश्य हिंदुओं में भय पैदा कर उन्हें मुसलमान बनने की प्रेरणा करना ही तो है। आज भारत के प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक नर में तबलीग जोरों पर है। जिन लाठियों से कांग्रेस ने आने वाले इलैक्शनों की लड़ाई लड़नी है उन लाठियों को लूटा जा रहा है, तोड़ा जा रहा है। अब रह जाएगी कांग्रेस ठन-ठन गोपाल।

पुस्तक पढ़ते समय पाठकों को कुछ एक स्थलों पर मेरी इसी अंतर्वेदना का सामना करना होगा। परंतु यदि यह मेरी अंतर्वेदना मेरे ही समान कुछ एक और भूले भटके नवयुवकों की आंखें खोल सके तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा।

जिन लोंगों को केवल जोशीली पुस्तकें पढ़ने का शौक है, शायद उन्हें मेरी इस पुस्तक से निराशा होगी। परंतु देश की वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए मेरा अंत:करण इन्हीं विचारों के पक्ष में है। जनता की भावनाओं के साथ खेलना मैंने नहीं सीखा। पुस्तकों की कमाई से अपने महल खड़े करने की इच्छा मैंने कभी नहीं की। मैंने तो केवल ''**स्वान्तः सुखाय**'' ही इस पुस्तक को लिखा है। **यह पुस्तक मेरी अंतरात्मा है। इस कठिनतर, कष्टतर मंहगाई के जमाने में मैंने इस पुस्तक को स्याही से नहीं लिखा बल्कि अपने आंसुओं से लिखा है।**